अस्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका.

॥ ॐ नमः सिद्धं॥ अथ श्रीजीवविचारप्रकरणप्रारंभः ॥ आर्यावृत्तं ॥ भुवणपईवं वीरं, नमिऊण भणामि अबुहबोहत्थं ॥ जीवसरूवं किंचि वि, जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ १ ॥ जीवा मुत्ता संसा, रिणो य तस थावरा य संसारी॥ पुढवि जल जलण वाऊ, वणस्सई थावरा नेया ॥ २ ॥ फलिह मणि रयण विद्दुम, हिंगुल हरियाल मणसिल रसिंदा ॥ कणगाइ धाउ सेढी, वन्निय अरणेट्टय पलेवा ॥ ३ ॥ अब्भय तूरी ऊसं, मट्टी पाहाण जाइओ णेगा ॥ सोवीरंजण लूणा, इ पुढविभेया य इच्चाइ ॥ ४ ॥ भोमंतरिक्खमुदगं, उसाहिमकरग हरितणू महिया ॥ हुंति घणोदहिमाई, भेआ णेगा य आउस्स ॥ ५ ॥ इंगाल जाल मुम्मुर, उक्कासणि कणग विज्जुमाईया ॥ अगणिजियाणं भेया, नायवा निउणबुद्धीए ॥ ६ ॥ उब्भामग उक्कलिया, मंडलि मह सुद्ध गुंजवाया य ॥

घण तणु वायाईया, भेया खलु वाउकायस्स ॥ ७ ॥ साहारण पत्तेया, वण
स्सइजीवा दुहा सुए भणिया ॥ जेसिमणंताणं तणु, एगा साहारणा तेउ ॥ ८ ॥
कंदा अंकुर किसलय, पणगा सेवाल भूमि फोडा य ॥ अल्लयतिय गज्जर मो,
त्थ वत्थुला थेग पल्लंका ॥ ९ ॥ कोमलफलं च सव्वं, गूढसिराइं सिणाइपत्ता
इं ॥ थोहरि कुआरि गुग्गुलि, गलोइपमुहा य छिन्नरुहा ॥ १० ॥ इच्चाइणो
अणेगे, हवंति भेया अणंतकायाणं ॥ तेसि परिजाणणत्थं, लक्खणमेयं सुए
भणियं ॥ ११ ॥ गूढसिरसंधिपव्वं, समभंगमहीरुगं च छिन्नरुहं ॥ साहारणं
सरीरं, तव्विवरीयं च पत्तेयं ॥ १२ ॥ एगसरीरे एगो, जीवो जेसिं तु तेय पत्ते
या ॥ फल फूल छल्लि कट्ठा, मूला पत्ताणि बीयाणि ॥ १३ ॥ पत्तेयं तरुमुत्तुं,
पंचवि पुढवाइणो सयललोए ॥ सुहुमा हवंति नियमा, अंतमुहुत्ताउ अद्दि
स्सा ॥ १४ ॥ संख कवड्डय गंडुल, जलो य चंदणग अलस लहगाई ॥ मेह

रि किमि पूयरगा, बेइंदियमाइ वाहाई ॥ १५ ॥ गोमी मंकण जूआ, पिपी
लि उद्देहिया य मक्कोडा ॥ इल्लिय घयमिल्लीउं, सावय गोकीड जाईउं ॥ १६ ॥
गद्दय चोर कीडा, गोमयकीडा य धन्नकीडा य ॥ कुंथु गुवालिय इलिया,
तेइंदिय इंदगोवाई ॥ १७ ॥ चउरिंदिया य विछू, ढिंकुण भमरा य भमरिया
तिड्डा ॥ मच्छिय डंसा मसगा, कंसारी कविलडोलाई ॥ १८ ॥ पंचिंदिया य च
उहा, नारय तिरिया मणुस्स देवा य ॥ नेरइया सत्तविहा, नायव्वा पुढवि भे
एणं ॥ १९ ॥ जलयर थलयर खयरा, तिविहा पंचिंदिया य तिरिखा य ॥ सु
सुमार मछ कछव, गाहा मगरा य जलचारी ॥ २० ॥ चउपय उरपरिसप्पा,
भुयपरिसप्पा य थलयरा तिविहा ॥ गो सप्प नउल पमुहा, बोधव्वा ते समा
सेणं ॥ २१ ॥ खयरा रोमयपरकी, चम्मयपरकी य पायडा चेव ॥ नरलोगाउ
बाहिं, समुग्गपरकी वियय परकी ॥ २२ ॥ सव्वे जल थल खयरा, समुछि

मा गब्भया दुहा हुंति ॥ कम्मा कम्मग भूमी, अंतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥
दसहा भवणाहिवई, अट्ठविहा वाणमंतरा हुंति ॥ जोइसिया पंचविहा,
दुविहा वेमाणिया देवा ॥ २४ ॥ सिद्धा पनरस भेया, तित्थातित्थाइ सिद्धभेए
णं ॥ एए संखेवेणं, जीवविगप्पा समक्खाया ॥ २५ ॥ एएसिं जीवाणं, सरीर
माउं ठिई सकायम्मि ॥ पाणा जोणि पमाणं, जेसिं जं अत्थि तं भणिमो
॥ २६ ॥ अंगुलअसंखभागो, सरीरमेगिंदियाण सव्वेसिं ॥ जोयण सहस्स
महियं, नवरं पत्तेयरुक्खाणं ॥ २७ ॥ बारस जोयण तिन्नी, गाऊआ जोयणं
च अणुकमसो ॥ बेइंदिय तेइंदिय, चउरिंदिय देह मुच्चत्तं ॥ २८ ॥ धणुसयपं
च पमाणा, नेरइया सत्तमाइ पुढवीए ॥ तत्तो अद्धद्धूणा, नेया रयणप्पहा
जाव ॥ २९ ॥ जोयण सहस्स माणा, मच्छा उरगा य गब्भया हुंति ॥ धणुह
पुहुत्तं पंखी, भुअचारी गाउअ पुहुत्तं ॥ ३० ॥ खयरा धणुहपुहुत्तं, भुअगा

उरगा य जोयणपुहुत्तं ॥ गाउअ पुहुत्त मित्ता, समुच्छिमा चउपया भणिया ॥ ३१ ॥ छच्चेव गाउआइ, चउप्पया गब्भया मुणेयव्वा ॥ कोसतिगं च मणुस्सा, उक्कोस सरीरमाणेणं ॥ ३२ ॥ इसाणंत सुराणं, रयणीउ सत्त देह मुच्चत्तं ॥ दुग दुग दुग चउगेवि, जा णुत्तरेक्किक्कपरिहाणी ॥ ३३ ॥ बावीसा पुढवीए, सत्त य आउस्स तिन्नि वाउस्स ॥ वाससहस्सादस तरु, गणाण तेऊ तिरित्ता उ ॥ ३४ ॥ वासाण बारसाऊ, बिइंदियाणं तिइंदियाणं तु ॥ अऊणपन्नदिणाणं, चउरिंदीणं तु छम्मासा ॥ ३५ ॥ सुरनेरइयाण ठिई, उक्कोसा सागराणि तित्तीसं ॥ चउपय तिरिय मणुस्सा, तिन्निय पलिउवमा हुंति ॥ ३६ ॥ जलयर उरभुअगाणं, परमाऊ होइ पुव्वकोडीउ ॥ पक्खीणं पुण भणिउ, असंखभागो य पलियस्स ॥ ३७ ॥ सव्वे सुहुमा साहा, रणा य सम्मुच्छिमा मणुस्सा य ॥ उक्कोस जहन्नेणं, अंतमुहुत्तं चियजियंति ॥ ३८ ॥ उगाहणाउ

माणं, एवं संखेवर्ज समरकायं ॥ जे पुण अन्न विसेसा, विसेससुत्ताउ ते ने या ॥ ३९ ॥ एगिंदिया य सव्वे, असंख उस्सप्पिणीसकायम्मि ॥ उववज्जंति चयंति य, अणंतकाया अणंताउं ॥ ४० ॥ संखिज्ज समा विगला, सत्तठ नवा पणिंदि तिरि मणुआ ॥ उववज्जंति सकाए, नारयदेवा य नो चेव ॥४१॥ दसहा जिआण पाणा, इंदिय ऊसास आउ बल रूवा ॥ एगिंदिएसु चउरो, विगलेसु छ सत्त अठेव ॥ ४२ ॥ असन्निसन्नीपंचिं, दिएसु नवदस कमेण बोधव्वा ॥ तेहि सह विप्पउंगो, जीवाणं नन्नए मरणं ॥ ४३ ॥ एवं अणोरपारे, संसारे सायरम्मि नीमम्मि ॥ पत्तो अणंतखुत्तो, जीवेहिं अपत्तधम्मेहिं ॥ ४४ ॥ तह चउरासी लक्का, संखा जोणीण होइ जीवाणं ॥ पुढवाईण च उण्हं, पत्तेयं सत्त सत्तेव ॥ ४५ ॥ दस पत्तेय तरूणं, चउदस लक्का हवंति इयरेसु ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो पंचिंदि तिरियाणं ॥ ४६ ॥ चउरो चउ

रो नारय, सुराण मणुआण चउदस हवंति ॥ संपिंडिआउ सबे, चुलसी ल रकाउ जोणीणं ॥ ४७ ॥ सिद्धाण नत्थि देहो, न आउ कम्मं न पाण जोणीउ ॥ साइ अणंता तेसिं, ठिई जिणंदागमे भणिया ॥ ४८ ॥ काले अणाइनिह णे, जोणि गहणम्मि भीसणे इब ॥ भमिया भमिहंति चिरं, जीवा जिणव यण मलहंता ॥ ४९ ॥ ता संपइ संपत्ते, मणुअत्ते दुल्लहे वि संमत्ते ॥ सिरिसं तिसूरि सिठे, करेह भो उज्जमं धम्मे ॥ ५० ॥ एसो जीववियारो, संखेवरु ईण जाणणाहेऊ ॥ संखित्तो उद्धरिउ, रुद्दाउ सुयसमुद्दाउ ॥५१॥ इति जीव० सं० ॥ अथ श्रीनवतत्त्वप्रकरणप्रारंभः ॥ जीवाऽजीवा पुण्णं, पावाऽसव संवरो य निज्जरणा ॥ बंधो मुक्खो य तहा, नव तत्ता हुंति नायबा ॥ १ ॥ चउदस चउदस बाया, लीसा बासीय हुंति बायाला ॥ सत्तावन्नं बारस, चउ नव भेया कमेणेसिं ॥ २ ॥ एगविह दुविह तिविहा, चउब्विहा पंच छव्विहा

जीवा ॥ चेयण तस इयरेहिं, वेय गई करण काएहिं ॥ ३ ॥ एगिंदिय सुहुमि
यरा, सन्नियर पणिंदिया य स बि ति चउ ॥ अपजत्ता पजत्ता, कमेण चउ
दस जियठाणा ॥ ४ ॥ नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ॥ वीरियं उ
वउगो य, एयं जीवस्स लक्खणं ॥ ५ ॥ आहार सरीरेंदिय, पजत्ती आण
पाण जास मणे ॥ चउ पंच पंच छप्पिय, इग विगला सन्नि सन्नीणं ॥ ६ ॥ प
णिंदिय त्तिबलूसा, साऊदसपाण चउ छ सग अठ ॥ इग उ ति चउरिंदीणं,
असन्नि सन्नीण नव दस य ॥ ७ ॥ इति जीवतत्वम् ॥ धम्मा ऽधम्मा ऽगासा,
तिय तिय जेया तहेव अद्धा य ॥ खंधा देसपएसा, परमाणु अजीव चउदस
हा ॥ ८ ॥ धम्माऽधम्मा पुग्गल, नह कालो पंच हुंति अजीवा ॥ चलणस
हावो धम्मो, थिरसंठाणो अहम्मो य ॥ ए ॥ अवगाहो आगासं, पुग्गल
जीवाण पुग्गला चउहा ॥ खंधा देसपएसा, परमाणू चेव नायव्वा ॥ १० ॥ सद्दं

धयार उज्जोय, पभा छाया तवेहिआ ॥ वन्न गंध रसा फासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥ ११ ॥ एगाकोडिसतसठि, लक्का सत्तहुत्तरी सहस्सा य ॥ दोयस या सोलहिया, आवलिया इग मुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥ समयाऽवली मुहुत्ता, दीहा पक्का य मास वरिसा य ॥ नणिर्उ पलिआ सागर, उसप्पिणी सप्पिणी कालो ॥ १३ ॥ परिणामि जीव मुत्ता, सपएसा एग खित्त किरिआए ॥ निच्चं कारण कत्ता, सव्वगद् मिदि रहिअपवेसे ॥ १४ ॥ इत्यजीवतत्वम् ॥ सा उच्च गो य मणु डुग, सुर डुग पंचिंदिजाइ पणदेहा ॥ आइ ति तणू णु वंगा, आइम संघयण संठाणा ॥ १५ ॥ वन्नचउक्का गुरु लहु, परघा ऊसास आय वु जोयं ॥ सुभखगइ नमिण तस दस, सुर नर तिरियाउ तिब्धयरं ॥ १६ ॥ तस बायर पजत्तं, पत्तेयथिरं सुभं च सुभगं च ॥ सुस्सर आइज्ज जसं, तसाइ दसगं इमं होइ ॥ १७ ॥ इति पुण्यतत्वम् ॥ नाणंतराय दसगं, नवबीये

नीय साय मिच्छत्तं ॥ थावर दस निरयतिगं, कसाय पणवीसतिरियदुगं ॥ १८ ॥
इग बि ति चउ जाईउ, कुखगइ उवघाय हुंति पावस्स ॥ अपसत्थं वन्न चउ,
अपढम संघयण संठाणा ॥ १९ ॥ थावर सुहुम अपज्ज, साहारण मथिर
मसुभ दुभगाणि ॥ दुस्सर णाइज्ज जसं, थावरदसगं तु विसेयं ॥ २० ॥
इति पापतत्वम् ॥ इंदिअ कसाय अव्वय, जोगा पंच चउ पंच तिन्नि कमा ॥
किरिआउ पणवीसं, इमाउ ताउ अणुक्कमसो ॥२१॥ काइय अहिगरणीआ,
पाउसिआ पारितावणी किरिया ॥ पाणाइवाइ रंभिअ, परिग्गहिया मायवत्ती
अ ॥ २२ ॥ मिच्छा दंसण वत्ती, अपच्चखाणाय दिठि पुठीअ ॥ पाडुच्चिअ
सामंतो, वणीअ नेसत्थि साहत्थी ॥ २३ ॥ आणवणि विआरणीआ, अण
भोगा अणवकंखपच्चइआ ॥ अन्नापउग समुदा, ण पिज्ज दोसे रिआवहि
आ ॥ २४ ॥ इत्याश्रवतत्वम् ॥ समई गुत्ति परीसह, जइधम्मो भावणा च

रित्ताणि ॥ पण ति छवीस दस बार, स पंचभेएहिं सगवन्ना ॥ २५ ॥ इरिया
भासे सणा दाणे, उच्चारे सुमई सुअ ॥ मणगुत्ति वयगुत्ति, कायगुत्ति तहेव य
॥२६॥ खुहा पिवासा सी उण्हं, दंसा चेला रइ त्थिओ ॥ चरिआ निसिआ सि
ज्जा, अक्कोस वह जायणा ॥ २७ ॥ अलाभ रोग तण फासा, मल सक्कार प
रीसहा ॥ पन्नाअन्नाण सम्मत्तं, इअ बावीसं परीसहा ॥ २८ ॥ खंती मद्दव अ
ज्जव, मुत्ती तव संजमे अ बोधव्वे ॥ सच्चं सोअं आकिंचणं च बंभं च जइध
म्मो ॥२९॥ पढम मणिच्च मसरणं, संसारो एगया य अन्नत्तं ॥ असुइत्तं आ
सव सं, वरो अ तह निज्जरा नवमी ॥३०॥ लोगसहावो बोही, दुल्लहा धम्म
स्स साहगा अरिहा ॥ एआओ भावणाओ, भावे अव्वा पयत्तेणं ॥३१॥ सामाइ
अत्थ पढमं, छेओवट्ठावणं भवेबीअं ॥ परिहारविसुद्धीयं, सुहुमं तह संपरायं च
॥३२॥ तत्तोअ अहक्खायं, खायं सव्वम्मि जीवलोगम्मि ॥ जं चरिऊण सुवि

ह्रिआ, वचंति अयरामरं ठाणं॥३३॥इति संवरतत्वं॥अणसण मूणोयरिआ, व त्तीसं खेवणं रसच्चाउ ॥ काय किलेसो संली, णआयवद्योतवो होइ ॥३४॥ पायच्छि त्तं विणउ,वेयावच्चं तहेव सद्याउ ॥ झाणं उस्सग्गो विअ, अंभितरउ तवो होइ ॥३५॥बारसविहं तवो नि, ज्जराय बंधो चउविगप्पो अ ॥ पयई ठिइअणु भाग, पएस भेएहि नायव्वो ॥ ३६ ॥ इति निर्जरातत्वम् ॥ पयइ सहावोवुत्ता, ठिइ कालावहारणं ॥ अणुभागो रसो नेउ, पएसो दलसंचउ ॥ ३७ ॥ पड पडिहार सि मज्ज, हडचित्तकुलाल भंमगारीणं ॥ जह ए एसिंभावा, कम्मा णवि जाण तह भावा ॥ ३८ ॥ इह नाण दंसणावर, ण वेय मोहाउ नाम गो आणी ॥ विग्धं च पण नव दु अ, हवीस चउ ति सय दु पणविहं ॥ ३९ ॥ नाणे य दंसणे य, वेअणिए चेव अंतराईए ॥ तीसं कोडाकोडी, अयराणं ठि इ य उक्कोसा ॥ ४० ॥ सत्तरि कोडाकोडी, मोहणिए वीस नाम गोएसु ॥ ति

त्तीसं अयराइं, आउठिइ बंध उक्कोसा ॥ ४१ ॥ बारस मुहुत जहन्ना, वेय णिए अठ नाम गोएसु ॥ सेसाणंतमुहुत्तं, लहुठिई सनायवा ॥ ४२ ॥ इति बंधतत्त्वं ॥ संतपय परूवणाया, दव्वपमाणं च खित्तफुसणाय ॥ कालो अ अंतरं भा, ग भावअप्पा बहु चेव ॥ ४३ ॥ संतं सुध्द पयत्ता, विज्जंत्तं खकुसुमं व न असंतं ॥ मुक्कत्ति पयं तस्सउ, परूवणा मग्गणाईहिं ॥ ४४ ॥ गइ इंदीए काये, जोए वेए कसाय नाणे य ॥ संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्निआहारे ॥ ४५ ॥ नरगइ पणिंदि तसभव, सन्नि अहक्काय खइअ सम्मत्ते ॥ मुक्खोणाहार केवल, दंसण नाणे न सेसेसु ॥ ४६ ॥ दव्वपमाणे सिध्दा, णं जीव दव्वाणि हुंति णंताणि ॥ लोगस्स असंखिज्जे, भागे इक्को य सव्वे वि ॥ ४७ ॥ फुसणा अहिआ कालो, इगसिध्द पडुच्च साइउणंतो ॥ पडिवाया भावाउ, सिध्दाणं अंतरं नत्थि ॥ ४८ ॥ सव्व जियाण मणंते, भागे तेतेसि दंसणं नाणं ॥

खइए भावे परिणा, मि एअ पुण होइ जीवत्तं ॥ ४९ ॥ थोवा नपुंस सि
द्धा, थी नर सिद्धा कमेण संखगुणा ॥ इअ मुक्ख तत्तमेअं, नव तत्ता लेस
ओ भणिआ ॥ ५० ॥ जीवाइ नव पयत्थे, जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं ॥
भावेण सद्दहंतो, अयाणमाणेवि सम्मत्तं ॥ ५१ ॥ सव्वाइं जिणेसर भा, सिआ
इं वयणाई नन्नहा हुंति ॥ इह बुद्धी जस्स मणे, सम्मत्तं निच्चलं तस्स
॥ ५२ ॥ अंतो मुहुत्त मित्तं, पि फासिअं जेहिं हुज्ज सम्मत्तं ॥ तेसिं अव
ड्ढपुग्गल, परिअट्टो चेव संसारो ॥ ५३ ॥ उस्सप्पिणी अणंता, पुग्गल परिअ
ट्टओ मुणेअव्वो ॥ तेणंताती अद्धा, अणागयद्धा अणंत गुणा ॥ ५४ ॥ जिण
अजिण तित्थ तित्था, गिहि अन्न सलिंग थी नर नपुंसा ॥ पत्तेअ सयंबुद्धा,
बुद्धबोहि कणिक्काय ॥ ५५ ॥ जिणसिद्धा अरिहंता, अजिण सिद्धा य पुंडरि
या पमुहा ॥ गणहारि तित्थसिद्धा, अतित्थसिद्धा य मरुदेवी ॥ ५६ ॥ गिहिलिं

ग सिद्ध भरहो, वक्कलचीरीय अन्न लिंगम्मि ॥ साहू सलिंग सिद्धा, थी सिद्धा चंदणा पमुहा ॥५७॥ पुं सिद्धा गोयमाई, गांगेयाई नपुंसया सिद्धा ॥ पत्तेय सयंबुद्धा, भणिया करकंडु कविलाई ॥५८॥ तह बुद्धबोहिगुरुबो, हिया इग समय एग सिद्धा य ॥ इग समएवि अणेगा, सिद्धा ते णेगसिद्धाय ॥ ५९ ॥ जइआइ होइ पुछा, जिणाण मग्गंमि उत्तरं तइया ॥ इक्कस निग्गोयस्स, अणंत भागो य सिद्धिगउं ॥६०॥ इति मोक्षतत्त्वं ॥ इतिश्रीनवतत्त्वं समाप्तं ॥

अथ श्रीदंडकप्रकरणं लिख्यते ॥ नमिउं चउवीसजिणे, तस्सुत्तवियारलेसदेसणउं ॥ दंडगपएहिं तेच्चिय, थोसामि सुणेह भो भवा ॥ १ ॥ नेरइया असुराई, पुढवाइ बेंदियादउ चेव ॥ गब्भय तिरिय मणुस्सा, वंतर जोइसिय वेमाणी ॥ २ ॥ संखित्तयरीउ इमा, सरीरमोगाहणा य संघयणा ॥ सन्ना संठाण कसा, य लेस इंदीय दु समुघाया ॥ ३ ॥ दिठी दंसण नाणे, जोगुवउगो

ववाय चवण ठिई ॥ पज्जत्ति किमाहारे, सन्नि गई आगई वेए ॥ ४ ॥ चउ ग
ब्भ तिरिय वाउसु, मणुआणं पंचसेस ति सरीरा ॥ थावर चउगे दुहओ, अंगु
लअसंखभाग तणु ॥५॥ सव्वेसिं पि जहन्ना, साहाविय अंगुलस्स संखं सो ॥
उक्कोस पणसय धणु, नेरइया सत्त हत्थ सुरा ॥ ६ ॥ गब्भतिरि सहस जोयण,
वणस्सई अहिय जोयण सहस्सं ॥ नर तेइंदि तिगाऊ, बेइंदिय जोयणे बार
॥ ७ ॥ जोयणमेगं चउरिं, दि देह मुच्चत्तणं सुए भणियं ॥ वेउव्विय देहं पुण,
अंगुलसंखं समारंभे ॥ ८ ॥ देव नर अहिय लक्खं, तिरियाणं नव सय जोयण
सयाइं ॥ दुगुणं तु नारयाणं, भणियं विउव्विय सरीरं ॥ ९ ॥ अंत मुहुत्तं
निरए, मुहुत्त चत्तारि तिरिय मणुएसु ॥ देवेसु अद्धमासो, उक्कोस विउव्वणा
कालो ॥१०॥ थावर सुर नेरइया, अस्संघयणा य विगल छेवठ्ठा ॥ संघयण
छगं गब्भय, नर तिरिएसु मुणेयव्वं ॥ ११ ॥ सव्वेसिं चउ दह वा, सन्ना स

वे सुरा य चउरसा ॥ नर तिरिय छसठाणा, हुंडा विगलिंदि नेरइया ॥ १२ ॥
नाणाविह धय सूई, बुब्बुय वण वाउ तेउ अपकाया ॥ पुढवी मसूर चंदा,
कारा संठाणाउं भणिया ॥ १३ ॥ सव्वे वि चउकसाया, लेस छगं गब्भ तिरिय
मणुएसु ॥ नारय तेऊ वाऊ, विगला वेमाणिय तिलेसा ॥ १४ ॥ जोइसिय
तेउ लेसा, सेसा सव्वे वि हुंति चउलेसा ॥ इंदियदारं सुगमं, मणुआणं
सत्त समुग्घाया ॥ १५ ॥ वेयण कसाय मरणे, वेउव्विय तेय एय आहारे ॥
केवलिय समुग्घाया, सत्त इमे हुंति सन्नीणं ॥ १६ ॥ एगिंदियाण केवलि,
तयाहारग विणाउ चत्तारि ॥ ते वेउव्विय वज्जा, विगला सन्नीण ते चेव ॥ १७ ॥
पण गब्भ तिरि सुरेसु, नारय वाऊसु चउर तिय सेसे ॥ विगल दुदिट्ठी थावर,
मिच्छत्ती सेस तिय दिट्ठी ॥ १८ ॥ थावर बितिसु अचक्खु, चउरिंदिसु त
दुगं सुए भणियं ॥ मणुआ चउ दंसणिणो, सेसेसु तिगं तिगं भणियं

॥१ए॥ अन्नाण नाण तिय तिय, सुर तिरि निरए थिरे अनाण डुग ॥ नाणन्ना ण डु विगले, मणुए पण नाण तिअनाणा ॥ २० ॥ इक्कारस सुर निरए, तिरिएसु तेर पनर मणुएसु ॥ विगले चउ पण वाए, जोगतियं थावरे होई ॥ २१ ॥ उवउंगा मणुएसु, बारस नव निरय तिरिय देवेसु ॥ विगलडुगे पण छक्कं, चउरिंदिसु थावरे तियगं ॥२२॥ संख मसंखा समए, गप्नय तिरि विगल नारय सुरा य ॥ मणुआ नियमा संखा, वण णंता थावर असंखा ॥ २३ ॥ असन्नि नर असंखा, जह उववाए तहेव चवणेवि ॥ बावीस सग ति दस वा, स सहस उक्किठ पुढवाई ॥२४॥ तिदिण ग्गि ति पल्लाऊ, नर तिरि सुर निरय सागर तितीसा ॥ वंतर पल्लं जोइस, वरिस लस्काहिअं पलिअं ॥२५॥ असुराण अहिय अयरं, देसूण डु पल्लयं नवनिकाए ॥ बारस वासुणु पण दिण, छम्मासु क्किठ विगलाऊ ॥२६॥ पुढवाइ दस पयाणं, अंत मुहुत्तं जहन्न आउठिई ॥

दस सहस वरिस ठिइआ, भवणाहिव निरयवंतरिया ॥ २७ ॥ वेमाणिय जो इसिआ, पल्लत यठं सआउआ हुंति ॥ सुर नर तिरि निरएसु, छ पज्जत्ति थावरे चउगं ॥ २८ ॥ विगले पंच पजत्ति, छद्दिसि आहार होइ सब्बेसिं ॥ पण गाइ पए भयणा, अह सन्नि तियं भणिस्सामि ॥ २९॥ चउविह सुर तिरिएसु, निरएसु अ दीहकालिगी सन्ना ॥ विगले हेउवएसा, सन्नारहिया थिरा सव्व ॥ ३० ॥ मणुआण दीह कालिअ, दिठीवाउवएसिआ केवि ॥ पज पण तिरि मणुअ च्चिय, चउविह देवेसु गच्छंति ॥ ३१ ॥ संखाउ पज्ज पणिंदि, तिरिय नरेसू तहेव पजत्ते ॥ भू दग पत्तेयवणे, एएसु च्चिय सुरागमणं ॥ ३२ ॥ पज्ज त्त संख गब्भय, तिरिय नरा निरय सत्तगे जंति ॥ निरउवट्टा एएसु, उववज्जंति न सेसेसु ॥ ३३ ॥ पुढवी आउ वणस्सइ, मज्झे नारय विवज्जिआ जीवा॥ सव्वे उववज्जंति, निय निय कम्माणुमाणेणं ॥ ३४ ॥ पुढवाइ दस पएसु, पु

ढवी आऊ वणस्सई जंति ॥ पुढवाइ दस पएहिय, तेऊ वाऊसु उववाउ ॥३५॥
तेऊ वाऊ गमणं, पुढवी पमुहम्मि होइ पय नवगे ॥ पुढवाइ ठाणदसगा, विग
लाइं तिय तहिं जंति ॥ ३६ ॥ गमणा गमणं गप्नय, तिरिआणं सयल जीव
ठाणेसु ॥ सवड जंति मणुआ, तेऊ वाऊहिं नो इंति ॥ ३७ ॥ वेय तिय ति
रि नरेसु, इडी पुरिसो अ चउविह सुरेसु ॥ थिर विगल नारएसु, नपुंस वेउ ह
वइ एगो ॥ ३८ ॥ पज्ज मणु बायरग्गी, वेमाणिय जवण निरय विंतरिआ ॥
जोइस चउ पण तिरिया, बेइंदि तिइंदि जूआऊ ॥ ३९ ॥ वाऊ वणस्सई चि
य, अहिआ अहिआ कमेण मेहुंति ॥ सबेवि इमे जावा, जिणा मए णंतसो
पत्ता ॥ ४० ॥ संपइ तुह्म जत्तस्स, दंमग पय जमण जग्ग हिययस्स ॥ दंड
तियविरयसुलहं, लहु मम दिंतु मुस्कपयं ॥ ४१ ॥ सिरि जिणहंस मुणीस
र, रज्जे सिरि धवलचंदसीसेणं ॥ गजसारेणं लिहिया, एसा विन्नत्ति

अप्पहिआ ॥ ४२ ॥ इतिश्री दंडकप्रकरणं संपूर्णम् ॥ छ ॥ छ ॥
॥ अथ श्रीलघुसंघयणी प्रारभ्यते ॥ नमिय जिणं सवन्नुं, जगपुज्जं जगगुरुं महावीरं ॥ जंबुद्दीव पयत्थे, वुत्थं सुत्ता सपरहेऊ ॥ १ ॥ संम्मा जोयण वासा, पव्वय कूडा य तिथ सेढीउ ॥ विजय द्दह सलिलाउ, पिंम्मेसिं होइ संघयणी ॥ २ ॥ णउय सयं खंम्माणं, भरहपमाणेण भाइए लक्खे ॥ अहवा णउअसय गुणं, भरह पमाणं हवइ लक्खं ॥ ३ ॥ अहविग खंडे भरहे, दो हिमवंते अ हेमवइ चउरो ॥ अठ महाहिमवंते, सोलस खंडाइ हरिवासे ॥ ४ ॥ बत्तीसं पुण निसढे, मिलिया तेसठि बीयपासे वि ॥ चउसठिउ विदेहे, तिरासि पिंम्मेइ णउअसयं ॥ ५ ॥ जोयण परिमाणाइं, सम चउरंसाइं इत्थ खंम्माइं ॥ लक्खस्स य परिहीए, तप्पाय गुणेय हुंतेव ॥ ६ ॥ विक्खंभ वग्ग दहगुण, करणी वट्टस्स परिरउ होइ ॥ विक्खंभ पाय गुणिउ, परिरउ तस्स गणियपयं ॥ ७ ॥ परिही

तिलक्ख सोलस, सहस्स दोयसय सत्तवीस हिया ॥ कोस तिग अठावीसं, धणु सय तेरंगुलऽ हियं ॥ ८ ॥ सत्तेवयकोडिसया, णउआ छप्पन्न सय सहस्साइं ॥ चउणउयं च सहस्सा, सयंदिवट्ठं च साहीयं ॥ ए ॥ गाउअ मेगं पनरस, धणुसया तह धणूणि पनरस्स ॥ सठिं च अंगुलाइं, जंबुद्दीवस्स गणियपयं ॥ १० ॥ भरहाइ सत्त वासा, वियड्ढ चउ चउरतिंस वट्टियरे ॥ सोलस वक्खार गिरि, दो चित्त विचित्त दो जमगा ॥ ११ ॥ दोसय कणय गिरीणं, चउ गयदंता य तह सुमेरू य ॥ छ वासहरा पिंडे, एगुणसत्तरि सया उन्नी ॥१२॥ सोलस वक्खारेसु, चउ चउ कूडा य हुंति पत्तेयं ॥ सोमणस गंधमायण, सत्त ठय रुप्पि महाहिमवे ॥ १३ ॥ चउतीस वियड्ढेसु, विज्जुप्पह निसढ नीलवंतेसु ॥ तह मालवंत सुरगिरि, नव नव कूडाइं पत्तेयं ॥ १४ ॥ हिमसिहरिसु इक्कारस, इय इगसठी गिरीसु कूडाणं ॥ एगत्ते सव्वधणं, सयचउरो सत्तसठीयं

॥ १५॥ चउ सत्त अठ नवग, गारसकूमेहिं गुणह जहसंखं॥ सोलस ऊऊ गुणया लं, ऊवेय सगसठि सयचउरो॥ १६॥ चउतीसं विजएसु, उसहकूमा अठमेरुजंबुं मि॥अठय देवकुराइं, हरिकूम हरिस्सए सठी॥१७॥मागह वरदाम पना, सं तिन्न विजयेसु एरवय नरहे॥ चउतीसा तिहिं गुणिया, ऊरुत्तरसयं तु तिनाणं॥१८॥ विज्जाहर अनिउगिय, सेढीउ ऊन्नि ऊन्नि वेअट्ठे ॥ इय चउगुण चउतीसा, न त्तीस सयं तु सेढीणं॥ १ए॥ चक्की जेयव्वाइ, विजयाइं इन्न हुंति चउतीसा॥म ह दह न प्पउमाई, कुरूसु दसगंति सोलसगं ॥ २०॥ गंगा सिंधू रत्ता, रत्त वई चउ नईउ पत्तेयं॥ चउदसहिं सहसेहिं, समग्ग वच्चंति जलहिंमि॥ २१॥ एवं अन्नितरिया, चउरो पुण अठवीस सहसेहिं॥ पुणरवि नप्पन्नेहिं, सहसे हिं जंति चउ सलिला॥ २२॥ कुरुमझे चउरासी, सहसाइं तहय विजय सो लससु॥ बत्तीसाण नईणं, चउदस सहसाइं पत्तेयं॥ २३॥ चउदस सह

स्स गुणिया, अडतिस नइउ विजय मब्बिल्ला ॥ सीउयाए निवम्मं, ति तहय सीयाइ एमेव ॥ २४ ॥ सीया सीउया वि य, बत्तीससहस्सपंचलक्खेहिं ॥ सव्वे चउदस लक्खा, छप्पन्न सहस्स मेलविया ॥ २५ ॥ छज्जोयणसकोसे, गंगासिंधूण वित्थरो मूले ॥ दसगुणिउ पज्जंते, इय हु हु गुणणेण सेसाणं ॥ २६ ॥ जोयणसयमुच्चिठा, कणयमया सिहरिचुल्लहिमवंता ॥ रुप्पि महाहिमवंता, डुसुउच्चा रुप्पकणयमया ॥ २७ ॥ चत्तारि जोयण सए, उच्चिठो निसढ नीलवंतो य ॥ निसढो तवणिज्जमउ, वेरुलियो नीलवंतो य ॥ २८ ॥ सव्वे वि पव्वयवरा, समयखित्तम्मि मंदर विहुणा ॥ धरणितले मुवगाढा, उस्सेय चउब्भायम्मि ॥ २९ ॥ खंडाई गाहाहिं, दसहिं दारेहिं जंबुदीवस्स ॥ सघयणी सम्मत्ता, रइया हरिभद्दसूरीहिं ॥ ३० ॥ इति श्रीलघुसंग्रहणीप्रकरणं संपूर्णम् ॥

॥ अथ बृहत्संग्रहणीसूत्राणि ॥ नमिउं अरिहंताई, ठिइ नवणो गाहणा य प

त्तेयं ॥ सुरनारयाण वुच्छं, नरतिरियाणं विणा नवणं ॥ १ ॥ उववाय चवण विरहं, संखं इगसमइअं गमागमणे ॥ दसवाससहस्साइं, नवणवईणं जहन्नठिई ॥ २ ॥ चमर बलि सार महिअं, तद्देवीणं तु तिन्नि चत्तारि ॥ पलियाइं सड्ढाइं, सेसाणं नवनिकायाणं ॥ ३ ॥ दाहिण दिवड्ढपल्लिअं, उत्तरउ हुंति दुन्नि देसूणा ॥ तद्देवि मद्ध पलिअं, देसूणं आउमुक्कोसं ॥ ४ ॥ वंतरिआण जहन्नं, दसवाससहस्स पलिअमुक्कोसं ॥ देवीणं पलिअद्धं, पलिअं अहियं ससिरवीणं ॥ ५ ॥ लरकेण सहस्सेण य, वासाण गहाण पलिअमेएसिं ॥ ठिइ अद्धं देवीणं ॥ कमेण नरकत्ततारोणं ॥ ६ ॥ पलिअद्धं चउन्नागो, चउ अट्ठन्नागाहिगाउ देवीणं ॥ चउजुअले चउन्नागो, जहन्नमट्ठन्नाग पंचमए ॥ ७ ॥ दोसाहि सत्तसाहिय, दस चउदस सतर अयर जा सुक्को ॥ इक्किक्क महिय मित्तो, जा इगतीसुवरि गेविज्जे ॥ ८ ॥ तित्तीस णुत्तरेसु, सोहम्माइसु इमा ठिइ जिठा ॥

सोहम्मे ईसाणे, जहन्नठिई पलिअ महियं च॥ ए ॥ दोसाहि सत दस चउद
स, सत्तर अयराइं जा सहस्सारो ॥ तप्परउ इक्किक्कं, अहिअं जा णुत्तर चउक्के
॥ १० ॥ इगतीससागराइं, सव्वठ पुण जहन्नठिइ नहि ॥ परिगहिआणिअ रा
णिय, सोहम्मीसाणदेवीणं ॥ ११ ॥ पलिअं अहिअं च कमा, ठिई ज
हन्ना इअ उक्कोसा ॥ पलिआइं सत्त पन्ना, स तहय नव पंचवन्ना य ॥ १२ ॥
पण ठ च्चउ चउ अठ य, कमेण पत्तेअ मग्गमहिसीउ ॥ असुर नागाइ वंतर,
जोइस कप्पडुगिंदाणं ॥ १३ ॥ डुसुतेरस डुसुबारस, ठप्पण चउ चउ डुगे डु
गे अ चउ ॥ गेविज णुत्तरे दस, बिसठि पयरा उवरि लोए ॥१४॥ सोहम्मुक्को
सठिइ, निअपयरविहत्त इबसंगुणिआ ॥ पयरुक्कोस ठिइउ, सव्वजहन्नउ पलि
यं ॥ १५ ॥ सुरकप्पठिइविसेसो, सगपयरविहत्त इबसंगुणिउ ॥ हिठिल्लठिइस
हिउ, इच्छियपयरम्मि उक्कोसा ॥१६॥ सोमजमाणं स तिन्ना, ग पलिय वरुणस्स

देसूणा ॥ वेसमणे दो पलिया, एस ठिई लोगपालाणं ॥ १७ ॥ कप्पस्स अंतपयरे, नियकप्पवडिंसया विमाणाउ ॥ इंदनिवासा तेसिं, चउदिसिं लोगपालाणं ॥ १८ ॥ (सुरेसु ठिइदारं सम्मत्तं, एएसु चेव भवणदारं भण्णइ) असुरा नाग सुवन्ना, विज्जू अग्गीह दीव उदहीअ ॥ दिसि पवण थणिय दसविह, भवणवई तेसु दुदु इंदा ॥ १९ ॥ चमरे बलीअ धरणे, भूयाणं देअ वेणुदेवे य ॥ तत्तो अ वेणु दाली, हरिकंत हरिस्सहे चेव ॥ २० ॥ अग्गिसिह अग्गिमाणव, पुण्णविसिठे तहेव जलकंते ॥ जलपह तह अमिअगई, मिअवाहण दाहिणुत्तरउ ॥ २१ ॥ वेलंबेअ पभंजण, घोस महाघोस एसि मन्नयरो ॥ जंबुदीवं छत्तं, मेरुं दंडं पहु काउं ॥ २२ ॥ चउतीसा चउचत्ता, अठत्तीसा य चत्तपंचण्हं ॥ पन्ना चत्ता कमसो, लक्खा भवणाण दाहिणउ ॥ २३ ॥ चउचउलक्खविहूणा, तावइआ चेव उत्तरदिसाए ॥ सव्वे वि सत्तकोडी, बावत्तरि हुंति लक्खा य ॥ २४ ॥ चत्तारियकोडीउ, लक्ख

छच्चेव दाहिणे जवणा ॥ तिसेव य कोडीउ, लक्खा गवठि उत्तरउ ॥ २५॥ रय णाए हिठुवरिं, जोयणसहसं विमुत्तु ते जवणा ॥ जंबुद्दीवसमा तह, संख म संखिज्ज विछारा ॥ २६ ॥ चूडामणिफणि गरुडे, वज्जे तह कलस सीह अस्से अ ॥ गय मयर वध्दमाणे, असुराईणं मुणसु चिंधे ॥ २७ ॥ असुरा काला ना गु द, हि पंडुरा तह सुवस दिसि थणिया ॥ कणगाज विज्जु सिहि दी, व अ रुण वाऊ पिअंगुनिजा ॥ २८ ॥ असुराणवछरत्ता, नागो दहि विज्जु दीव सि हि नीला ॥ दिसि थणिअ सुवन्नाणं, धवला वाऊण संझरुई ॥ २९ ॥ चउस ठि सठि असुरे, छच्च सहस्साइं धरणमाईणं ॥ सामाणिया इमेसिं, चउग्गुणा आयरक्खाय ॥३०॥ रयणाए पढमजोयण, सहसे हिठुवरिं सय सय विहूणे ॥ वंतरियाणं रम्मा, जोमा नगरा असंखिज्जा ॥ ३१ ॥ बाहिंवट्टा अंतो, चउरंस अहोअ कस्मियायारा ॥ जवणवईणं तह वं, तराण इंदजवणाउ नायव्वा ॥

॥ ३२ ॥ तहिं देवा वंतरिया, वरतरुणीगीयवाइयरवेणं ॥ निच्चं सुहिया पमुइ या, गयंपि कालं न याणंति ॥३३॥ ते जंबुदीव भारह, विदेह सम गुरु जहन्न मज्झिमगा ॥ वंतर पुण अठविहा, पिसायभूया तहा जक्खा ॥ ३४ ॥ रक्कस किं नर किंपुरिसा, महोरगा अठमा य गंधव्वा ॥ दाहिणउत्तरभेआ, सोलस तेसिं इमे इंदा ॥ ३५ ॥ काले अ महाकाले, सुरूव पडिरूव पुन्नभद्दे अ ॥ तह चेव माणिभद्दे, भीमे अ तहा महाभीमे ॥ ३६ ॥ किंनर किंपुरिस सपुरिस, महापु रिस तहय अइकाए ॥ महकाए गीअरई, गीअजसे दुन्नि दुन्नि कमा ॥ ३७ ॥ चिंधं कलंब सुलसे, वड खट्टंगे असोग चंपयए ॥ नागे तुंबरुअव्वए, खट्टंगवि वज्जिया रुक्का ॥३८॥ जक्क पिसाय महोरग, गंधव्वा साम किंनरा नीला॥ रक्कस किं पुरिसा वि अ, धवला भूआ पुणो काला ॥३९॥ अणपन्नी पणपन्नी, इसिवाइ अ भूअवाइए चेव ॥ कंदी अ महाकंदी, कोहंडे चेव पयए अ ॥४०॥ इयपढम

जोयणसए, रयणाए अठ वंतरा अवरे ॥ तेसु इह सोलसिंदा, रुअग अहो दाहिणुत्तरउ ॥ ४१ ॥ संनिहिए सामाणे, धाइ विहाए इसिय इसिवाले ॥ ई सर महेसरे विय, हवइ सुवह्रे विसाले य ॥४२॥ हासे हास रईविय, सेएय त्र वे तहा महासेए ॥ पयगे पयगवईविय, सोलसइंदाण नामाइं ॥४३॥ सामाणि याण चउरो, सहस्स सोलसय आयरक्खाणं ॥ पत्तेयं सवेसिं, वंतरवइ ससि रवीणं च ॥४४॥ इंद सम तायतीसा, परिसतिया रक्खलोगपाला य ॥ अणि य पइन्ना अभिउगा, किब्बिसं दस भवण वेमाणी ॥ ४५ ॥ गंधव नट्ट हय ग य, रह भड अणियाणि सब इंदाणं॥ वेमाणियाण वसहा, महिसा य अहोनि वासीणं ॥ ४६ ॥ तित्तीस तायतीसा, परिसतिआ लोगपाल चत्तारि ॥ अणि आणि सत्त सत्तय, अणियाहिव सवइंदाणं ॥ ४७ ॥ नवरं वंतर जोइस, इं दाण न हुंति लोगपालाउ ॥ तायत्तीसभिहाणा, तियसावियतेसिं नहु हुंति ॥

॥४८॥ समभूतलाउ अठहिं, दसूण जोयण सएहिं आरब्भ ॥ उवरि दसुत्तर जोयण, सयम्मि चिठंति जोइसिया ॥४९॥ तब रवी दस जोयण, असीइ तडुवरि ससी य रिक्खेसु ॥ अह भरणि साइ उवरिं, बहिमूलो भिंतरे अभिई ॥५०॥ तार रवि चंद रिक्खा, बुह सुक्का जीव मंगल सणिया ॥ सगसय नउय दस असिइ, चउ चउ कमसो तिया चउसु ॥ ५१ ॥ इक्कारस जोयणसय, इगवीसि क्कारसाहिया कमसो ॥ मेरुअलोगाबाहिं, जोइसचक्कं चरइ ठाइ ॥५२॥ अद्धकविठागारा, फलिहमया रम्म जोइस विमाणा ॥ वंतरनयरेहिं तो, संखिज्जगुणा इमे हुंति ॥५३॥ ताइं विमाणाइं पुण, सव्वाइं हुंति फालिहमयाइं ॥ दगफालीहमया पुण, लवणे जे जोइस विमाणा ॥५४॥ जोयणिगसठि भागा, छप्पन्नडयाल गाउ इगद्धं ॥ चंदाइ विमाणाया, म वित्थरा अद्ध मुच्चत्तं॥५५॥ पणयाल लक्ख जोयण, नरखित्तं तत्थिमे सया भमिरा ॥ नरखित्ताउ बहिं

पुण, अध्पमाणा ठिआ निच्चं ॥५६॥ ससिरविगहनक्खत्ता, ताराउ हुंति जहु
त्तरं सिग्घा ॥ विवरीयाउ महट्ठीअ, विमाणवहगा कमेणेसिं ॥ ५७ ॥ सोलस
सोलस अड चउ, दो सुरसहसा पुरोय दाहिणउ ॥ पच्छिम उत्तर सीहा,
हत्थी वसहा हया कमसो ॥ ५८ ॥ गहअठासी नक्खत, अडवीसं तार कोडि
कोडीणं ॥ छासठिसहस नवसय, पणसत्तरि एगससि सिन्नं ॥ ५९ ॥ कोडा
कोडी सन्नं, तरंतु मन्नंति खित्त थोवतया ॥ केई अन्ने उस्से, हंगुलमाणेण ता
राणं ॥ ६० ॥ किण्हं राहुविमाणं, निच्चं चंदेण होइ अविरहियं ॥ चउरंगुल
मप्पत्तं, हिठा चंदस्स तं चरइ ॥६१॥ तारस्स य तारस्स य, जंबुद्दीवम्मि अं
तरं गुरुयं ॥ बारस जोयण सहसा, डुन्निसया चेव बायाला ॥ ६२ ॥ निसढो य
नीलवंतो, चत्तारिसयउच्च पंचसय कूडा ॥ अद्धंउवरिं रिक्खा, चरंति उन्नय
ठ बाहाए ॥ ६३ ॥ छावठा डुन्निसया, जहन्नमेयं तु होइ वाघाए ॥ निव्वाघा

ए गुरु लहु, दोगाउय धणुसया पंच ॥ ६४ ॥ माणुसनगाउ बाहिं, चंदासूरस्स सूरचंदस्स ॥ जोयणसहस्स पन्ना, स णूणगा अंतरं दिठं ॥ ६५ ॥ ससिससि रविरवि साहिय, जोयण लक्खेण अंतरं होइ ॥ रविअंतरिया ससिणो, ससि अंतरिया रवी दित्ता ॥६६॥ बहियाउ माणुसुत्तर, चंदा सूरा अवठिअजोया ॥ चंदा अभीयजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥ ६७ ॥ उद्धार सागरदुगे, सठे समएहिं तुल्ल दीवुदही ॥ दुगुणा दुगुण पविछर, वलयागारा पढमवज्जं ॥ ॥ ६८ ॥ पढमो जोयण लक्खं, वट्टो तं वेढिउं ठिया सेसा ॥ पढमो जंबुद्दीवो, सयंभुरमणोदही चरमो ॥ ६९ ॥ जंबू धायइ पुक्कर, वारुणिवर खीरघय खो य नंदिसरा ॥ अरुण रुणवाय कुंम्डल, संख रुयग भुयग कुसकुंचा ॥ ७० ॥प ढमे लवणोजलहि, बीए कालो य पुक्कराईसु ॥ दीवेसु हुंति जलही, दीवस माणेहिं नामेहिं ॥ ७१ ॥ आभरण वछ गंधे, उप्पल तिलएय पउम निहि रय

णे ॥ वासहर दह नईउ, विजया वक्खार कप्पिंदा ॥७२॥ कुरु मंदर आवासा,
कूडा नक्खत्त चंद सूरा य ॥ अन्ने वि एवमाइ, पसत्थ वत्थूण जे नामा ॥ ७३ ॥
तं नामा दीवु दही, तिपडोयायार हुंति अरुणाई ॥ जंबू लवणाईया, पत्तेयं ते
असंखिज्जा ॥७४॥ ताणं तिम सूरवरा, वन्नास जलही परं तु इक्किक्का ॥ देवे
नागे जक्खे, भूए य सयंभुरमणे य ॥७५॥ वारुणिवर खीरवरो, घयवर लवणो
य हुंति भिन्नरसा ॥ कालो य पुक्खरोदहि, सयंभुरमणो य उदगरसा ॥ ७६ ॥
इक्खुरस सेसजलही, लवणे कालो य चरिम बहुमच्छा ॥ पण सग दस जोयण
सय, तणु कमा थोवसेसेसु ॥ ७७ ॥ दो ससि दो रवि पढमे, दुगुणा लवणम्मि
धायईसंडे ॥ बासससि बारस रवि, तप्पभिइ निदिठ ससिरविणो ॥ ७८ ॥ ति
गुणा पुव्विल्ल जुया, अणंतराणंतरंमि खित्तंम्मि ॥ कालोए बायाला, बिसत्तरी
पुक्खरद्धंमि ॥ ७९ ॥ दो दो ससि रवि पंती, एगंतरिया छसठि संखाया ॥ मेरुं

पयाहिणंता, माणुसखित्ते परियडंति ॥ ८० ॥ छप्पन्नं पंतीउ, नक्खत्ताणं तु मणुयलोगंमि ॥ छवठी छवठी, होई इक्किक्किया पंती ॥८१॥ एवं गहाइणो विहु, नवरं धुव पासवत्तिणो तारा ॥ तंचिय पयाहिणंता, तत्थेव सया परिभमंति ॥८२॥ चउयाल सयं पढमि, ल्लयाए पंतीए चंदसूराणं ॥ तेणपरं पंतीउ, चउरुत्तरियाइ वुड्ढीणं ॥८३॥ बावत्तरि चंदाणं, बावत्तरि सूरियाण पंतीए ॥ पढमाए अंतरं पुण, चंदाचंदस्स लक्ख दुगं ॥८४॥ जो जावइ लक्खाइं, विछरउ सागरो य दीवो वा ॥ तावइआउ य तहिं, चंदासूराण पंतीउ ॥८५॥ पनरस चुलसीइ सयं, इह ससि रवि मंडलाइं तक्खित्तं ॥ जोयण पणसय दसहिय, भागा अडयाल इगसठा ॥ ८६ ॥ तिसिइगसठा चउरो, इगइगसठस्स सत्तभइय स्स ॥ पणतीसं च दु जोयण, ससिरविणो मंडलं तरयं ॥ ८७ ॥ पणसठी निसढंमिय, तत्तिय बाहा दु जोयणं तरिया ॥ एगुणवीसं च सयं, सूरस्स य मंड

ला लवणे ॥८८॥ मंडलदसगं लवणे, पणगं निसढम्मि होइ चंदस्स ॥ मंडल
अंतरमाणं, जाण पमाणं पुरा कहियं ॥८९॥ ससिरविणो लवणंमि य, जोयण
सय तिन्नि तीस अहियाइं ॥ असिईइ तु जोयणसयं, जंबुद्दीवम्मि पविसंति॥९०॥
गह रिक्ख तार संखं, जच्छेछसि नाउ मुदहिदीवे वा ॥ तस्ससिहि एग ससिणो,
गुणसंखं होइ सव्वग्गं ॥ ९१ ॥ बत्तीसठावीसा, बारस अड चउ विमाण ल
क्खाइं ॥पन्नास चत्त छ सहस, कमेण सोहम्म माईसु ॥ ९२ ॥ दुसु सयचउ
दुसु सयतिग, मिगारसहियं सयं तिगेहिठा ॥ मज्झे सत्तुत्तरसय, मुवरि तिगे
सयमुवरि पंच ॥ ९३ ॥ चुलसीइ लक्ख सत्ता, णवइ सहस्सा विमाण तेवीसं ॥
सव्वग्ग मुड्ढलोगं, मिइंदया बिसठि पयरेसु ॥ ९४ ॥ चउदिसि चउपंतीउ,
बासठिविमाणिया पढमपयरे ॥ उवरि इक्किक्कहीणा, अणुत्तरे जाव इक्किक्कं
॥ ९५ ॥ इंदयवट्टा पंतिसु, तोकमसो तंस चउरसा वट्टा ॥ विविहा पुप्फवकि

स्सा, तयंतरे मुत्तुं पुव्वदिसिं ॥ ९६ ॥ वट्टं वट्टसुवरिं, तंसं तंसस्स उवरिमं होइ ॥ चउरंसे चउरंसं, उढ्ढंतु विमाण सेढीए ॥ ९७ ॥ सव्वे वट्टविमाणा, एगडुवारा हवंति नायव्वा ॥ तिन्निय तंसविमाणे, चत्तारि य हुंति चउरंसे ॥ ९८ ॥ आवलि य विमाणाणं, अंतरं नियमसो असंखिज्जं ॥ संखिज्जमसंखिज्जं, जणियं पुप्फावकिन्नाणं ॥ ९९ ॥ एगं देवे दीवे, डुवे य नागोदही सुब्बोधव्वे ॥ चत्तारि जक्खदीवे, नूय समुद्देसु अठव ॥ १०० ॥ सोलस सयंजुरमणे, दीवेसु पइठिया य सुरजवणा ॥ इगतीसं च विमाणा, सयंजुरमणे समुद्दे य ॥ १०१ ॥ अच्चंत सुरहिगंधा, फासे नवणीय मउय सुह फासा ॥ निच्चुजोया रम्मा, सयंपहा ते विरायंति ॥ १०२ ॥ जे दक्खिणेण इंदा, दाहिणउ आवली मुणेयव्वा ॥ जे पुण उत्तर इंदा, उत्तरउ आवली मुणे तेसिं ॥ १०३ ॥ पुव्वेण पच्छिमेण य, जे वट्टा तेवि दाहिणिल्लस्स ॥ तंस चउरंसगा पुण, सामन्ना हुंति डुण्हंपि ॥१०४॥ पुव्वे

ण पच्छिमेण य, सामन्ना आवली मुणेयव्वा ॥ जेपुण वट्ट विमाणा, मच्चिल्ला दा
हिणल्लाणं ॥ १०५ ॥ पागारपरिक्खित्ता, वट्टविमाणा हवंति सव्वेवि ॥ चउरंस
विमाणाणं, चउद्दिसिं वेइया होइ ॥ १०६ ॥ जत्तो वट्टविमाणा, तत्तो तंसस्स
वेइया होइ ॥ पागारो बोधव्वो, अवसेसेहिंतु पासेसु ॥ १०७ ॥ पढमं तिम पयरा
वलि, विमाण मुहभूमि तस्स मासर्द्ध ॥ पयरगुण मिठकप्पे, सव्वग्गं पुप्फकि
ण्णयरे ॥ १०८ ॥ इगदिसि पंति विमाणा, तिविभत्ता तंस चउरसा वट्टा ॥ तंसे
सु सेसमेगं, खिव सेस दुगस्स इक्किक्कं ॥ १०९ ॥ तंसेसु चउरंसेसु य, तो रासि
तिगंपि चउगुणं काउं ॥ वट्टेसु इंदयं खिव, पयरधणं मीलियं कप्पे ॥ ११० ॥
कप्पेसुय मिय महिसो, वराह सीहाय छगल सालूरा ॥ हय गय भुयंग खग्गी,
वसहा विडिमाइं चिंधाइं ॥ १११ ॥ चुलसी असिइ बावत्तरि, सत्तरि सठी
य पन्न चत्ताला ॥ तुल्लसुर तीस वीसा, दस सहस्सा आयरक्ख चउगुणिया ॥

॥ ११२ ॥ इसु तिसु तिसु कप्पेसु, घणुदहि घणवाय तडुनयं च कमा ॥ सुरन्न वणपइठाणं, आगास पइठिया उवरिं ॥ ११३ ॥ सत्तावीस सयाइं, पुढवीपिं मो विमाण उच्चत्तं ॥ पंचसया कप्पडुगे, पढमे तत्तोय इक्किकं ॥ ११४ ॥ हायइ पुढवीसु सयं, वड्ढइ नवणेसु ड ड ड कप्पेसु ॥ चउगे नवगे पणगे, तहेव जाणु त्तरेसु नवे ॥ ११५ ॥ इगवीस सया पुढवी, विमाण मिक्कारसेवय सयाइ ॥ ब त्तीस जोयणसया, मिलिया सवब नायवा ॥ ११६ ॥ पण चउ ति ड वस्र वि मा, ण सधय इसु इसुय जा सहस्सारो ॥ उवरि सिय नवण वंतर, जोइसि याणं विविहवस्रा ॥ ११७ ॥ रविणो उदयबंतर, चउणवइसहस पणसय ब वीसा ॥ बायाल सहिन्नागा, कक्कड संकंति दियहंमि ॥ ११८ ॥ एयंमि पुणो गुणिए, तिपंच सग नवहि होइ कममाणं ॥ तिगुणंमि य दोलरका, तेसीइ स हस्स पंचसया ॥ ११९ ॥ असिई ब सहिन्नागा, जोयण चउलरक बिसतरि

सहस्सा ॥ छच्चसया तेत्तीसा, तीसकला पंचगुणियम्मि ॥ १७० ॥ सत्तगुणे छ
लक्खा, इगसठिसहस्स छ सय छासीया ॥ चउपन्नकला तह नव, गुणंमि अ
डलक्ख सट्ठाउ ॥ १७१ ॥ सत्तसया चत्ताला, अठारसकला य इयकमा चउ
रो ॥ चंडा चवला जयणा, वेगाय तहा गइ चउरो ॥ १७२ ॥ इछयगइं चउ
ठिं, जयणयरिं नाम केइ मन्नंति ॥ एहिं कमेहिं मिमाहिं, गईहिं चउरो सुरा
कमसो ॥ १७३ ॥ विक्खंभं आयामं, परिहिं अब्भिंतरिं च बाहिरियं ॥ जुगवं मि
णंति छम्मा, स जाव न तहावि ते पारं ॥ १७४ ॥ पावंति विमाणाणं, केसिंपि
हु अहव तिगुणियाइए ॥ कमचउगे पत्तेयं, चंडाइगईउ जोइज्जा ॥ १७५ ॥ जो
यण लक्ख परमाणं, निमेस मित्तेण जाइ जो देवो ॥ छम्मासे णय गमणं, एगं
रज्जू जिणा बिंति ॥ १७६ ॥ तिगुणेण कप्पचउगे, पंचगुणेणं तु अठसु मुणिज्जा ॥
गेविज्जे सत्तगुणेणं, नवगुणे णुत्तरचउक्के ॥ १७७ ॥ पढमपयरम्मि पढमे, कप्पे

उडुनामइंदयविमाणं ॥ पणयाल लक्कजोयण, लक्कं सव्वुवरि सव्वठं ॥ १२८ ॥ उडु चंद रयणवग्घू, वीरिय वरुणे तहेव आणंदे॥ बंभे कंचण रुइज्जे, चंद अरुणे य वरुणे य ॥ १२९ ॥ वेरुलिय रुयग रुइरे, अंके फलिहे तहेव तवणिज्जे ॥ मेहे अग्घ हलिद्दे, नलिणे तहलोहियक्केय ॥ १३० ॥ वइरे अंजण वरमा, ल रिठ देवेय सोम मंगलए ॥ बलभद्दे चक्क गया, सोवत्थिय णंदियावत्ते ॥ १३१ ॥ आभंकरेय गिध्धी, केउ गरुले य होइ बोधव्वे ॥ बंभे बंभहिए पुण, बंभुत्तर लंतए चेव ॥१३२॥ महसुक्क सहस्सारे, आणाय तह पाणएय बोधव्वे ॥ पुप्फे लंकार आरण, तहा विय अच्चुए चेव ॥ १३३ ॥ सुदंसण सुपडिबध्धे ॥ मणोरमे चेव होइ पढमतिगे ॥ तत्तोय सव्वभद्दे, विसालए सोमणे चेव ॥ १३४ ॥ सोमणसे पीइकरे, आइच्चे चेव होइ तइय तिगे॥ सवठ सिध्धि नामे, इंदया एव बासठी ॥ १३५ ॥ पणयालीसं लक्का, सीमंतय माणुसं उडु सिवंच ॥ अपयठाणो

सव्व, ठ जंबुद्दीवो इमं लरकं ॥ १३६ ॥ अह नागा सग पुढवी, सु रज्जु इक्किक्क तह य सोहम्मे ॥ माहिंद लंत सहसा, र अच्चुय गेविज्ज लोगंते ॥ १३७ ॥ ॥ ७ ॥ सुरेसु नवण दारं सम्मत्तं ॥ इण्हिं उगाहणा दारं नमइ ॥ ॥ ॥ नवण वण जोइ सोह, म्मीसाणे सत्तहब तणुमाणं ॥ ऊ ऊ ऊ चउक्केगे वि, ज्जणु त्तरे हाणि इक्किक्कं ॥१३८॥ कप्पऊग ऊ ऊ ऊ चउगे, नवगे पणगे य जिठठिइ अ यरा ॥ दो सत चउदठारस, बावीसिगतीस तित्तीसा ॥ १३९ ॥ विवरे ताणि कूणे, इक्कारसगाउ पामिए सेसा ॥ हचिक्कारसन्नागा, अयरे अयरे समहियम्मि ॥ १४०॥ चयपुव्वसरीराउ, कमेणएगुत्तराइ वुड्ढीए ॥ एवंठिइविवेसा, सणंकुमारा इ तणुमाणं ॥ १४१ ॥ नवधारणिज्ज एसा, उत्तरविउव्वि जोयणालरकं ॥ गेविज्ज णुत्तरेसु, उत्तरवेउव्विआ नत्थि ॥ १४२ ॥ साहाविय वेउव्विय, तणू जहन्ना कमेण पारंन्ने ॥ अंगुल असंख नागो, अंगुल संखिज्ज नागो य ॥ १४३ ॥ ७॥ सुरेसु उ

गाहणा दारं सम्मत्तं, इण्हिं विरहकालोववाय उवट्टणाणं दारं जणइ ॥ ७ ॥
सामन्नेणं चउविह, सुरेसु बारसमुहुत्त उक्कोसा ॥ उववायविरहकालो, अह जव
णाईसु पत्तेयं ॥ १४४ ॥ जवण वण जोइ सोह, म्मी साणेसू मुहुत्त चउवीसं ॥ तो
नवदिण वीसमुहू, बारसदिण दस मुहुत्ता य ॥ १४५ ॥ बावीस सद्धदीहा, पणया
ल असीइ दिणसयंतत्तो ॥ संखिज्जा डुसु मासा, डुसु वासा तिसु तिगेसु कमा ॥
॥ १४६ ॥ वासाणसया सहसा, लक्का तह चउसु विजयमाईसु ॥ पलियाअसं
खजागो, सबठे संखजागो य॥ १४७॥सव्वेसिंपि जहन्नो, समउ एमेव चवणविरहो
वि ॥ इग डु ति संख मसंखा, इग समए हुंति अ चवंति ॥ १४८ ॥ नरपंचिंदिय
तिरिया, णुप्पत्तीसुरजवे पजुत्ताणं ॥ अव्ववसाय विसेसा, तेसिं गइ तारतम्मंतु
॥१४९॥नर तिरिअसंखजीवी, सव्वे नियमेण जंति देवेसु ॥ नियआउअसम ही
णा, उएसु ईसाण अंतेसु ॥ १५० ॥ जंति समुच्छिम तिरिया, जवण वणेसु नजो

इमाईसु ॥ जं तेसिं उववाउ, पलिया संखंस आऊसु॥१५१॥बालतवे पमिबङा, उक्कड रोसा तवेण गारविया॥वेरेणय पडिबङा, मरिउं असुरेसु जायंति ॥१५२॥ रज्जुगाह विस नक्खण, जल जलण पवेस तण्ह छुह उहउ ॥ गिरिसिर पडणा उ मुया, सुहनावा हुंति वंतरिया॥ १५३ ॥ तावस जा जोइसिया, चरग परिवा य बंनलोगो जा ॥ जा सहसारो पंचिं, दितिरिअ जा अच्चुउ सड्ढा ॥ १५४ ॥ जइ लिंगमिछदिठि, गेविज्जा जाव जंति उक्कोसं ॥ पयमवि असद्दहंतो, सुत्तछं मिछदिठीउ॥१५५॥सुत्तं गणहररइअं, तहेव पत्तेयबुङरइअं च ॥ सुयकेवलि णा रइअं, अनिस दस पुव्विणा रइअं॥ १५६ ॥ उउमछ संजयाणं, उववा उक्को सउ अ सव्वठे ॥ तेसिं सड्ढाणंपिअ, जहस्सउ होइ सोहम्मे ॥ १५७ ॥ लंतंमि चउदपुविस, तावसाईण वंतरेसु तहा ॥ एसिं उववाय विही, नियकिरियठिया ण सव्वोवि॥ १५८ ॥ वज्जरिसहनारायं, पढमं बीअं च रिसहनारायं ॥ नारायम

ऽनारा, य कीलिया तहय छेवठं ॥ १५९ ॥ एए छ स्संघयणा, रिसहोपट्टोय की
लिया वज्जं ॥ उभजमक्कडबंधो, नाराउ होइ विन्नेउ ॥ १६० ॥ छ गब्भतिरीनराणं,
संमुच्छिम पणिंदि विगलछेवठं ॥ सुरनेरइया एगिं, दियाय सव्वे असंघयणा ॥
॥१६१॥ छेवठेण उगम्मइ, चउरो जा कप्प कीलियाईसु ॥ चउसु उ उ कप्पवुढी,
पढमेणं जावसिद्धीवि ॥१६२॥ समचउरंसे नग्गो,ह साइ वामणाय खुज्जा हुंडे य ॥
जीवाण छ संठाणा, सवठ सुलक्कणं पढमं ॥ १६३ ॥ नाहीए उवरि बिअं, तई
अमहो पिठि उयर उरवज्जं ॥ सिर गीव पाणी पाए, सुलक्कणं तं चउठं तु ॥
॥१६४॥ विवरीयं पंचमगं, सव्वठ अलक्कणं भवे छठं ॥ गब्भय नर तिरिय छहा,
सुरा समा हुंमया सेसा ॥१६५॥ इतिदेवानां गतिद्वारं, अधुना आगतिद्वार माह
॥७॥ जंति सुरा संखाउ य, गब्भय पजत्त मणुयतिरिएसु ॥ पजत्ते सुय बायर, भू
दग पत्तेयग वणेसु ॥१६६॥ तठवि सणं कुमारं, प्पभिई एगिंदिएसु नो जंति ॥

आणय पमुहा चविउं, मणुए सुचेव गब्भंति ॥ १६७ ॥ दोकप्प कायसेवी, दो दो दो फरिस रूवसद्देहिं ॥ चउरो मणेणु वरिमा, अप्पवियारा अणंतसुहा ॥ १६८ ॥ जं च कामसुहं लोए, जं च दिव्वं महासुहं ॥ वीयराय सुहस्सेय, णंतभागं पि नग्घई ॥ १६९ ॥ उववाउ देवीणं, कप्पडुगं जा परो सहस्सारा ॥ गमणागमणं न ही, अच्चुय परउ सुराणंपि ॥ १७० ॥ तिपलिय तिसार तेरस, साराकप्प डुग त इय लंत अहो ॥ किब्बिसिय नहुंति उवरिं, अच्चुय परउ भिउगाई ॥ १७१ ॥ अ परिग्गह देवीणं, विमाण लक्खा छ हुंति सोहम्मे ॥ पलियाई समया हिय, ठि इजासिं जाव दसपलिया ॥ १७२ ॥ ताउ सणं कुमारा, णेवं वट्ठंति पलिय दस गेहिं ॥ जा बंभ सुक्क आणय, आरण देवाण पन्नासा ॥ १७३ ॥ ईसाणे चउलक्खा, साहिय पलियाइ समय अहियठिई ॥ जा पनर पलिय जासिं, ताउ माहिंदद वाणं ॥ १७४ ॥ एएण कमेण भवे, समयाहिय पलिय दसग वुड्ढीए ॥ लंत सह

सार पाणय, अच्चुय देवाण पणपन्ना ॥ १७५॥ किण्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हा य सुक्कलेसाउ ॥ नवण वण पढम चउले, सजोइस कप्पदुगे तेऊ ॥ १७६॥ कप्पतिय पम्हलेसा, लंताइसु सुक्कलेस हुंति सुरा ॥ कणगाभ पउमकेसर, वन्ना डुसु तिसु उवरि धवला ॥ १७७॥ दसवास सहस्साइं, जहन्नमाउं धरंति जे देवा ॥ तेसिं चउथा हारो, सत्तहि थोवेहि ऊसासो ॥ १७८ ॥ आहि वाहि विमुक्कस्स, नीसासूसास एगगो ॥ पाणू सत्तइमो थोवो, सोवि सत्तगुणो लवो ॥ १७९॥ लवसत्तहत्तरीए, होइ मुहुत्तो इमम्मि ऊसासा ॥ सग तीस सय तिहुत्तर, तीसगुणा ते अहोरत्ते ॥ १८० ॥ लक्खं तेरस सहसा, नउयसयं अयरसंखयादेवे ॥ पक्खेहिं ऊसासे, वास सहस्सेहिं आहारो ॥ १८१ ॥ दसवास सहस्सु वरिं, समयाई जाव सागरं ऊणं ॥ दिवसमुहुत्त पहुत्ता, आहारूसास सेसाणं ॥ १८२॥ सरिरेणो उयाहारो, तयाइफासेण लोमआहारो ॥ पक्खेवाहारोपुण, कावलिउ होइ ना

यव्वो ॥१८३॥ उयाहारा सव्वे, अपजत्त पजत्त लोम आहारो ॥ सुरनिरय इगिंदि वि णा, सेसन्नवड्ढा सपक्खेवा ॥१८४॥ सच्चित्ता चित्तोजय, रूवो आहारसव्व तिरि आणं ॥ सव्वनराणं च तहा, सुरनेरइयाण अच्चित्तो ॥ १८५ ॥ आजोगाणा जो गा, सव्वेसिं होइ लोम आहारो ॥ निरयाणं अमणुन्नो, परिणमइ सुराण समणु न्नो ॥१८६॥ तह विगल नारयाणं, अंतमुहुत्ता सहोइ उक्कोसो ॥ पंचिंदि तिरि नराणं, साहाविउ छठ अठमउ ॥ १८७ ॥ विग्गहगइ मावन्ना, केवलिणो समु हया अजोगी य ॥ सिद्धा य अणाहारा, सेसा आहारगा जीवा ॥ १८८ ॥ केस ठि मंस नह रो,म रुहिर वसचम्म मुत्त पुरिसेहिं ॥ रहिया निम्मल देहा, सुगं ध निस्सास गय लेवा ॥१८९॥ अंतमुहुत्तेणं चिय, पजत्ता तरुण पुरिस संका सा ॥ सव्वंगभूषणधरा, अजरानिरुया समा देवा ॥ १९० ॥ अणि मिस नयणा मणक,ज्ज साहणा पुप्फदाम अमिलाणा ॥ चउरंगुलेण भूमि, न छिवंति सुरा

जिणा बिंति ॥१९१॥ पंचसुजिण कल्लाणे, सु चेव महरिसि तवाणु नावाउ ॥ जम्मंतरनेहेण य, आगच्छंति सुरा इहयं ॥१९२॥ संकंति दिव्वपेमा, विसय पसत्ता समत्त कत्तवा ॥ अणहीण मणुय कज्जा, नरनव मसुहं न इंति सुरा॥१९३॥ चत्तारि पंचजोयण,सयाइ गंधोय मणुयलोगस्स॥उड्ढं वच्चइ जेणं, नहु देवा तेण आवंति॥१९४॥दो कप्प पढम पुढवी, दो दो दो बीय तइयगं चउत्थिं ॥ चउ उवरिम उहीए, पासंती पंचमं पुढविं ॥१९५॥ छठी छग्गेविज्जा, सत्तमीयरे अणुत्तर सुराउ ॥ किंचूण लोगनालिं, असंखदीवुदहि तिरियं तु ॥१९६॥ बहुअरगं उवरिमगा, उड्ढं सविमाण चूलिय धयाइ ॥ ऊण्ड सागरे सं, ख जोयणा तप्पर मसंखा ॥१९७॥ पण वीस जोयण लहु नारय नवणवण जोइ कप्पाणं॥ गेविज्ज णुत्तराणाय, जहसंखं उहियागारा ॥१९८॥ तप्पागारे पल्लग, पम्हग ऊल्लरि मुइंग पुप्फजवे ॥ तिरिय मणुएसु उहि, नाणाविह संठिउ नणिउ॥१९९॥

उड्ढं भवण वणाणं, बहुगोवेमाणियाण होउंही ॥ नारय जोइस तिरियं, नर ति
रियाणं अणेगविहो ॥२००॥ इयदेवाणं भणियं, ठिइ पमुहं नारयाण वुछामि॥
इगतिन्नि सतदससतर, अयर बावीस तित्तीसा॥२०१॥सत्तसु पुढवीसु ठिई, जि
ठोवरिमाइ हिठ पुढवीए॥होइ कमेण कणिठा, दसवास सहस्स पढमाए ॥२०२॥
नवइ सम सहस लक्खा, पुवाणं कोडि अयरदस भागा ॥ इक्किक भाग वुड्ढी,
जा अयरं तेरसे पयरे ॥२०३॥ इय जिठ जहन्ना पुण, दसवास सहस्स लक्ख प
यर दुगे ॥ सेसेसु उवरि जिठा, अहो कणिठाउ पइं पुढवी ॥२०४॥ उवरि खि
इ ठिइ विसेसो, सगपयर विहत्तु इछसंगुणिउं ॥ उवरिम खिइ ठिइ सहिउं,इ
छिय पयरम्मि उक्कोसा ॥२०५॥ सत्तसु खित्तज वेयणा, अन्नन्न कयावि पहरणे
हिं विणा ॥ पहरण कया वि पंचसु, तिसु परमाहम्मिय कयावि ॥२०६॥ बंधण
गइ संठाणा, भेया वन्ना य गंध रस फासा ॥ अगुरु लहु सद्द दसहा, असुहा

विय वुग्गला निरए॥२०७॥नरया दस विह वेयण, सीउ सिण खुह पिवास कं डूहिं ॥ परवस्सं जरदाहं, भय सोगं चेव वेयंति ॥ २०८ ॥ पण कोडि अठ स ठी, लक्का नव नवइ सहस पंचसया ॥ चुलसी अहीयरोगा, छठी तह सत्तमी नरए ॥२०९॥ रयण प्पह सक्कर पह, वालुय पह पंक पहय धूमपहा ॥ तमप हा तम तमपहा, कमेण पुढवीण गोत्ताइं ॥ २१० ॥ धम्मा वंसा सेला, अंजण रिठा मघा य माघवई ॥ नामेहिं पुढवीउ, छत्ताई छत्त संठाणा ॥२११॥ असीय बत्तिस अडविस, वीसा अठार सोल अड सहसा ॥ लक्कुवरि पुढवि पिंडो, घणुदहि घणवाय तणुवाया ॥२१२॥ गयणं च पइठाणं, वीस सहस्साइं घणुद ही पिंडो॥ घणतणुवाया गासा, असंख जोयण जुया पिंडो ॥ २१३ ॥ न फुसं ति अलोगं चउ, दिसंपि पुढवीय वलयसंगहिया ॥ रयणाए वलयाणं, छ ध पंचम जोयणं सड्ढं ॥ २१४ ॥ विक्कंभो घणउदही, घणतणु बायाण होइ

जहसंखं ॥ सत्तिभाग गाऊयं, गाऊयं तह गाउय तिभागो ॥ २१५ ॥ पढम महीवलएसु, खिविज्ज एयं कमेण बीयाए ॥ ङ ति चउ पंच ब गुणं, तइया इसु तंपि खिव कमसो ॥२१६॥ मझेचिय पुढवि अहे,घणुदहिपमुहाण पिंड परिमाणं ॥ भणियं तवो कमेणं, हायइ जा वलय परिमाणं ॥ २१७ ॥ तीस पणवीस पणरस, दसतिन्नि पणूण एगलरकाइं ॥ पंचय निरया कमसो, चुलसीइ लरकाइ सत्तसु वि ॥ २१८ ॥ तेरिक्कारस नव सग, पण तिन्नि गपयर सव्वि गुणवन्ना ॥ सीमंताई अप्पइ, ठाणंता इंदया मझे ॥ २१९ ॥ सीमंतउब्भपढमो, बीउ पुण रोरुय त्ति नामेण ॥ रंभो य तब तइउ, होइ चउब्भो य उब्भंतो ॥२२०॥ संभंतमसंभंतो, विब्भंतो चेव सत्तमो निरउ ॥ अठमउ भंतो पुण,नवमो सीउत्ति णायव्वो॥२२१॥ चक्कंतणु वुक्कंतो, विकलो तह चेव रोरुउ निरउ ॥ पढमाए पुढवीए, इंदिया एएबोधव्वा ॥२२२॥थणिए थणए य तहा,

मणाए मणाए य होइ नायव्वे ॥ घट्टे तह संघट्टे, जिब्भे अव जिब्भए चेव ॥ २२३ ॥
लोले लोलावत्ते, तहेव घण लोलुए य बोधव्वे ॥ बीयाए पुढवीए, इक्कारस इंदि
या एए ॥२२४॥ तत्तो तविउ तवणो, तावसो पंचमो य निद्दड्ढो ॥छठो पुण पज्ज
लिउ, उप्पज्जलिउ य सत्तमउ ॥२२५॥ संजलिउ अठमउ, संपज्जलिउ य नवमउ
भणिउ॥ तइयाए पुढवीए, नवइंदिय नारया ए ए॥ २२६ ॥ आरे तारे मारे, वच्चे
तमए य होइ नायव्वे ॥ खाड खडे खंडखडे, इंदय नरया य चउत्थीए ॥२२७॥ खा
ए तमए य तहा, झसे झसंधए तहा तिमिसे ॥ इह पंचम पुढवीए, पंच निरइंद
या हुंति ॥ २२८॥ हिमवद्दल लल्लके, तिण्णिउनिर इंदयाय छठीए॥ एगो य स
त्तमाए, अपइठाणो उ नामेणं ॥२२९॥ पुव्वेण होइ कालो, अवरेण पइठिउ म
हाकालो॥रोरो दाहिणपासे,उत्तर पासे महारोरो॥ २३०॥तेहिंतो दिसि विदिसिं,
विणिग्गया अठ निरय आवलिया ॥ पढमे पयरे दिसि गुण, वन्ना विदिसासु

अडयाला ॥ २३१ ॥ बीयाइसु पयरेसु, इग इग हीणाउ हुंति पंतीउ॥जा सत्त मि महि पयरे, दिसि इक्किको विदिसि नत्थि ॥ २३२॥ इठप्पयरे ग दिसि, संख असंखा चउ विण इग संखा ॥ जह सीमंतय पयरे, एगुणनउया सया तिन्नी ॥२३३ ॥अपयट्ठाणे पंचउ, पढमो मुहमंतिमो हवइ भूमी ॥ मुह भूमि समास ऽं, पयरगुणं होइ सबधणं ॥२३४॥ छनवइ सय तिवन्ना, सत्तसु पुढवीसु आव ली निरया ॥ सेस तियासी लक्खा, तिसय सियाला नवइ सहसा ॥ २३५ ॥ तिसहस्सुच्चा सबे, संखमसंखिज्ज वित्थडा यामा ॥ पणयाल लक्ख सीमं, तउय ल क्खं अपइट्ठाणो॥२३६॥हिठा घणो सहस्सा, उप्पिंसे कुठडे सहस्सं तु ॥ मज्झे सहस्स सुसिरा, तिन्नि सहस्सुस्सिया निरया ॥ २३७ ॥ छसु हिठोवरि जोयण, सहस्स बावन्न सड्ढचरिमाए ॥ पुढवीए निरय रहिय, निरया सेसम्मि सबासु ॥२३८॥ बिसहस्सूणा पुढवी, तिसहस गुणिएहिं नियय पयरेहिं ॥ ऊणा रुवु

ण निय पयर, नाईयापत्थडंतरयं ॥२३९॥ तेसीया पंचसया, इक्कारस चेव जो यण सहस्सा ॥ रयणा य पत्थडंतर, मेगोच्चिय जोयण तिन्नागो ॥२४०॥ सत्ताण वइ सयाइं, बीयाए पत्थडंतरं होइ ॥ पणहत्तरि तिन्निसया, बारसहस्सा य तइ याए॥२४१॥ नवछसयं सोलस, सहस्स पंका य दोत्ति नागा य ॥ अट्ठाइज्जस याइं, पणवीस सहस्स धूमाए ॥२४२॥ बावन्नसट्ठ सहसा, तमप्पना पत्थमंतरं होइ ॥एगोच्चिअपत्थमउ, अंतररहिउ तमतमाए ॥ २४३ ॥ पउणछ धणु छ अं गुल, रयणाए देहमाणमुक्कोसं ॥ सेसासु उगुण उगुणं, पणधणु सय जावचरि माए ॥२४४ ॥ रयणाय पढम पयरे, हत्थतियं देहमाणमणुपयरं ॥ छप्पन्नंगुल सट्ठा, वुड्ढीजातेरसे पुन्नं ॥२४५॥ जं देहपमाण उवरि, माए पुढवीइ अंतिमे प यरे ॥ तं चिय हिट्ठि म पुढवी, पढमं पयरम्मि बोधव्वं ॥२४६॥ तं चेगूणग सगपय र, नइयं बीयाइ पयर वुड्ढिन्नवे॥ तिकर ति अंगुल करसत, अंगुला सट्ठि गु

ण वीसं ॥२४७॥ पणधणु अंगुलवीसं, पणरसधणु दुणिहत्थ सड्ढाय ॥ बासठि
धणुहसड्ढा, पण पुढवी पयर वुड्ढिइमा ॥२४८॥ इय साहाविय देहो, उत्तर वेउ
व्विउ य तद्दुगुणो ॥ दुविहो वि जहन्न कमा, अंगुल असंख संखंसो ॥२४९॥ स
त्तसु चउवीस मुहू, सग पनरदिणेग दु चउ छम्मासा ॥ उववाय चवणविरहो,
ओहे बारस मुहुत्त गुरू ॥२५०॥ लहुओ दुहावि समओ, संखा पुण सुरसमा मुणेय
व्वा ॥ संखाउ पजत्त पणिं, दि तिरि नरा जंति निरएसु ॥२५१॥ मिच्छादिठि महा
रं, भ परिगहो तिव्वकोह निस्सीलो ॥ नरयाउयं निबंधइ, पावमई रुद्दपरिणामो
॥२५२॥ असन्निसरिसिव पक्खी, ससीह उरगि त्थि जंति जा छट्ठिं ॥ कमसो उ
क्कोसेणं, सत्तम पुढवी मणुय मच्छा ॥२५३॥ वाला दाढी पक्खी, जलयर नरया
गया उ अइकूरा ॥ जंति पुणो नरएसु, बाहुल्लेणं न उण नियमो॥२५४॥दो पढ
म पुढवि गमणं, छेवठे कीलियाइ संघयणे ॥ इक्किक्क पुढवि वुड्ढी, आइ तिलेसा

उ नरएसु ॥२५५॥ दुसु काऊ तइयाए, काऊ नीला य नील पंकाए॥ धुमा य नीलकिण्हा, दुसु किण्ह हुंति लेस्साउ ॥२५६॥ सुर नारयाण ताउ, दव्वल्लेस्सा अवठिया भणिया॥ भाव परावत्तीए, पुणएसिं हुंति छल्लेस्सा ॥२५७॥ निर उवट्टा गब्भय, पजत्तसंखाउ लद्धिए एसिं॥ चक्कि हरिजुअल अरिहा, जिण जइ दिसि सम्मपुहविकमा ॥२५८॥ रयणाएउहि गाउय, चत्तारि छुठ गुरु लहु कमेण॥ पइ पुढवि गाउयद्धं, हायइ जा सत्तमि इगद्धं॥२५९॥(नरय दारं सम्मत्तं, मणुयदारं भणइ)॥६॥गब्भनर ति पलियाऊ, ति गाऊ उक्कोस ते जहन्नेणं॥ मुच्छिम दुहावि अंत मु, हु अंगुल असंख भागतणू॥२६०॥बारस मुहुत्त गब्भे, इयरे चउवीस विरह उक्कोसो॥ जम्म मरणे सुसमउ, जहन्नसंखा सुरसमाणा ॥२६१॥ सत्तमि महि नेरइए, तेऊ वाऊ असंख नर तिरिए॥ मुत्तूण सेसजीवा उप्पजंति नरभवम्मि॥२६२॥सुर नेरइ एहिंचिय, हवंति हरि अरिह चक्किबल

देवा ॥ चउविह सुर चक्किबला, वेमाणिय हुंति हरि अरिहा ॥ २६३ ॥ हरिणो मणुस्स रयणा, इ हुंति नाणुत्तरेहिं देवेहिं ॥ जह संजव मुववाउ, हयगय एगिंदि रयणाणं ॥२६४॥ वामपमाणं चक्कं, छत्तं दंमं उहहयं चम्मं ॥ बत्तीसंगुल खग्गो, सुवम्म कागिणि चउरंगुलिया ॥ २६५ ॥ चउरंगुलो उअंगुल, पिहुलोय मणी पुरोहि गय तुरया ॥ सेणावइ गाहावइ, वट्ठइ थी चक्कि रयणाइं ॥२६६॥ चउरो आयुज गेहे, जंमारे तिन्नि उन्नि वेवट्ठे ॥ एगं रायगिहम्मिय, नियनयरे चेव चत्तारि॥२६७॥नो सप्पे पंडूए, पिंगलए सव्वरयण महपउमे ॥ कालेय महाकाले, माणव गया महासंखे ॥२६८ ॥ जंबुद्दीवे चउरो, सयाइ वीसुत्तराइ उक्कोसं ॥ रयणाइ जहसं पुण,हुंति विदेहंमि छप्पणा ॥२६९॥ चक्कं धणुहं खग्गो, मणी गया तहय होइ वणमाला ॥ संखो सत्तइमाइं, रयणाइं वासुदेवस्स ॥ ॥२७०॥संखनरा चउसुगइ, सु जंति पंचसु वि पढम संघयणे॥इग उति जा अठ

सयं, इगसमए जंति ते सिद्धिं ॥२११॥ वीसि त्थि दस नपुंसग, पुरिसट्ठसयं तु एग समएणं ॥ सिज्झइ गिहिअन्न सलिं, ग चउद्दस अट्ठाहिय सयं च ॥२१२ गुरु लहु मज्झिम दोचउ, अट्ठसयं उड्ढहो तिरिय लोए ॥ चउ बावीसट्ठसयं, दुसमुद्दे तिन्नि सेसजले ॥२१३॥ नरय तिरिया गयादस, नरदेवगईउ वीस अ ट्ठसयं ॥ दसरयणा सक्कर वा, लुयाउ चउ पंक भू दगउ ॥२१४॥ छच्च वणस्सइ दस तिरि, तिरि त्थि दस मणुय वीस नारीउ ॥ असुराइ वंतरा दस, पण तद्देवी उ पत्तेयं ॥२१५॥ जोइ दस देविवीसं, विमाणियट्ठसय वीसदेवीउ ॥ तह पुव्वे एहिंतो, पुरिसो होऊण अट्ठसयं ॥२१६॥ सेसट्ठभंगएसु, दसदस सिज्झंति एग समएणं ॥ विरहो छमास गुरुउ, लहु समउ चवणमिह नत्थि ॥२१७॥अड स ग छ पंच चउ ति, न्नि दुन्नि इक्कोय सिज्जमाणेसु ॥ बत्तीसाइसुसमया, निरंतरं अंतरं उवरिं ॥२१८॥ बत्तीसा अडयाला, सट्ठी बावत्तरी य बोधव्वा ॥ चुलसीई

छसवई, उरहियमत्तहुरसयं च ॥२७९॥ पणयाल लक्खजोयण, विक्खंभा सिद्धसिल फलिह विमला ॥ तदुवरि गजोयणंते, लोगंतो तत्थ सिद्धठिई ॥२८०॥ बहुमज्झदेसभाए, अट्ठेवय जोयणाइ बाहिल्लं ॥ चरिमंते सुय तणुई, अंगुलसंखिज्जई भागं ॥२८१॥ तिन्निसया तित्तीसा, धणुत्ति भागोय कोसछब्भागो ॥ जं परमोगा हणाय, तंते कोसस्स छब्भागो ॥२८२॥ एगा य होइ रयणी, अट्ठेवय अंगुलेहिं साहीया ॥ एसा खलु सिद्धाणं, जहन्न उगाहणा भणिया ॥२८३॥ मणुयदारं समत्तं॥तिरियदारं भणइं॥४॥बावीस सग ति दस वा, स सहस गिण ति दिण बेंदियाईसु॥बारस वासुण पण दिण,छम्मास तिपल्लिय ठिई जिट्ठा ॥२८४॥ सण्हाय सुद्ध वालुय, मणोसिला सक्कराय खर पुढवी ॥ इग बार चउदसोलस, ट्ठारस बावीस समसहसा ॥२८५॥ गब्भ भुय जलयरो भय, गब्भोरग पुव्व कोडि उक्कोसा ॥ गब्भचउप्पय पक्खिसु, तिपल्लिय पलियाअसंखंसो ॥२८६॥पुव्वस्स

उपरिमाणं, सय्यरि खलु वास कोडि लक्खाय ॥ उप्पसंच सहस्सा, बोधव्वा वा सकोडीणं ॥ २८७ ॥ संमुछि पणिंदि थल खयर उरग नूयगा जिठ ठिइ कम सो ॥ वास सहस्सा चुलसी, बिसत्तरि तिपम्न बायाला ॥ २८८ ॥ एसा पुढवाइ णं, नव ठिईसंपयंतु कायठिई ॥ चउ एगिंदि सु णेया, उसप्पिणीउ असंखिज्जा, ॥२८९॥ ताउ वणंमि अणंता, संखिज्जा वास सहस विगलेसु ॥ पंचिंदि तिरि नरेसु, सत्तठ नवाउ उक्कोसा ॥२९०॥ सव्वेसिंपि जहन्ना, अंतमुहुत्तं नवेय का ए य ॥ जोयण सहस्स महियं,एगिंदियदेह मुक्कोसं ॥ २९१ ॥ बि ति चउरिंदि सरीरं,बारस जोयण तिकोस चउकोसं॥जोयण सहसपणिंदिय, उहे वुहं विसेसं तु॥२९२॥अंगुल असंखन्नागो,सुहुम निगोउ असंख गुणवाऊ॥तोअगणितउ आऊ,तत्तो सुहुमा नवे पुढवी॥२९३॥तो बायर वाउ गणी,आऊ पुढवी निगोय अणुकमसो ॥ पत्तेयवणसरीरं,अहियं जोयणसहस्सं तु ॥२९४॥उस्सेहंगुलजोय

ण,सहस्समाणे जलासए नेयं॥तं वल्लि पउम पमुहं,अउ परं पुढविरूवंतु॥२९५॥
बारस जोयण संखो, तिकोस गुम्मीय जोयणं भमरो ॥ मुछिम चउपयभुय गुर
ग, गाऊधणु जोयण पहुत्तं ॥२९६॥ गब्भ चउप्पय छग्गा, उयाइं भुयगाउ गाउ
य पहुत्तं ॥ जोयण सहस्स मुरगा, मच्छा उभय विय सहस्सं ॥२९७॥ पक्खि दु
ग धणुपहुत्तं, सव्वाणंगुल असंखभाग लहू ॥ विरहो विगला सन्नी, ण जम्म म
रणे सु अंत मुहू ॥२९८॥ गब्भे मुहुत्त बारस, गुरुउ लहु समय संखसुर तुल्ला ॥
अणुसमय मसंखिजा, एगिंदिय हुंतिय चवंति॥२९९॥वणकाइउ अणंता, इक्कि
क्काउ वि जं निगोयाउ॥ निच्चमसंखो भागो, अणंतजीवो चयइ एइ ॥ ३०० ॥
गोलाय असंखिजा, असंख निग्गोय उ हवइ गोलो ॥ इक्किक्कंमि निगोए, अ
णंत जीवा मुणेयव्वा ॥३०१॥ अत्थि अणंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणा
मो ॥ उप्पज्जंति चयंति य, पुणोवि तत्थेव तत्थेव॥३०२॥सव्वोवि किसलउ खलु,

उगाममाणो अणंतउं जणिउं॥सोचेव विवट्ठंतो,होइ परित्तो अणंतो वा॥३०३॥
जया मोहोदउं तिव्वो, अन्नाणं खु महब्भयं॥ पेमलं वेयणीयं तु, तया एगिंदियत्त
णं॥३०४॥तिरिएसु जंति संखा, उतिरिनराजाउ कप्पदेवाउं ॥ पज्जत्तसंख गब्भ
य, बायर जूदगपरित्तेसु ॥३०५॥ तो सहसारंत सुरा, निरया पज्जत्तसंखगब्भेसु॥
संखपणिंदिय तिरिया मरिउं चउसु वि गइसु जंति ॥३०६॥थावर विगला निय
मा, संखाउ य तिरि नरेसु गछंति ॥ विगला लभिज्जविरइं, सम्मंपि न तेउ वाउ
चुया॥३०७॥पुढवी दग परितवणा,बायर पज्जत्त हुंति चउलेसा॥गब्भय तिरि य
नराणं,छल्लेसा तिन्नि सेसाणं॥३०८॥अंतमुहुत्तंमि गए,अंतमुहुत्तंमि सेसए चेव॥
लेसाहिपरिणयाहिं,जीवावच्चंतिपरलोयं॥३०९॥ तिरिनरआगामि जवे, लेस्साए
अइ गए सुरा निरया॥पुव्वजव लेस्ससेसे,अंतमुहुत्ते मरणमिंति॥३१०॥अंतमुहु
त्तठिइउं,तिरिय नराणं हवंति लेस्साउं ॥ चरिमा नराण पुण नव, वासूणा पुव्व

कोडीवि ॥३११॥ तिरियाण वि ठिइपमुहं, भणिय मसेसंपि संपई वुच्छं॥ अभि
हिय दारब्भहियं, चउगइ जीवाण सामन्नं ॥३१२॥ देवा असंख नर तिरि, इत्थी
पुं वेय गब्भ नर तिरिया ॥ संखाउया तिवेया, नपुंसगा नारयाईया ॥ ३१३ ॥
आयंगुलेण वत्थुं, सरीरमुस्सेह अंगुलेण तहा ॥ नग पुढवि विमाणाई, मिण
सु पमाणंगुलेणं तु॥३१४॥सत्थेण सुतिक्खेण वि, छित्तुं भित्तुं च जं किर न सक्का॥
तं परमाणुं सिद्धा, वयंतिआइं पमाणाणं॥३१५॥परमाणू तसरेणू , रहरेणू वा
लअग्गलिक्खा य ॥ जूय जवो अठगुणो, कमेण उस्सेह अंगुलयं ॥३१६॥ अं
गुलछक्कं पाउ, सो दुगुण विहत्थि सा दुगुण हत्थो ॥चउहत्थं धणु दु सहस, को
सो ते जोयणं चउरो ॥३१७॥ चउसयगुणं पमाणं, गुलमुस्सेहंगुलाउ बोधव्वं ॥
उस्सेहंगुलदुगुणं, वीरस्सायंगुलं भणियं ॥ ३१८ ॥ पुढवाइसु पत्तेयं, सग व
णपत्तेय णंतदस चउद ॥ विगले दु दु सुर नारय, तिरि चउ चउ चउदस नरेसु

॥३१९॥ जोणीण हुंति लक्खा, सव्वे चुलसी इहेव घिप्पंति॥ समवन्नाईभेया, ए
गत्तेणेव सामन्ना ॥ ३२०॥ एगिंदिएसु पंचसु, बार सग तिसत्त अठवीसा य ॥
विगलेसु सत्त अड नव, जल खह चउपय उरग भुयगे ॥ ३२१ ॥ अद्धत्तेरस
बारस, दस दस नवगं नरामरे निरए ॥ बारस छवीस पणविस, हुंति कुले को
डि लक्खाइं ॥३२२॥ इग कोडि सत्तणवई, लक्खा सड्ढा कुलाण कोडीणं ॥ संवु
डजोणि सुरेगिंदि नारया वियड विगल गब्भु भया ॥३२३॥ अचित्त जोणि सु
रनिरय, मीसग्गब्भे तिभेय सेसाणं ॥ सी उसिण निरय सुर गब्भ, मीसत्ते उ
सिण सेस तिहा ॥३२४॥ हय गब्भ संखवत्ता, जोणी कुम्मुन्नयाइं जायंति ॥ अ
रिह हरि चक्कि रामा, वंसी पत्ताइ सेस नरा ॥३२५॥ आउस्स बंधकालो, अबा
ह कालो य अंत समए य॥ अपवत्तण णपवत्तण, उवक्कम णुवक्कमा भणिया॥३२६
बंधंति देव नारय, असंख नर तिरि छमास सेसाऊ ॥ परभविया ऊसेसा, नि

रुवक्कमतिन्नागसेसाउ ॥ ३२७ ॥ सोवक्कमा उया पुण, सेसतिन्नागे अहव नव मन्नागे ॥ सत्तावीस इमे वा, अंतमुहुत्तं तिमे वावि ॥३२८॥ जइमे न्नागे बंधो, आउस्स नवे अबाहकालो सो॥अंतेउजुगइ इग सम,य वक्क चउ पंच समयंता ॥३२९॥ उज्जु गइ पढम समए, परन्नवियं आउयं तहा हारो ॥ वक्काइ बीय स मए, परन्नवियाउं उदयमेई ॥३३०॥ इग ङु ति चउ वक्कासु, ङुगाइ समएसु प रन्नवाहारो ॥ ङुग वक्काइ सु समया, इग दो तिन्नी अणाहारा ॥३३१॥ बहुका ल वेयणिज्जं, कम्मं अप्पेण जमिह कालेणं॥वेइज्जइ जुगवंचिय, उइन्न सव्वप्पए सग्गं ॥ ३३२ ॥ अपवत्तणिज्जमेयं, आउं अहवा असेसकम्मंपि ॥ बंध समए वि बद्धं, सिढिलं चिय तं जहाजोगं ॥ ३३३ ॥ जं पुण गाढ निकायण, बंधेणं पुव्वमेव किल बद्धं ॥ तं होइ अणपवत्तण, जुग्गं कम वेयणिज्ज फलं ॥३३४॥ उत्तम चरम सरीरा, सुर नेरइया असंख नर तिरिया ॥ हुंति निरुवक्कमाउ, ङु

हावि सेसा मुणेयव्वा ॥३३५॥ जेणाउ मुवक्कमि जइ, अप्पसमुत्थेण इयर गेणा वि ॥ सो अज्जवसाणाई, उवक्कम णुवक्कमो इयरो॥३३६॥अज्जवसाण निमित्ते, आहारे वेयणा परागाए ॥ फासेआणापाणू, सत्तविहं झिज्जए आउं ॥३३७॥ आहार सरीरिंदिय, पज्जत्ती आणपाण भासमणे ॥ चउ पंच पंच छप्पिय, इग विगला सन्नि सन्नीणं ॥३३८॥ आहारसरीरिंदिय, ऊसास वउ मणोभिनिव्व त्ती ॥ होइ जओ दलियाऊ, करणं पइसाउ पज्जत्ती ॥३३९॥पण इंदिय तिबलू सा, साऊ दस पाण चउ छ सग अठ ॥ इग दु ति चउरिंदीणं, असन्नि सन्नी ण नव दस य॥३४०॥आहारे भय मेहुण, परिग्गाहा कोह माण माया य ॥ लो भे उहे लोगे, दस सन्ना हुंति सव्वेसिं ॥ ३४१ ॥ सुह दुह मोहा सन्ना, वितिगि छा चउदमा मुणेयव्वा ॥ सोए तह धम्म सणा, सोल समा हवइ मणुएसु ॥ ॥३४२॥ संखित्तासंघयणी, गुरुतर संघयणि मज्जओ एसा ॥ सिरि सिरि चंद मु

पिंडे, ण निम्मिया अप्प पढणठा ॥३४३॥ संखित्तयरी उ इमा, सरीरमोगोहणा य संघयणा ॥ सन्ना संठाण कसा, य लेसिंदिय ड समुग्घाया ॥ ३४४॥ दिठी दंसण नाणे, जोगु वउंगो ववाय चवण ठिई॥पज्जत्ति किमाहारे, सन्निगई रागई वेए॥३४५॥तिरिया मणुया काया, तह गाबीया चउक्कगा चउरो ॥ देवा नेरइया वा, अठारस जावरासीउ ॥३४६॥ एगा कोडी सत सठि, लक्का सतहुत्तरी सहस्साय ॥ दोय सया सोलहिया, आवलियाणं मुहुत्तंमि ॥३४७॥ पणसठि सहस पणसय, छत्तीसा इग मुहुत्त खुड्डभवा ॥ दोय सया छप्पन्ना, आवलिया एग खुड्डभवे ॥३४८॥ मलहारि हेमसूरि, ण सीसलेसेण विरइयं सम्मं ॥ संघयणि रयण मेयं, नंदउ जा वीरजिण तिठं ॥३४९॥ इतिश्रीत्रैलोक्यदीपिकानामसंग्रहणीसंपूर्णा ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॐश्रीजिनायनमः ॥ अथ श्रीरत्नशेखर सूरिकृत लघुक्षेत्रसमास प्रकरणं

लिख्यते॥वीरं जयसेहरपय, पइठियं पणमिऊण सुगुरुं च॥मंडत्ति ससरणठा, खित्तवियाराणु मुह्णमि ॥१॥ तिरि एगरज्जुखित्ते, असंखदीवो दहीउ ते सवे॥उ ध्धार पलियपणविस, कोमा कोडी समयतुल्ला ॥२॥ कुरुसग दिणाविअंगुल, रो मे सगवार विहिय अडखंडे ॥ बावन्नसयं सहसा, सगनवई वीस लरकाणू ॥ ॥३॥ ते थूला पल्लेविहु, संखिज्जा चेव हुंति सवेवि ॥ ते इक्किक असंखे, सुहमे खंडेपकप्पेह ॥ ४ ॥ सुहमाणु निचिय उस्से,हंगुलचउकोस पल्लि घणवट्टे॥पइस मय मणुग्गह निठियंमि उध्धारपल्लिउति ॥५॥पढमो जंबू बीउं, धायइसंडो य पुरकरो तइउं ॥ वारुणिवरो चउत्थो,खीरवरो पंचमो दीवो ॥६॥ घयवर दीवोछ ठो ॥ इरकुरसो सत्तमो य अठमउं ॥ नंदीसरो य अरुणो, नवमो इच्चाइअसं खिज्जा ॥७॥ सुपसह्वत्थुनामा, तिपडोयारा तहा रुणाईया ॥ इगनामेवि असं खा, जाव य सूरावन्ना सुत्ति ॥८॥ तत्तो देवे नागे, जरके नूए सयंजुरमणे य ॥

एए पंच वि दीवा, इगेगनामा मुणेयव्वा ॥९॥ पढमे लवणो बीये, कालोदहि से सएसु सव्वेसु ॥ दीवसम नामया जा, सयंभुरमणो दहीचरमो ॥१०॥ बीउ तइउ चरमो, उदगरसा पढमचउथ पंचमगा ॥ छठोवि सनामरसा, इरकुरसामेस जलनिहिणो ॥११॥ जंबूदीवपमाणं, गुलजोयणलरकवट्ट विरकंभो ॥ लवणाईया सेसा, वलयाभा डुगुणडुगुणा य ॥ १२॥ वयरामईहि निय निय, दीवोदहि मज्जिगणियमूलाहिं, अछुच्चाहिं बारस, चउमूले उवरि रुंदाहिं ॥१३॥ विछारडुग विसेसो, उस्सेहि विभत्तु खउ चउ होइ ॥ इय चूलागिरि कूमा, इ तुल्ल विरकंभ करणाहिं ॥१४॥ गाउडु गुच्चाइ तय, ठभाग रुंदाइ पउमवेइए ॥ देसूणडु जोयणवर, वणाहि परिमंभिय सिराहिं ॥१५॥ वेईसमेण महया, घवरक कडएण संपरित्ताहिं ॥ अछारसूणचउभ, त्त परिहिदारं तराहिं च ॥१६॥ अछुच्च चउसु विछर, डुपाससक्कोस कुट्टदाराहिं ॥ पुव्वाइ महछ्वियदे, व दारविजयाइ ना

माहिं ॥ १७ ॥ नाणामणिमयदेहलि, कवाड परिघाइ दार सोहाहिं ॥ जगईहिं ते सव्वे, दीवोदहिणो परिक्खित्ता ॥ १८ ॥ वरतिण तोरण झयछ,त्तवाविपासाय सेलसिलवट्टे ॥ वेइवणे वरमंम्व, गिहा सणेसु रमंति सुरा ॥१९॥ इह अहिगा रो जेसिं, सुराण देवीण ताण मुप्पत्ति ॥ नियदीवोदहिं नामे, अस्संखइमे स नयरीसु ॥ २०॥ जंबुद्दीवो छहि कुल,गिरीहि सत्ताहिं तहेव वासेहिं ॥ पुव्वावरदी हेहिं, परिछिन्नो ते इमे कमसो ॥ २१॥ हिमवं सिहरी महहिम, रुप्पी निसढो य नीलवंतो य ॥ बाहिरउ ५ ५ गिरिणो, उभउ विसवेइया सव्वे ॥ २२ ॥भरहेरव यत्ति ५गं, ५गं च हेमवयरमवयरूवं ॥ हरिवासरम्मयडुगं, मज्जि विदेहुत्ति सग वासा॥२३॥दो दीहा चउ वट्टा, वेयड्ढा खित्तछक्कमज्झंमि॥ मेरूविदेहमज्झे, पमाण मित्तोकुलगिरीणं ॥ २४ ॥ इग दो चउ सय उच्चा, कणगमया कणगरायया कम सो ॥ तवणिज्ज सुवेरुलिया, बहि मज्झब्भिंतरा दो दो ॥ २५ ॥ ५ग अड ५तीस

अंका, लरकगुणा कमिण नउयसयनइया ॥ मूलोवरि समरूवं, विन्नारं बिंति जुयलतिगे ॥ २६ ॥ बावत्तरिउ सहसो, बारकला बाहिराण विन्नारो ॥ मश्निमगाण दसुत्तर, बायालसया दस कला य ॥ २७ ॥ अप्निंतराण उकला, सोलसहस्स डसया सबायाला ॥ चउचत्त सहस दोसय, दसुत्तरा दसकला सव्वे ॥ २८ ॥ इग चउ सोलस अंका, पुव्वत्तविहीइ खित्तजुयलतिगे ॥ विन्नारं बिंति तहा, चउसठिं को विदेहस्स ॥ २९ ॥ पंचसया उव्वीसा, उच्च कलापढमखित्तजुयलम्मि, बीए इगवीससया, पणुत्तरा पंच य कला य ॥ ३० ॥ चुलसीसय इगवीसा, इक्ककला तइयगे विदेहि पुणो ॥ तित्तीससहस उस्सय, चुलसीया तह कला चउरो ॥ ॥ ३१ ॥ पणपन्नसहससग सय, गुणनउया नव कला सयलवासा ॥ गिरिखित्तं कसमासे, जोयण लरकं हवइ पुन्नं ॥ ३२ ॥ पन्नास सुन्न बाहिर, खित्ते दलियम्मि उ सय अडतीसा ॥ तिन्नि य कला य एसो, खंमचउक्कस्स विरकंनो ॥ ३३ ॥

॥ ३६ ॥

गिरिउवरि सवेइदहा,गिरिउच्चत्ताउ दसगुणा दीहा ॥ दीहत्ति अद्धरुंदा, सव्वे द
सजोयणुव्वेहा ॥३४॥ बहि पउमपुंडरीया, मज्झे ते चेव हुंति महपुव्वा ॥ ते गिछि
केसरीया,अभिंतरिया कमेणेसु॥३५॥सिरि लच्छी हिरि बुद्धी, धी कित्ती नामिया
उ देवीउ ॥ भवणवईउ पलिउ, वमाउ वरकमलनिलयाउ ॥३६॥ जलुवरि को
सदुगुच्चं, दहविछरपणासयंसविछारं ॥ बाहिल्लविछरद्धं, कमलं देवीण मूलि
ल्लं ॥ ३७ ॥ मूले कंदे नाले, तं वयरारिठवेरुलियरूवं ॥ जंवूणयमज्झतवणि,
जाबहिदलं रत्तकेसरयं ॥ ३८ ॥ कमलद्ध पायपिहुलु, च्च कणगमयकणिगोवरिं
भवणं ॥ अद्धेग कोसपिहु दी, ह चउदसय चाल धणुहुच्चं ॥३९॥ पछिमदिसि
विणुधणु पण, सउच्च ढाइज सयप्पिहु पवेसं ॥ दारतिगं इह भवणे, मज्झे दहदे
वि सयणिज्जं ॥४०॥ तं मूल कमलमद्ध, प्पमाण कमलाण अडहियसएणं ॥ प
रिखित्तं तब्भवणे, सुभूसणाईणि देवीणं॥४१॥मूलपउमाउ पुव्विं, महयरियाणं च

उवह चउपउमा ॥ अवराइ सत्त पउमा, अणिया हिवईण सत्तण्हं ॥४२॥ वाय
व्वाइसु तिसु सिरि, सामन्नसुराण चउ सहस पउमा ॥ अठ दस बारसहस्सा,
अग्गेयाइसु तिपरिसाणं ॥४३॥ इय वीयपरिक्खेवो, तइए चउसु वि दिसासु दे
वीणं ॥ चउ चउ पउमसहस्सा, सोलसहस्साय रक्खाणं ॥ ४४ ॥ अभिउगाइ
तिवलए, छत्तीस चत्ताडयाललक्खाइं ॥ इगकोडि वीस लक्खा, पन्नाससहस्स
वीससयं ॥ ४५ ॥ पुव्वावरमेरुमुहं, दुसु दार तिगंपि सदिसि दहमाणा ॥
असीइभागपमाणं, सतोरणं निग्गयनईयं ॥४६॥ जामुत्तरदारदुगं, सेसेसु दहे
सु ताण मेरुमुहा ॥ सदिसि दहासिय भागा, तयद्धमाणा य बाहिरिया ॥४७॥
गंगा सिंधू रत्ता,रत्तवई बाहिरं नइचउक्कं॥बहि दहपुव्वावरदार, विभरं वहइ गि
रिसिहरे ॥४८॥ पंचसय गंतु नियगा, वत्तणकूमाउ बहिमुहं वलई ॥ पणसय
तेवीसेहिं, साहियतिकलाहिं सिहराउ ॥ ४९ ॥ निवडइ मगरमुहोवम, वयराम

यजिण्णियाहि वयरतले ॥ नियगे निवायकुंभे, मुत्तावलिसमप्पवाहेण ॥५०॥दह दारविछराउ, विछरपसास जागजछाउ ॥ जछत्ताउ चउगुण, दीहाउ सवजिण्णी उ ॥५१॥ कुंभंतो अडजोयण, पिहुलो जलउवरि कोसछगमुच्चो ॥ वेइजुउ नइ देवी, दीवो दहदेविसमजवणो ॥ ५२ ॥ जोयणसछिपिहुत्ता, सवायछप्पिहुल वेइतिछवारा ॥ एए दसुंभ कुंभा,एवं अन्ने वि नवरं ते ॥५३॥ एसिं विछारतिगं, पडुच्च सम छगुण चउगुणछगुणा ॥ चउसछि सोल चउ दो, कुंभा सव्वेवि इह नवई ॥५४॥ एयं च नइचउक्कं, कुंडाउ बहिछवार परिवूढं ॥ सगसहस नइसमेयं, वेयछगिरिप्प जिंदेई ॥५५॥ तत्तो बाहिर खित्त, ऌ मच्चउ वलइ पुव्वअवरमुहं ॥ नइसत्तसहससहियं, जगइतलेणं उदहिमेइ ॥ ५६॥ धुरि कुंडछवारसमा, पज्जंते दसगुणा य पिहुलत्ते ॥ संव्वछ महनईउ, विछरपसासजागुंडा ॥५७॥ प ण खित्तमहनईउ, सदारदिसि दहविसुछगिरिअछं ॥ गंतूणसजिण्णीहिं, निय

नियकुंडेसु निवडंति ॥५७॥ नियजिब्भियपिहुलत्ता, पणवीसंसेणमुत्तमद्यगिरिं ॥ जाममुहा पुव्वुदहिं, इयरा अवरोयहिमुविंति ॥ ५९ ॥ हेमवइ रोहियंसा, रोहीया गंगडुगुणपरिवारा ॥ एरन्नवय सुवन्न, रुप्पकुलाउ ताण समा ॥ ६० ॥ हरिवासे हरिकंता,हरिसलिला गंगचउगुणनईया ॥ एसि समा रम्मवए, नरकंता नारिकंता य ॥६१॥ सीउंया सीयाउ, महाविदेहम्मि तासु पत्तेयं ॥ निवडइ पणलक्ख, डुतीस सहस अडतीस नइसलिलं ॥ ६२ ॥ कुरुनइ चुलसीसहसा, छच्चे वंतरनईउ पइविजयं ॥ दो दो महानईउ, चउदस सहसाउ पत्तेयं ॥६३॥ अडसयरि महानईउ, बारस अंतरनईउ सेसाउ ॥ परियरनईउ चउदस, लक्का छप्पन्न सहसा य ॥६४॥ एगारड नवकूडा, कुलगिरि जुयलत्तिगे वि पत्तेयं ॥ इय छप्पन्ना चउ चउ, वक्खारेसुत्ति चउसठी॥६५॥सोमणसि गंधमायणि, सग सग विज्जुपज्जिमालवंति पुणो ॥ अठठ सयलतीसं, अडनंदणि अठ करि

कूडा ॥६६॥ इय पणसउच्च गास,।० सउ कुम्भ तेसु दीहर गिरीणं ॥ पुव्वनइमेरु
दिसिअं, त सिद्धकूम्हेसु जिणभवणा ॥६७॥ ते सिरिगिहाउ दो सय, गुणप्पमा
णा तहेव तिडवारा ॥ नवरं अडवीसाहिय, सयगुण दारप्पमाणमिह ॥६८॥ प
णवीसं कोससयं, समचउरसविडडा डगुणमुच्चा ॥ पासाया कूम्हेसु, पणसयउ
च्चेसु सेसेसु ॥६९॥ बल हरिसह हरिकूडा, नंदनवणि मालवंति विज्जुपभे ॥ ई
साणुत्तरदाहिण, दिसासु सहसुच्चकणगमया ॥७०॥ वेयड्ढेसु वि नव नव, कूडा
पणवीसकोसउच्चा ते ॥ सव्वे तिसय छडुत्तर, एसु वि पुव्वंति जिणकूम्हा ॥७१॥
ताणुवरि चेइहरा, दहदेवी भवणतुल्लपरिमाणा ॥ सेसेसु य पासाया, अधेग
कोसं पिहुच्चत्ते ॥७२॥ गिरिकरिकूडा उच्च,त्तणाउ सम अद्धमूलुवरि रुंदा॥रयण
मया नवरिविय,ड्ढ मज्झिमा ति त्ति कणगरुवा॥७३॥जंबूणयरययमया,जगइसमा
जंबुसामलीकूम्हा ॥ अठठ तेसुदहदे, वि गिहसमा चारुचेइहरा ॥७४॥ तेसि स

मोसहकूडा, चउतीसं चुल्लकुंडजुयलंतो ॥ जंबूण एसु तेसु य, वेयड्ढेसुव्व पासा
या ॥७५॥ पंचसए पणवीसे, कूडा सव्वे वि जंबुदीवंमि ॥ ते पत्तेयं वरवण,जुया
हि वेइहि परिक्खित्ता ॥७६॥ छ सयरि कूडेसु तहा, चूलाचउवणतरूसु जिणभ
वणा ॥ भणिया जंबूदीवे, सदेवया सेस ठाणेसु ॥७७॥ करिकूड कुंड नइ दह,कु
रुकंचण जमलसमवियड्ढेसु ॥ जिणभवणविसंवाओ, जो तं जाणंति गीयत्था
॥७८॥ पुव्वावरजलहिंता, दसुच्च दसपिहुल मेहलचउक्का ॥ पणवीसुच्चा पन्ना,
स तीस दसजोयणपिहुत्ता ॥७९॥ वेइहिपरिक्खित्ता, सखयरपुर पन्नसट्ठिसेणि
दुगा ॥ सदिसिंदलोगपालो, वन्नोगउवरिल्लमेहलया ॥ ८० ॥ दु दु खंभविहिय
भरहे, खया दु दु गुरु गुहा य रुप्पमया ॥ दो दीहा वेयड्ढा, तहा दुतीसं च वि
जयेसु ॥८१॥ नवरं ते विजयंता, सखयरपणपन्नपुरदुसेणीया ॥ एवं खयरपुरा
इं, सगतीस सयाइ चालाइं ॥८२॥ गिरि विवर दीहाउ, अद्धुच्च चउ पिहुपवे

सदाराउ ॥ बारस पिहुलाउ अट्ठ,च्च याउ वेयड्ढ दुउगुहाउ ॥८३॥ तंमझि दु जोयणअं, तराउ ति ति विछराउ डुनईउ ॥ उम्मग्गनिमग्गाउ, कडगाउ महानइ गयाउ ॥८४॥ इह पइनिंत्तिं गुणव,ख मंम्ले लिहइ चक्किड्डुसमुहे ॥ पणसय धणुहपमाणे, बारेगडजोयणुज्जोए ॥८५॥सा तिमिस गुहा जीए, चक्की पविसेइ मझखंडंतो ॥ उसहं अंकिय सो जी,इ वलइ सा खंडगपवाया ॥ ८६॥ कयमाल नट्टमालय, सुराउ वट्ठइ निबन्धसलिलाउ ॥ जा चक्की ता चिठइ, ताउ उग्घमि य दाराउ ॥ ८७ ॥ बहिखंम्मंतो बारस, दीहा नव विछडा अउझपुरी ॥ सा लवणावेयड्ढा, चउदहियसयं चिगारकला ॥८८॥ चक्किवसनइपवेसे, तिछ्डुगं माग हो पन्नासो य ॥ ताणंतो वरदामो,इह सब्वे बिडुत्तरसयंति ॥८९॥ भरहेरवए छ छ अर,मयवसप्पिणीउसप्पिणीरूवं ॥ परिभ्नमइ कालचक्कं,डुवालसारं सया विकमा ॥९०॥ सुसमसुसमा य सुसमा, सूसमडुसमाय डुसमसुसमाय ॥ डुसमा य

डसमडसमा,कमुक्कमा डसु वि अरकं ॥ ९१॥ पुव्वुत्तपल्लिसमसय, अणुगहणा निठिए हवइ पलिर्ज ॥ दस कोडिकोडिपल्लिए,हिं सागरो होइ कालस्स ॥ ९२॥ सागरचउतिड कोडा, कोमिमिए अरतिगे नराण कमा ॥ आऊ तिडइगपलिया, तिडइगकोसा तणुच्चत्तं ॥९३॥ तिडइगदिणेहि तूअरि, वयरामलमित्तमेसिमाहारो ॥ पिठकरंमा दोसय, ठप्पन्ना तद्दलं च दलं ॥९४॥ गुणवणदिणे तह पनर, पन्नरअहिया अवच्चपालणया ॥ अवि सयलजिया जुयला, सुमणसरूवा सुरगईया ॥९५॥ तेसि मत्तंग भिंगा, तुडियंगा जोइ दीवचित्तंगा ॥ चित्तरसा मणियंगा, गेहागारा अणिययस्का ॥ ९६॥ पाणं भायण पिन्नण, रविपह दीवपह कुसुममाहारो ॥ भूसण गिह वन्नासण, कप्पडुमा दसविहा दिंति ॥ ९७ ॥ मणुआउसमगयाई, चयाइ चउरंस जाइ अठंसा ॥ गोमहिसुट्टखराई, पणंससाणाइ दसमंसा ॥९८॥ इच्चाइ तिरच्चाण वि, पायं संवारएसु सारिच्छं ॥ तइया

रसेस कुलगर, नयजिणधम्माइउप्पत्ती ॥९९॥ कालदुगे तिचउक्का,रगेसु एगूण

नवइपक्खेसु ॥ सेसगएसु य सिद्धं,ति हुंति पढमंतिमजिणिंदा ॥१००॥ बायाल

सहस वरसू, णिगकोडाकोडिअयरमाणाए ॥ तुरिए नराउपुव्वा, ण कोडितणु

कोसचउरंसं ॥१०१॥ वरिसेगवीससहस, प्पमाण पंचमरए सगकरुच्चा ॥ तीस

हियसयाउ नरा, तयंतधम्माइयाणंतो ॥१०२॥ सुयसूरिसंघधम्मो,पुव्वण्हे छिज्जि

ही अगणि सायं ॥ निव विमलवाहणो सुह,ममंति तद्धम्म मज्झण्हे॥१०३॥ खा

रग्गिविसाईहिं, हाहाभूया कयाइ पुहवीए ॥ खगबीय वियाड्ढाइ सु, नराइबीयं

बिलाईसु ॥१०४॥ बहुमच्छचक्कवहनइ, चउक्कपासेसु नव नव बिलाइं ॥ वेयड्ढो

भयपासे, चउयालसयं बिलाणेवं ॥ १०५ ॥ पंचमसमछठारे, डुकरुच्चा वीसव

रिसआउ नरा ॥ मच्छासिणो कुरूवा, कूरा बिलवासि कुगइगमा ॥१०६॥ निल्ल

ज्जा निव्वसणा, खरवयणा पियसुयाइठिइरहिया ॥ थीउ छवरिसगब्भा, अइदु

हपसवा बहुसुया य ॥१०७॥ इय अरछक्केण वस,प्पिणित्ति उस्सप्पिणी वि विव
रीया ॥ वीसं सागरकोमा, कोमीउ कालचक्कंमि ॥ १०८ ॥ कुरुडगि हरिरम्मयडु
गि, हेमवएरमवयडुगि विदेहे ॥ कमसो सया वसप्पिणि, अरयचउक्काइसम
कालो ॥१०९॥ हेमवएरमवए, हरिवासे रम्मए य रयणमया ॥ सद्दावइ विह
डावइ, गंधावइ मालवंतक्का ॥११०॥ चउ वट्टवियट्ठा सा,इ अरुण पउम प्पन्ना
स सुरवासा ॥ मूलुवरि पिहुत्ते तह,उच्चत्ते जोयणं सहसं ॥१११॥ मेरू वट्टो स
हस्स, कंदो लक्खूसिउ सहस उवरिं ॥ दसगुण भुवि तं सनवइ, दसिगारंसं
पिहुलमूले ॥११२॥ पुढवुवल वयर सक्कर, मयकंदो उवरि जाव सोमणसं ॥
फलिहंक रयय कंचण, मउ य जंबूणउ सेसो ॥११३॥ तडुवरि चालीसुच्चा, व
ट्टा मूलुवरि बार चउ पिहुला ॥ वेलुरिया वरचूला, सिरिभवणपमाण चेइहरा
॥११४॥ चूलातलाउ चउसय, चउणउए वलयरूवविक्खंभं ॥ बहुजलकुंमं पं

म्ग,वणं च सिहरे सयेईयं ॥११५॥ पन्नासजोयणेहिं, चूलाउ चउदिसासु जि णन्नवणा ॥ सविदिसि सक्कीसाणं, चउवाविजुया य पासाया ॥११६॥ कुलगिरि चेइहराणं, पासायाणं चिमे समहगुणा ॥ पणवीस रुंद उगुणा,यामाउ इमाउ वावीउ ॥११७॥ जिणहर बहिदिसि जोयण, पणसय दीहद्धपिहुल चउउच्चा ॥ अद्धससिसमा चउरो, सियकणगसिला सवेईया ॥११८॥ सिलमाणह सहस्सं, समाणसींहासणेहि दोहिं जुया ॥ सिलपंडु कंबलार, त्तकंबलापुव्वपच्छिमउ ॥ ॥११९॥ जामुत्तराउ ताउ, इगेगसींहासणाउ अइपुव्वं ॥ चउसु वि तासु निया सण,दिसिन्नवजिणमज्जणं होई ॥१२०॥ सिहरा छत्तीसेहिं, सहसेहिं मेहलाइ पंचसए ॥ पिहुलं सोमण सवणं, सिलविणु पंडगवणसरिछं ॥१२१॥ तब्बाहि रि विक्खंन्नो, बायालसयाहि उसय रिजुयाइं ॥ अहेगारसन्नागा, मद्धे तं च्चेव सहसूणं ॥१२२॥ तत्तो सहुडसही, सहसेहिं नंदणंपि तह चेव ॥ नवरि न्नव

णपासायं, तरुदिसि कुमरि कूडा वि ॥ १७३ ॥ नवसहस नवसयाइं, चउपन्ना छच्चिगारभागा य ॥ नंदणबहिविक्खंभो, सहसूणो होइ मज्झंमि ॥१७४॥ तदहो पंच सएहिं, महियलि तह चेव भद्दसालवणं ॥ नवरंमिह दिग्गयच्चिय, कूडा वणविछरं तु इमं ॥१७५॥ बावीससहस्साइं,मेरूउ पुव्वउ य पछिमउ ॥ तं चासीविहत्तं, वणमाणं दाहिणुत्तरउ ॥१७६॥ छवीस सहस चउसय, पणहत्तरि गं तु कुरुनइपवाया ॥ उभउ विनिग्गया गय,दंता मेरुम्मुहा चउरो ॥ १७७ ॥ अग्गेयाइसु पयाहि, णेण दिसासु सियरत्त पियनीला ॥ भासोमणस विज्जुपह, गंधमायण मालवंतक्खा ॥१७८॥ अहलोगवासिणीउ, दिसाकुमारीउ अठ एएसि ॥ गयदंतगिरिवराणं, हिठा चिठंति भवणेसु ॥१७९॥ धुरि अंते चउ पण सय, उच्च त्ति पिहुत्ति पणसया सिसमा ॥ दीहत्ति इमे छकला, दुसयनवुत्तरस हसतीसं ॥१८०॥ ताणं तो देवुत्तर, कुराउ चंदद्धसंठियाउ दुवे ॥ दससहस वि

सुरूमहा, विदेहदलमाणपिहुलाउ॥ १३१॥ नइपुवावरकूले, कणगमया बल स
मा गिरी दो दो ॥ उत्तरकुराउ जमगा, विचित्तचित्ता य इयरीए ॥१३२॥ नइव
ह दीहा पण पण, हरया डुडुदारया इमे कमसो ॥ निसहो तह देवकुरू, सूरो
सुलसो य विज्जुपहो॥१३३॥तह नीलवंत उत्तर, कुरु चंदे रवय मालवंतो त्ति ॥
पउमदहसमा नवरं, एएसु सुरा दहसमाना ॥ १३४ ॥ अडसय चउतीस जोय,
णाइं तह सेगसत्तभागाउ॥इक्कारसय कलाउ,गिरिजमलदहाणमंतरयं ॥१३५॥
दहपुवावर दसजो, यणेहि दस दस वियड्ढकूडाणं ॥ सोलसगुणप्पमाणा, कंच
णगिरिणो डुसय सवे ॥ १३६॥ उत्तरकुरुपुवद्धे, जंबूणयजंबुपीढमंतेसु ॥ कोस
डुगुच्चं कमि व,ड्ढमाण चउवीसगुण मझे ॥१३७॥ पणसयवट्टपिहुत्तं, तं परिखि
त्तं च पउमवेईए ॥ गाउ डुगेगुच्चपिहु,त चारुचउदारकलियाए॥१३८॥ तं मझे
अडविच्छर, चउच्च मणिपीढियाइ जंबुतरू ॥ मूले कंदे खंधे, वरवयरारिठवेरु

विउं ॥१३९॥ तस्स य साह पसाहा, दला य विंटा य पल्लवा कमसो ॥ सोव
ण्णजायरूवा, वेरुलितवणिज्जजंबुणया ॥ १४० ॥ सो रययमयपवालो, राययवि
डिमो य रयणपुप्फफलो ॥ कोसडुगं उव्वेहो, थुम्हसाहा विडिमविक्खंभो ॥१४१॥
थुडसाहवडिमदीह, त्ति गाउए अढ पनर चउवीसं ॥ साहा सिरिसमभवणा,
तम्माणस चेइयं वम्मिं ॥१४२॥ पुव्विल्लि सिज्ज तिसुआ, सणाणि भवणेसु णा
ढियसुरस्स ॥ सा जंबू बारसवे,इयाहि कमसो परिक्खित्ता ॥१४३॥ दहपउमाणं
जं वि,ब्भरं तुतमिहावि जंबुरुक्खाणं ॥ नवरं महयरियाणं, ठाणे इह अग्गमहि
सीउं ॥१४४॥ कोस डुसएहि जंबू, चउद्दिसिं पुव्वसालसमभवणा ॥ विदिसासु
सेस तिसमा, चउवाविजुया य पासाया ॥ १४५ ॥ ताणंतरेसु अड जिण, कूडा
तह सुरकुराइ अवरद्धे॥रययपीढे सामलि,रुक्खो एमेव गरुलस्स ॥ १४६ ॥ ब
त्तीस सोल बारस, विजया व[illegible]र अंतर नईउं ॥ मेरुवणाउ पुव्वा, वरासुकुल

गिरिमह नयंता ॥१४७॥ विजयाण पिहुत्ति सग, छन्नाग बारुत्तरा छवीस सया ॥ सेलाणं पंचसए, सवेइ नइ पणवीससयं ॥ १४८ ॥ सोलससहस्स पणसय, बाणउया तह य दो कलाउ य ॥ एएसिं सव्वेसिं, आयामो वणमुहाणं च॥१४९॥ गयदंतगिरिचउक्का, वक्खारा ताणमंतरनईणं ॥ विजयाणं च विहाणा, इ मालवं ता पयाहिणाउ ॥१५०॥ चित्ते य बंभकूडे, नलिणीकूडे य एगसेले य ॥ तिउडे वेसमणे वि य, अंजण मायंजणे चेव ॥ १५१॥ अंकावइ पम्हावइ, आसीविस तह सुहावहे चंदे ॥ सूरे नागे देवे, सोलस वक्खारगिरिनामा ॥ १५२ ॥ गाहाव इ दाहावइ, वेगवई तत्त मत्त उम्मत्ता ॥ खीरोय सीयसोया, तह अंतोवाहि णी चेव ॥१५३॥ उम्मीमालिणि गंभी,रमालिणी फेणमालिणी चेव ॥ सव्वछवि दसजोयण, उंडाकुंडुब्भवा एया ॥१५४॥कच्छो सुकच्छो य महा, कच्छो कच्छावई त हा ॥ आवत्तो मंगलावत्तो, पुक्खलो पुक्खलावई ॥१५५॥ वच्छो सुवच्छो य महा,

वच्छो वच्छावई विया ॥ रम्मो य रम्मउ चेव,रमणी मंगलावई॥१५६॥पम्हो सुप म्हो य महा, पम्हो पम्हावई तहा ॥ संखो नलिणनामा य, कुमुदो नलिणाव ई ॥१५७॥ वप्पो सुवप्पो य महा,वप्पो वप्पावईविय ॥ वग्गू तहा सुवग्गू य,गं धिलो गंधिलावई ॥ १५८॥ एए पुव्वावरगय, वियड्ढदलियत्तिनइ दिसिदलेसु ॥ नरऌपुरीसमाउ, इमेहिं नामेहिं नयरीउ ॥ १५९ ॥ खेमा खेमपुरा विय, रिठा रिठावई य नायव्वा ॥ खग्गी मंजूसा विय, उसहपुरी पुंमरिगिणी य ॥ १६० ॥ सुसीमा कुंमला चेव, वराइ य पहंकरा ॥ अंकावइ पम्हावइ, सुभा रयणसं चया ॥१६१॥ आसपुरा सीहपुरा, महापुरा तह य चेव विजयपुरा ॥ अवरा इया य अवरा, असोग तह य वीयसोगा य ॥१६२॥ विजया य वेजयंती, ज यंति अपराजिया य बोधव्वा ॥ चक्कपुरा खग्गपुरा, होइ अवज्झा अउज्झा य ॥ ॥१६३॥ कुंमुब्भवा उ गंगा,सिंधूउ कच्छपम्हपमुहेसु ॥ अठठएसु विजये,सु सेसे

सु रत्त रत्तवई ॥१६४॥ अविवक्खिऊण जगई, सवेइवणमुहचउक्कपिहुलत्तं॥गु
णतीससय छवीसा,न इंति गिरिअंति एगकला ॥१६५॥ पणतीससहस चउस
य, छडुत्तरा सयलविजयविक्खंभो ॥ वणमुह छग विक्खंभो, अडवन्नसया य च
उआला ॥१६६॥ सगसय पन्नासा नइ,पिहुत्ति चउवण सहस मेरुवणे ॥ गिरि
विछर चउसहसा, सब्बसमासो हवइ लक्खं ॥१६७॥ जोयण सयदसगंते, सम
धरणीउ अहो अहो गामा ॥ बायालीससहसेहिं,गंतुं मेरुस्स पछिमउ ॥१६८॥
चउ चउतीसं च जिणा, जहन्नमुक्कोसउ य हुंति कमा ॥ हरिचक्किबला चउरो,
तीसं पत्तेयमिह दीवे ॥१६९॥ ससिदुग रविदुग चारो, इह दीवे तेसिं चारखि
त्तं तु ॥ पणसय दसुत्तराइं, इगसठिभागा य अडयाला ॥ १७०॥ पनरस चुल
सीइसयं, छप्पन्न डयालभागमाणाइं ॥ ससिसूरमंडलाइं, तयंतराणि गिगहीणा
इं ॥१७१॥ पणतीस जोयणे भा,ग तीस चउरो य भाग सगभाया ॥ अंतरमा

णं ससिणो, रविणो पुण जोयणे दुन्नि ॥१७२॥ दीवंतो असियसए, पण पणस
ट्ठी य मंडला तेसिं ॥ तीसहिय तिसय लवणे, दस गुणवीसं सयं कमसो ॥
॥१७३॥ ससि ससि रवि रवि अंतरि, मज्झे इगलक्खु तिसयसाठूणो ॥ साहिय
दुसयरि पणचय, बहिलक्खो छसय साठहिउ ॥१७४॥ साहियपणसहस तिहु,
त्तराइ ससिणो मुहुत्तगइ मज्झे ॥ बावन्नहिया सा बहि, पढमंक्खण पउणचउवुड्ढी
॥१७५॥ जा ससिणो सा रविणो, अडसयरिसिएण सीसएण हिया ॥ किंचूणा
णं अट्ठा, रसट्ठिभागाणमिह वुड्ढी ॥१७६॥ मज्झे उदयंतरि, चउणवइसहस्स
पणसय छवीसा ॥ बायालसट्ठिभागा, दिणं च अट्ठारसमुहुत्तं ॥ १७७ ॥ पढमं
क्ख दिणहाणी, दुगहमुहुत्तेगसट्ठिभागाणं ॥ अंते बारमुहुत्तं, दिणं निसा तस्स
विवरीया ॥१७८॥ उदयंतरि बाहिं, सहसा तेसट्ठि छ सय तेसट्ठि ॥ तह इग
ससिपरिवारो, रिक्खडू वीसाडसीइ गहा ॥ १७९ ॥ छसट्ठिसहस नवसय, पण

हत्तरी तारकोडिकोडीणं ॥ समंतरेणमुस्से,हंगुलमाणेण वा हुंति ॥१८०॥ गह
रिक्ख तारगाणं, संखं ससिसंखसंगुणं काउं ॥ इच्छियदीवुदहिंमिय, गहाइमाणं
वियाणिज्जा ॥१८१॥ चउ चउ बारस बारस, लवणे तह धाइयंमि ससि सूरा ॥
परउदहिदीवेसु य, तिगुणा पुविल्लसंजुत्ता ॥१८२॥ नरखित्तं जा समसे, णिचा
रिणो सिग्घसिग्घतरगइणो ॥ दिट्ठिपहमिंति खित्ता,णुमाणउ ते नराण जहा ॥
॥१८३॥ पणसय सत्तत्तीसा, चउतीससहस्स लक्ख इगवीसा ॥ पुक्खरदीवड्ढन
रा, पुव्वेण वरेण पिच्छंति ॥१८४॥ नरखित्तवहिं ससिरवि, संखाकरणंतरेहि वा
होई ॥ तह तह य जोइसिया, अचलद्धपमाणसु विमाणा ॥१८५॥ जंबूपरिहि
तिलक्खा, सोलसहस दुसय पउणअडवीसा ॥ धणुअट्ठवीस सयंगुल, तेरसस
ड्ढासमहिया य ॥ १८६ ॥ सगसय नउया कोडी,लक्खा छप्पस चउणवइ सहस्सा
॥ सड्ढसयं पउणदुको, स सढवासट्ठि करगणियं ॥१८७॥ पट्टपरिहिं [illegible] गणियं,

अंतिमखंडाइ उसुजियं च धणुं ॥ बाहं पयरं च घणं, गणियव्वममेहि करणेहिं ॥१८८॥ विक्खंभवग्गदहगुण,मूलं वट्टस्स परिरउ होई ॥ विक्खंभपाय गुणिउ, परिरउ तस्स गणीयपयं ॥ १८९ ॥ उगाहु उसूसु च्चिय, उगणीसगुणो उसूक ला होई ॥ विउसुपिहुत्ते चउगुण, इसुगुणिए मूलमिह जीवा ॥ १९० ॥ उसुव ग्गि छगुणजीवा, वग्गजुए मूल होइ धणुपिठं ॥ धणुडुगविसेससेसं, दलियं बाहाडुगं होई ॥१९१॥ अंतिमखंडस्सुसुणा,जीवं संगुणि य चउहि भइऊणं ॥ लद्धंमि वग्गिए दस,गुणंमि मूलं हवइ पयरो ॥ १९२॥ जीवा वग्गेण डुगे, मि लिए दलिए य होइ जं मूलं ॥ वेयड्ढाईण तयं, सपिहुत्तगुणं हवइ पयरो ॥ ॥१९३॥ एयं च पयरगुणियं, संववहारेण देसियं तेण ॥ किंचूणं होइ फलं,अ इहंपि हवइ सुहुमगणणा ॥ १९४ ॥ पयरो सोस्सेहगुणो, होइ घणोपरिरयाइ सव्वं वा ॥ करणगणणालसेहिं, जंतगलहियाउ दठव्वं ॥ १९५ ॥ इति श्री लघु

क्षेत्रसमासे प्रथम जंबूद्वीपाधिकारः समाप्तः ॥ दीवोलवणसमुद्दाहिगारो भणइ
॥ गोतित्थं लवणोभय, जोयण पणनवइ सहस जा तह ॥ समभूतलाउ सग
सय, जलवुड्ढी सहसमो गाढो ॥ १९६ ॥ तेरासिएण मज्झि, इच्छ रासिणा संगुणि
ज अंतिमगं ॥ तं पढमरासिभइयं, उव्वेहं मुणसु लवणजले ॥१९७ ॥ दहुवरि
सहसदसगं, पिहुलामूलाउ सतरसहसुच्चा ॥ लवणसिहा सा तदुवरि, गाउद्
गं वड्ढइ दुवेलं ॥१९८॥ बहुमज्झे चउदिसि चउ, पायाला वयरकलससंठाणा ॥
जोयणसहस्स जड्डा, तहसगुण हिट्ठुवरि रुंदा ॥१९९॥ लरकं च मज्झि पिहुला,
जोयणलरकं च भूमिमो गाढा ॥ पुव्वाइसु वडवामुह, केजुव जूवे सर निहाणा
॥२००॥ अन्ने लहुपायाला, सगसहसा अडसया सचुलसीया ॥ पुव्वुत्त सयंस
पमा,णा तह तह प्पएसेसु ॥२०१॥ कालो य महाकालो, वेलंब पभंजणोय च
उसु सुरा ॥ पलिउवमाउणो तह, सेसेसु सुरा तयद्धाऊ ॥ २०२ ॥ सव्वे सिमहो

भागे, वाऊ मच्झिल्लंयमि जलवाऊ ॥ केवलजलमुवरिल्ले, भाग इगे तब सासु वे ॥२०३॥ बहवे उयारवाया,मुछंति खुहंति इसि वाराउ ॥ एगअहोरत्तं तो, तया तया वेलपरिवुढ्ढी ॥ २०४ ॥ बायालसहि इसयरि, सहसा नागाण मज्झवरि बाहिं ॥ वेलं धरंति कमसो, चउहत्तरुलस्क ते सव्वे ॥२०५॥ बायालसहस्सेहिं, पुव्वसाणाइदिसि विदिसि लवणे ॥ वेलंधराणवेलं, धरराईणं गिरिसु वासा ॥ ॥ २०६ ॥ गोथूभे दगभासे, संखे दगसीमनामि दिसि सेले ॥ गोथूभो सिवदेवो, संखो य मणोसिलो राया ॥२०७॥ कक्कोमे विज्जुपहे, केलास रुणप्पहे विदिसि सेले ॥ कक्कोमग कहमउ, केलास रुणप्पहो सामी ॥ २०८॥ एए गिरिणो सव्वे, बावीसहिया य दससया मूले ॥ चउसय जउवीसहिया, विछिस्सा हुंति सिहरतले ॥२०९॥ सतरससय इगवीसे, उच्चत्ते ते सवेइया सव्व ॥ कणगंकरययफालिह,दिसासु विदिसासु रयणमया ॥२१०॥ नवगुणहत्तरि जोयण, बहिज

लुवरि चत्त पण नवइ जाया ॥ एए मज्झे नवसय, तेसठा जागसगसयरी॥२११॥ हिमवंतंता विदिसी, साणाइगयासु चउसु दाढासु ॥ सग सग अंतर दीवा, पढमचउक्कं च जगईउ ॥२१२॥ जोयणतिसएहि तउ, सयसयवुड्ढी य छसु चउ क्केसु ॥ अन्नुन्न जगइ अंतरि, अंतरसमविछरा सव्वे ॥२१३॥ पढमचउक्कुच्चबहिं, अड्ढाइ य जोयणइ य वीसंसो ॥ सयरिं सवुड्ढिपुरउ, मज्झदिसिं सव्वि कोसडुगं ॥२१४॥ सव्वे सवेइयंता, पढमचउक्कंमि तेसि नामाइं ॥ एगोरुय आभासिय, वेसाणिय चेव लांगूले ॥ २१५ ॥ बीयचउक्के हयगय, गो सक्कुलि पुव्वकन्ननामा णो ॥ आयंस मिंढग अउ, गोपुव्वमुहा य तइयंमि ॥२१६॥ हय गय हरि वग्घ मुहा, चउछए आसकन्न हरिकन्नो, अकन्न कन्न प्पावरं, ण दीव पंचमचउक्कंमि ॥२१७॥ उक्कमुहो मेहमुहो, विज्जुमुहो विज्जुदंत छठंमि ॥ सत्तमगे दंतंता, घण लठ निगूढ सुध्दाय ॥२१८॥ एमेव य सिहरिंमि वि, अडवीसं सव्वि हुंति छप्प

न्ना ॥ एएसु जुअलरूवा, पलिआसंखंसआउ नरा ॥ २१ए ॥ जोयणदसमंस तणू, पिठिकरंडाणमेसि चउसठी ॥ असणं चउत्थाउ, गुणसीदिण वच्चपालणाया ॥२२०॥ पच्छिमदिसि सुठिय लव,णसामिणो गोयमुत्ति इगुदीवो ॥ उन्नउ वि जंबुलवणे, छ छ रविदीवा य तेसिं च ॥२२१॥ जगइ परुप्परि अंतरि, तह विच्छर बार जोयणसहस्सा॥एमेव य पुव्वदिसि,चंददचउक्कस्स चउ दीवा ॥२२२॥ एवंचिय बाहिरउ, दीवा अठठ पुव्वपच्छिमउ ॥ छ छ लवणे ठ ठ धायइ,संरू ससीणं रवीणं च ॥२२३॥ एए दीवा जलुवरि, बहि जोयण सड्ढअठसीइ तहा ॥ न्नागावि य चालीसा, मज्झे पुण कोसछुगमेव ॥ २२४ ॥ कुलगिरिपासायसमा, पासाया एसु नियनियपहूणं ॥ तह लवणे जोइसिया, दगफालिह उड्ढलेसागा ॥ २२५ ॥ इति श्री लवणसमुद्राधिकारोद्वितीयः समाप्तः ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ जामुत्तरदीहेणं, दससयसमपिहुल पणसय उच्चेण ॥ उसुयारगिरि छुगेणं,

धायइसंडो उह विहत्तो ॥२२६॥ खंडदुगे छ छ गिरिणो, सग सग वासा य अ
रविवररूवा ॥ धुरि अंति समा गिरिणो,वासा पुण पिहुलपिहुलयरा ॥२२७॥
दहकुंडउत्तममे,रु मुस्सयं विहरं वियङ्काणं॥वट्टगिरीणं च सुमे,रुवज्जमिह जाण
पुव्वसमं ॥२२८॥ मेरुदुगंपि तहच्चिय, नवरं सोमणसहिठुवरि देसे ॥ सगअड
सहस्स ऊणा,त्तिसहस पणसीइ उच्चत्ते ॥२२९॥ तहपणनवइचउस्सउ, य अड
चउस्सउ य अठ तीसाय ॥ दस य सया य कमेणं, पणठाणपिहुत्ति हिठाय
॥२३०॥ नइ कुंडदीववणमुह, दहदीहरसेलकमलविहारं ॥ नइउंडत्तं च तहा,
दह दीहत्तं च इह दुगुणं ॥२३१॥ इगलक्ख सत्तसहसा, अफसय गुणसीइ जा
हसालवणं ॥ पुव्वावरदीहंतं, जामुत्तरअठसीइजइयं ॥ २३२ ॥ बहिगयदंता दी
हा, पणलक्खण सयरिसहस दु गुणठा ॥ इयरे तिलक्ख छप्प,ससहस सयदुसि
सगवीसा ॥२३३॥ खित्ताणुमाणउं से, स सेलनईविजय वणमुहायामो ॥ चउ

लक्खु दीहवासा, वासविजयविछरो उइमो ॥ २३४ ॥ खित्तंकगुणधुवंके,
दोसय बारुत्तरेहि पविभत्ते ॥ सव्वछ वासवासो, हवेइ इह पुण इय धुवंका
॥२३५॥ धुरि चउद लक्ख डुसह, स दो सगनउया धुवं तहा मज्झे ॥ डुसय अ
डुत्तर सतस, ठि सहसछव्वीसलक्खा य ॥ २३६ ॥ गुणवीस सयं बत्ती,स सहस
गुणयाल लक्ख धुवमंते ॥ नइगिरिवणमाण विसु, ६ खित्तसोलंसपिहु विजया
॥२३७॥ नवसहसा छसय तिहु, त्तरा य छ च्चेव सोलन्नाया य ॥ विजयपिहुत्त
नइगिरि, वणविजयसमासचउलक्खा ॥२३८॥ पुव्वंव पुरी य तरू, परमुत्तरकुरु
सु धाइ महधाइ ॥ रुक्खा तेसु सुदंसण, पियदंसणनामया देवा ॥ २३९ ॥ धुव
रासीसु य मिलिया, एगो लक्खो य अडसयरि सहसा ॥ अठसया बायाला,
परिहितिगं धायईसंडे ॥ २४० ॥ कालोदहि सव्वछवि, सहसुंडो वेलविरहिउ त
छ ॥ सुछियसम कालमहा, कालसुरा पुव्वपछिमउ ॥ २४१ ॥ लवणंमिव जहसं

भव, ससिरविदीवा इहंपि नायव्वा ॥ नवरं समंतउ ते, कोसदुगुच्चा जल
स्सुवरिं ॥२४२॥ पुक्खरदलबहिजगइ, व्व संठिउ माणुसुत्तरो सेलो ॥ वेलंधरगि
रिमाणो, सींह निसाई निसढवन्नो ॥२४३॥ जह खित्तनगाईणं, संठाणो धाय
ए तहेव इहं ॥ दुगुणो य भद्दसालो, मेरुसुयारा तहा चेव ॥ २४४ ॥ इह बाहि
रगयदंता, चउरो दीहत्ति वीस सय सहसा ॥ तेयालीससहस्सा, गुणवीसहि
या सया दुन्नि ॥ २४५ ॥ अब्भिंतर गयदंता, सोलसलक्खा य सहसछव्वीसा ॥
सोलहिय सयं चेगं, दीहत्ते हुंति चउरोवि ॥२४६॥ सेसा पमाणउ जह, जंबूदी
वाउ धाइए भणिया ॥ दुगुणा समा य ते तह, धायइसंडाउ इह नेया ॥२४७॥
अडसीलक्खा चउदस, सहसा तह नवसया य इगवीसा ॥ अब्भिंतर धुवरासी,
पुव्वुत्त विहीइ गणियव्वो ॥२४८॥ इगकोडि तेरलक्खा, सहसा चउचत्त सगसय
तियाला ॥ पुक्खरवरदीवड्ढे, धुवरासी एस मज्झंमि ॥२४९॥ एगा कोडी अडत्ती,

सलक्ख चउहत्तरीसहस्सा य ॥ पंचसया पणसट्ठा,धुवरासी पुक्खरद्धंते ॥२५०॥
गुणवीससहस सगसय, चउणउय सवाय विजयविक्खंभो ॥ तह इह बहिवह
सलिला, पविसंति य नरनगस्साहो ॥२५१॥ इह पउममहापउमो, रुक्खा उत्त
रकुरूसु पुव्विंव॥तेसु य वसंति देवा, पउमो तह पुंडरीउ य ॥२५२॥ पुक्खरदल
पुव्वाहर,खंडंतो सहसङ्गपिहुकुम्मा ॥ भणियातट्ठाणपुण, गीसव्वाचेव जाणंति॥
दा गुणहत्तरि पढमे, अह लवणे बीयदीव तइयद्धे॥पिहुपिहु पणसय चाला,इय
नरखित्ते सयलगिरिणो॥२५३॥तेरह सय सगवन्ना,ते पणमेरूहि विरहिया सव्वे
॥ उस्सेहपायकंदो, माणुससेलो वि एमेव ॥ २५४ ॥ धुवरासीसु तिलक्खा, पण
पन्नसहस्स छसय चुलसीया ॥ मिलिया हवंति कमसो, परिहितिगं पुक्खरद्धस्स
॥२५५॥ नइदहघणथणियागणि, जिणाइ नरजम्ममरणकालाई ॥ पणयालल
क्खजोयण, नरखित्तंमुत्तु नो पुरउ ॥ २५६॥ चउसुवि इसुयारेसु, इक्किक्कं नरन

गंमि चत्तारि ॥ कूडोवरि जिणभवणा, कुलगिरिजिणभवणपरिमाणा ॥ २५७॥
तत्तो दुगुणपमाणा,चउदारा थुत्तवसियसुरूवा॥नंदीसरबावन्ना, चउ कुंडलि रु
यगिचत्तारि ॥२५८॥ बहुसंखविगप्पे रुय, गदीव उच्चत्ति सहस चुलसीई ॥नर
नगसमरुयगो पुण, विच्छरि सयठाण सहसंको ॥२५९॥ तस्स सिहरंमि चउदि
सि, बीयसहस्सि गिगु चउद्दि अठ्ठ ॥ विदिसि चक इय चत्ता, दिसिकुमरि
कूड सहस्सुच्चा ॥२६०॥ इय कयवयदीवोदहि, वियारलेसो मएविमइणावि ॥
लिहिउ जिणगणहरगुरु, सुयसुयदेवीपसाएण ॥२६१॥ सेसाण दीवाण तहो
दहीणं, वियारविच्छारमणोरपारं ॥ सया सुयाउ परिभावयंतु, सव्वंपि सव्वंनुयइक्क
चित्ता ॥२६२॥ सूरिहि जं रयणसेहरनामएहिं, अप्पट्ठ मेव रइयं नरखित्तविरकं
॥ तं सोहियं पयरणं सुयणाहि लोए, पावेउ तं कुसलरंगमयप्पसिद्धिं ॥२६३॥
इति श्री क्षेत्रसमासप्रकरणं संपूर्णम् ॥ इयखित्त समास पकरणस्सगठो० ॥

॥ श्रीजिनायनमः ॥ अथ श्रीदेवेंद्रसूरिकृतकर्मग्रंथमूलगाथाप्रारंभः ॥ आर्यावृत्तम् ॥ सिरिवीरजिणं वंदिअ, कम्मविवागं समासउवुद्दं ॥ कीरइ जिएण हेउहिं, जेणंतो भसए कम्मं ॥१॥ पयइ ठिइ रस पएसा, तं चउहा मोअगस्स दिठंता ॥ मूलपगइठ उत्तर, पगई अडवन्न सयभेअं ॥ २ ॥ इह नाण दंसणा वर,ण वेअ मोहाउ नाम गोआणी ॥ विग्घं च पण नव इुअ, ठवीस चउ ति सय इु पण विहं ॥ ३ ॥ मइ सुअ उही मणके, वलाणि नाणाणि तब मइना ण ॥ वंजणवग्गह चउहा, मण नयण विणिंदिअ चउक्का ॥४॥ अवुग्गह ईहा वा,यधारणा करण माणसेहिं ठहा ॥ इअ अठवीस भेअं,चउदसहा वीसहा च सुअं ॥५॥ अस्कर सन्नी सम्मं, साईयं खलु सुपजवसिअं च ॥ गमिअं अंगप विठं, सत्तवि एए सपस्किवस्का ॥६॥ पजय अस्कर पय सं, घाया पडिवत्ति तह य अणुउगो ॥ पाहुडपाहुड पाहुड, वबू पुव्वाय ससमासा ॥ ७ ॥ अणुगामि

वद्धमाणय, पडिवाई यरविहा ब्हा उंही ॥ रिजमइ विउलमई मण, नाणं केवल मिगविहाणं ॥८॥ एसिंजं आवरणं, पडुच्च चक्कुस्स तं तया वरणं ॥दंसण चउ पण निद्दा, वित्तिसमं दंसणावरणं ॥ ए ॥ चक्कु दिठि अचक्कू, सेसिंदिय उंहिं केवलेहिं च ॥ दंसण मिह सामन्नं, तस्सावरणं तयं चउहा ॥ १० ॥ सुह पडिबोहा निद्दा, निद्दा निद्दा य डुक्कपडिबोहा ॥ पयला ठिउंवविठ, स्स पयल पयला य चंकमउ ॥११॥ दिण चिंतिअब करणी, थीणद्धी अद्धचक्कि अद्ध बला ॥ महुलित्त खग्गधारा, लिहिणं व डुहाउ वेअणिअं ॥ १२ ॥ उसन्नं सुरमणुए, सायमसायं तु तिरिअ निरएसु ॥ मजंव मोहणीअं, डुविहं दंसण चरण मोहा ॥ १३ ॥ दंसणमोहं तिविहं, सम्मं मीसं तहेव मिछत्तं ॥ सुद्धं अद्ध विसुद्धं, अविसुद्धं तं हवइ कमसो ॥१४॥ जिअ अजिअ पुस पावा, सव संवर बंध मुक्क निज्जरणा ॥ जेणं सद्दहइ तयं, सम्मं खइगाइ बहुनेअं ॥१५॥ मी

सा न रागदोसो, जिणधम्मे अंतमुहु जहा अन्ने ॥ नालिअर दीवमणुणो, मि
छं जिणधम्म विवरीअं ॥१६॥ सोलस कसाय नव नो, कसाय छविहं चरित्त
मोहणियं ॥ अण अप्पच्चक्खाणा, पच्चक्खाणाय संजलणा ॥१७॥ जा जीव वरि
स चउमा, स पक्खग्गा निरय तिरिय नर अमरा ॥ सम्माणु सव्वविरई, अ
हखाय चरित्त घायकरा ॥१८॥ जल रेणु पुढवि पव्वय, राईसरिसो चउव्विहो को
हो ॥ तिणि सिलया कठ्ठठिअ, सेलथंभो वमोमाणो ॥ १९ ॥ माया वलेहि गो
मु,त्तिमिंढसिंग घणवंसमूलसमा ॥ लोहो हलिद्द खंजण, कद्दम किमिराग सा
माणो ॥२०॥ जस्सुदया होइ जिए, हास रइ अरइ सोग भय कुछा ॥ सनिमि
त्त मन्नहा वा, तं इह हासाइ मोहणिअं ॥२१॥ पुरिसित्थि तदुभयं पइ, अहि
लासो जव्व सा हवइ सोउ ॥ थी नर नपुं वेउदउ, फुंफुम तण नगरदाहसमो
॥२२॥ सुर नर तिरि निरयाउ, हडिसरिसं नामकम्म चित्तिसमं ॥ बायाल ति

नवइविहं, तिउत्तरसयं च सत्तठी ॥२३॥ गइ जाइ तणु उवंगा, बंधण संघाय णाणि संघयणा ॥ संठाण वन्न गंध र,स फास अणुपुव्वि विहगगई ॥२४॥ पिंडपयडित्ति चउदस,परघा उस्सास आय वुजोअं ॥ अगुरुलहु तित्थ निमिणो, वघाय मिअ अठपत्तेआ ॥२५॥ तस बायर पजत्तं, पत्तेय थिरं सुभं च सुभगं च ॥ सुसरा इज्ज जसं तस, दसगं थावरदसं तु इमं ॥ २६ ॥ थावर सुहुम अपज्जं, साहारण अथिर असुभ दुभगाणि ॥ दुसर अणाइज्जा जस, मिअनामे सेअरा वीसं ॥२७॥ तसचउ थिरछक्कं अथि,रछक्क सुहमतिग थावरचउक्कं ॥ सुभगतिगाइ विभासा, तयाइ संखाहि पयडीहिं ॥२८॥ वन्नचउ अगुरुलहु चउ, तसाइ दु ति चउर छक्क मिच्चाइ ॥ इअ अन्नावि विभासा, तयाइ संखाहि पयडीहिं ॥२९॥ गइआइअणुक्कमसो, चउ पण पण ति पण पंच छ छक्कं ॥ पण दुग पण ठ चउ दुग, इअ उत्तरभेअ पणसठी ॥३०॥ अडवीस जुआ तिनवइ,

संतेवा पनर बंधणे तिसयं ॥ बंधण संघाय गहो, तणूसु सामस्स वण्ण चउ ॥ ३१ ॥ इअ सत्त ठी बंधो,दए अ नय सम्म मीसया बंधे ॥ बंधद ए सत्ताए, वीस छवीसठवस्ससयं ॥ ३२ ॥ नरय तिरि नर सुरगई, इग बिअ तिअ चउ पणिंदि जाईउ ॥ उराल विउव्वा हा, र तेअ कम्मण पण सरीरा ॥ ३३ ॥ बाहू रु पिठि सिर उर, उअरंग उवंग अंगुली पमुहा ॥ सेसा अंगोवंगा, पढम तणुतिगस्सुवंगाणि ॥३४॥ उरलाइ पुग्गलाणं, निबद्ध बझंतयाण संबंधं ॥ जं कुणइ जउ समंतं, बंधण मुरलाइ तणु नामा ॥३५॥ जं संघायइ उरला, इ पुग्गले तिणगणं वदंताली ॥ तं संघायं बंधण,मिव तणु नामेण पंचविहं॥३६॥ उराल विउव्वा हा, र याण सग तेअ कम्मजुत्ताणं ॥ नव बंधणाणि इअर, दु सहि आणि तिन्नि तेसिं च॥३७॥ संघयण मठिनिचउ, तं छद्धा वज्जरिसह नारायं ॥ तहय रिसह नारायं, नारायं अद्धनारायं ॥ ३८ ॥ कीलिअ छेवठं इह,

रिसहो पट्टो अ कीलिआवज्जं ॥ उसहं मक्कडबंधो, नारायं इममुरालंगे ॥ ३९॥
सम चउरंसं निग्गो, हा साइ खुज्जाइ वामणं हुंडं ॥ संठाणा वन्न किण्ह, नी
ल लोहिय हलिद्द सिआ ॥४०॥ सुरही दुरही रस पण, तित्त कडु कसाय अं
बिला महुरा ॥ फासा गुरु लहु मिउ खर, सी उण्ह सिणि‌द्ध रुक्खट्ठा ॥ ४१ ॥
नील कसिणं दुगंधं, तित्तं कडुअं गुरुं खरं रुक्खं ॥ सीअं च असुह नवगं,इक्का
रसगं सुभं सेसं ॥४२॥ चउहगइव्वणुपुव्वी, गइ पुव्वि दुगं तिगं निआउजुअं ॥
पुव्वी उदउ वक्के, सुह असुह वसु ट्ट विहग गई ॥ ४३ ॥ परघा उदया पाणी,
परेसि बलिणंपि होइ दुद्धरिसो ॥ ऊससिण लद्धिजुत्तो,हवेइ ऊसासनामवसा
॥ ४४ ॥ रविबिंबेउ जिअंगं, तावजुअं आयवाउ नउजलणे ॥ जमुसिण फास
स्स तहिं, लोहिअवन्नस्स उदउत्ति ॥४५॥ अणुसिण पयासरूवं, जिअंगमुज्जो
अएइ हुज्जो आ ॥ जइ देवुत्तर विक्किअ,जोइस खज्जोअ माइव ॥४६॥अंगं न

गुरु न लहुअ, जायइ जीवस्स अगुरु लहु उदया ॥ तित्थेण तिहुअणस्सवि, पुज्जो से उदउ केवलिणो ॥४७॥ अंगोवंग निअमिणं, निम्माणं कुणइ सुत्तहा रसमं ॥ उवघाया उव हम्मइ,सतणु अवयवलंबि गाईहिं ॥ ४८ ॥ बि ति चउ पणिंदितस्सा, बायरउ बायराजिआ थूला ॥ निअ निअ पज्जत्ति जुआ, प ज्जत्ता लद्धिकरणेहिं ॥४९॥ पत्ते अ तणू पत्ते,उदएणं दंतअठिमाइ थिरं ॥ ना भुवरि सिराइ सुहं, सुभगाउ सव्वजणइठो ॥५०॥ सुसरा महुर सुहझुणी, आ इज्जा सव्वलोअ गिज्झवउ ॥ जसउ जस कित्तीउ, थावर दसगं विवज्जत्थं ॥ ॥५१॥ गोअं दुहुच्च नीअं,कुलाल इव सुघड भुंभलाईअं ॥ विग्घं दाणे लाभे, भोगु व भोगेसु विरिएअ ॥५२॥ सिरि हरिअसमं एअं, जह पडिकूलेण तेण रायाई ॥ न कुणइ दाणाई अं,एवं विग्घेण जीवो वि॥५३॥पडिणीअत्तण नि न्हव, उवघाय पउस अंतराएणं ॥ अच्चा सायणयाए, आवरण दुगं जिउ ज

यई ॥५४॥ गुरुभत्ति खंति करुणा, वय जोग कसायविजय दाण जुओ ॥ दढ
धम्माई अज्जइ, सायमसायं विवज्जयओ॥५५॥उम्मग्ग देसणाम,ग्ग नासणा दे
वदव्वहरणेहिं ॥ दंसणमोहं जिण मुणि, चेइअ संघाइ पडिणीओ ॥५६॥ डुविहं
पि चरणमोहं, कसाय हासाइ विसय विव समणो ॥ बंधइ निरयाउ महा, रंभ
परिग्गहरओ रुद्दो ॥५७॥ तिरिआउ गूढहिअओ,सढो ससल्लो तहा मणुस्साओ ॥
पयई य तणुकसाओ, दाणरुई मज्झिमगुणो अ ॥ ५८ ॥ अविरइमाइ सुराउ,
बालतवोऽकाम निज्जरोजयइ ॥ सरलो अगार विल्लो, सुहनामं अन्नहा अ
सुहं ॥५९॥ गुण पेहीमय रहिओ, अज्झयण ज्झावणा रुई निच्चं ॥ पकुणइ जि
णाइ भत्तो, उच्चं नीअं इअरहाउ ॥ ६० ॥ जिणपूआविग्घकरो, हिंसाइपराय
णो जयइ विग्घं ॥ इय कम्मविवागोयं, लिहिओ देविंदसूरीहिं ॥ ६१ ॥ इति
कर्मविपाकनामा प्रथमः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥ १ ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

॥ श्री जिनाय नमः ॥ अथ श्रीद्वितीयकर्मग्रंथप्रारंभः ॥ आर्यावृत्तम् ॥
तह थुणिमो वीरजिणं, जह गुणठाणेसु सयलकम्माइ ॥ बंधुदयोदीरणया,
सत्ता पत्ताणि खविआणि ॥१॥ मिछे सासणमीसे, अविरय देसे पमत्त अपम
त्ते ॥ निअट्टि अनिअट्टि सुहु,मुवसम खीण सजोगि अजोगि गुणा ॥ २ ॥ अ
भिनव कम्मग्गहणं, बंधो उहेण तह वीस सयं ॥ तिछयरा हारग डुग, वज्जं
मिछंमि सतर सयं ॥३॥ नरय तिग जाइ थावर,चउ हुंमा यव छिवठ नपु मि
छं ॥ सोलं तो इगहिअसय, सासणि तिरि थीण डुहग तिगं ॥४॥ अण मज्झा
गिइ संघय,ण चउ नि उज्जोअ कुखगइ छित्ति ॥ पणवीसंतो मीसे, चउसयरि
डुहाउअ अबंधा ॥५॥ सम्मे सग सयरि जिणा, उबंधि वइर नर तिअ बिअ
कसाया ॥ उरल डुगंतो देसे, सत्तठी तिय कसायं तो ॥ ६ ॥ तेवठि पमत्ते सो,
ग अरइ अथिर डुग अजस अस्सायं ॥ वुछिज्ज छच्च सत्तव, नेइ सुराउ जया

निद्दं ॥७॥ गुणसठि अप्पमत्ते, सुराउ बंधं तु जइ इहा गछे ॥ अन्नह अठाव न्ना, जं आहारग दुगं बंधे ॥८॥ अम्रवन्न अपुब्वा इमि, निद्द दुगंतो छपन्न पण भागे ॥ सुर दुग पणिंदि सुखगइ, तस नव उरल विणु तणु वंगा ॥९॥ समच उर निमिण जिण व,न्न अगुरु लहु चउ छलंसि तीसंतो ॥ चरमे छवीस बंधो, हास रई कुछ भय भेउ ॥१०॥ अनिअट्टि भाग पणगे, इगेगहीणोदुवीसविह बंधो ॥ पुम संजलण चउण्हं, कमेण छेउ सतर सुहुमे ॥११॥ चउ दंसणुच्च ज स ना,ण विग्घ दसगंति सोलसु छेउ ॥ तिसु साय बंध छेउ, सजोगि बंधंत अ णंतो अ ॥१२॥ बंधो संमत्तो ॥१॥ उदउ विवाग वेअण,मुदीरण मपत्ति इह दु वीस सयं ॥ सतर सयं मिछे मी,स सम्म आहार जिणणुदया ॥ १३ ॥ सुहुम तिगा यव मिछं, मिछत्तं सासणे इगारसयं ॥ निरयाणु पुव्विणुदया, अण थाव र इग विगल अंतो ॥१४॥ मीसे सय मणु पुव्वी,णुदया मीसो दएण मीसंतो ॥

चउसय मजए सम्मा,णु पुव्वि खेवा बिअ कसाया ॥ १५ ॥ मणुतिरिणु पुव्वि विउव, ठ दुहग अणाइज्जदुग सतर छेउ ॥ सगसीइ देसि तिरि गइ, आउ नि उज्जोअ ति कसाया ॥१६॥ अठछेउ इगसी, पमत्ति आहार जुअल परकेवा ॥ थीण तिगा हारग दुग, छेउ ठ सयरि अपमत्ते ॥ १७ ॥ सम्मत्तं तिमसंघय, ण तिअग छेउ बिसत्तरि अपुव्वे ॥ हासाइ छक्क अंतो,छसठि अनिअट्टि वेअ तिगं ॥१८॥ संजलण तिगं छ छेउ,सठी सुहुमम्मि तुरिअ लोभंतो ॥ उवसंत गुणे गुण स,ठि रिसह नाराय दुग अंतो ॥१९॥ सगवन्न खीण दु चरिमि, निद्द दु गंतो अचरिमि पणवन्ना ॥ नाणंतराय दंसण, चउ छेउ सजोगि बायाला॥२०॥ तिहुदया उरला थिर, खगइ दुग परित्त तिग छ संठाणा ॥ अगुरु लहु वन्न चउ निमि,ण तेअ कम्माइग संघयण॥२१॥सूसर दूसर साया, साए गयरं च तीस वुछेउ ॥ बारस अजोगि सुभगा, इज्ज जसन्नयर वेअणिअं ॥ २२ ॥ तस

तिग पणिंदि मणुआ,उ गइ जिणु ग्वंति चरिम समयंतो॥उदउ समत्तो॥२॥उद
उव्वुदीरणाया,परम पमत्ताइ सग गुणेसु॥पाठांतरं॥परम पमत्ताइसगतिगुणा॥२३
पाठांतरगाथा ॥ जं वेअणिआहारउ, गथीणतिगनराउअप्पमत्तता ॥ गुणयाल
सजोगिउदी, रणं तु अणुदीरगु अजोगी ॥२४॥ एसा पयमी तिगुणा, वेअणि
आहार जुअल थीण तिगं ॥ मणुआउ पमत्तंता, अजोगि अणुदीरगोभय
वं॥२५॥उदीरणा सम्मत्ता॥३॥सत्ता कम्माण ठिई, बंधाइअ लध्द अत्त लाभा
णं ॥ संते अम्याल सयं, जा उवसमु विजिणु बिअ तइए ॥२६॥ अपूव्वाइअ
चउक्के, अण तिरि निरयाउ विणु बिआलसयं ॥ सम्माइ चउसु सत्तग, खयं
मि इग चत्तसय महवा ॥२७॥ खवगंतु पप्प चउसुवि, पणयालं निरय तिरि सु
राउ विणा ॥ सत्तग विणु अडतीसं, जा अनिअट्टी पढम भागो ॥२८॥ थावर
तिरि निरया यव, डुग थीण तिगे ग विगल साहारं ॥ सोल खउ डुविस सयं,

बिअंसि बिअ तिअ कसायंतो ॥२९॥ तइआइसु चउदस ते,र बार छ पण च उ तिहिअ सय कमसो ॥ नपु इत्थि हासछग पुस, तुरिअ कोहो मय माय ख उं ॥३०॥ सुहुमि दुसय लोहंतो, खीण दु चरिमेगसय दु निद्द खउं ॥ नवनव इ चरिम समए, चउ दंसण नाण विग्घंतो ॥३१॥ पणसीइसजोगि अजो, गि दु चरिमे देव खगइ गंध दुगं ॥ फासठ वन्न रस तणु, बंधण संघाय पण निमि णं ॥३२॥ संघयण अथिर संठा,ण छक्क अगुरुलहु चउ अपजत्तं ॥ सायं च असायं वा, परित्तुवंगातिग सुसर निअं ॥३३॥ बिसयरि खउं अचरिमे, तेरस मणुअ तस तिग जसाइज्जं ॥ सुभग जिणुच्च पणिंदिअ, सायासा एगयर छेउं ॥३४॥ नर अणुपुव्वि विणा वा,बारस चरिम समयंमि जो खविउ ॥ पत्तो सिद्धिं देविं,द वंदियं नमह तं वीरं ॥३५॥ सत्ता सम्मत्ता॥४॥इति कर्मस्तवाख्यो द्वितीयः कर्मग्रंथः संपूर्णः ॥ बंधविहाणविमुक्कं, वंदिअ सिरिवद्धमाण जिणचंदं॥ गइ

आईसु वुच्छं, समासओ बंधसामित्तं ॥१॥ गइइंदीए काए, जोए वेए कसाय नाणे
य ॥ संजमदंसणलेसा, भवसम्मे सन्निआहारे ॥२॥ जिण सुर विउवाहारग,
देवाउअनिरय सुहुम विगल तिगं ॥ एगिंदि थावरा यव, नपुमिच्छं हुंडछेवट्ठं॥३॥
अण मज्झागिइ संघय,ण कुखगइ निअ इत्थि दुहग थीण तिगं ॥ उज्जोअ तिरि
दुगं तिरि, नराउ नर उरल दुग रिसहं ॥४॥ सुर इगुण वीस वज्जं, इगसउ ओ
हेण बंधहिं निरया ॥ तित्थविणा मिच्छि सयं, सासणि नपु चउविणा छनुइ॥५॥
विणु अण छवीस मीसे, बिसयरि सिम्मंमि जिण नराउ जुआ ॥ इअ रयणाइ
सु भंगो, पंकाइसु तित्थयरहीणो ॥६॥ अजिण मणु आउ ओहे, सत्तमिए नर
दुगुच्च विणु मिच्छे॥इग नवई सासाणे, तिरिआउ नपुंस चउवज्जं ॥ ७ ॥ अण
चउवीस विरहिया, सनर दुगुच्चाय सयरि मीस दुगे ॥ सतरसउ ओहि मिच्छे,
पज तिरिआ विणु जिणाहारं ॥८॥ विणु निरय सोल सासणि, सुराउ अण ए

गतीस विणु मीसे ॥ ससुराउ सयरि सम्मे, बीअ कसाए विणा देसे ॥ए॥ इ
अ चउगुणेसु वि नरा, परमजया सजिणं उहु देसाइ ॥ जिण इक्कारस हीणं,
नव सय अपजत्त तिरिअ नरा ॥१०॥ निरयव्व सुरा नवरं, उहे मिछे इगिंदि
तिग सहिआ ॥ कप्प डुगे विअ एवं, जिणहीणो जोइ नवण वणे॥११॥रय
णुव सणं कुमारा,इ आणयाइ उजोअ चउरहिआ ॥ अपज्ज तिरिअव नव स
य, मिगिंदि पुढवि जल तरु विगले॥१२॥छनवइ सासणि विणु सुहु,म तेर के
इ पुण बिंति चउनवइ॥ तिरिअ नरा ऊहि विणा, तणु पज्जत्तिं न जंति जउ ॥
॥१३॥ उहु पणिंदि तसेगइ, तसे जिणिक्कार नर तिगुच्च विणा ॥ मणवय जोगे
उहो, उरले नरनंगु तम्मिस्से॥१४॥आहार छग विणोहे, चउदससउ मिछि
जिण पणगहीणं ॥ सासणि चउ नवइ विणा, तिरिअ नराउ सुहुम तेर॥१५॥
अण चउवीसाइ विणा, जिणपण जुअ सम्मि जोगिणो सायं ॥ विणु तिरि न

राउ कम्मे, वि एवमाहारडुगि उहो ॥ १६ ॥ सुरउहो वेउव्वे, तिरिअ नराउ र हिउ तम्मिस्से ॥ वेअ तिगा इम बिअ तिअ, कसाय नव दु चउ पंच गुणा ॥ १७ ॥ संजलण तिगे नव दस, लोभे चउ अजइ दु ति अनाण तिगे ॥ बार स अचक्खु चक्खुसु, पढमा अहखाइ चरिम चऊ ॥१८॥ मणनाणी सग जया इ, समइअ छेअ चउ दुन्नि परिहारो॥केवल दुगि दो चरिमा, अजयाइ नवमइ सु उहि दुगे ॥१९॥ अड उवसमि चउ वेअगि, खइए इक्कार मिछ तिगि देसे ॥ सुहुमि सठाणं तेरस, आहारग निअ निअ गुणोहो ॥२०॥ परमुवसमि वट्टं ता, आउ न बंधंति तेण अजयगुणे ॥ देवमणुआउ हीणो, देसाइसु पुण सुरा उविणा ॥२१॥ उहे अठारसयं, आहार दुगूणमाइ लेसतिगे ॥ तं तिछोणं मि छे, साणाइसु सव्वहिं उहो ॥२२॥ तेऊ निरय नवूणा, उज्जोअ चउ निरय बार विणु सुक्का ॥ विणु निरय बार पम्हा, अजिणाहारा इमा मिछे ॥२३॥ सव्व गुण

नवसन्निसु, उंहु अनवा असन्नि मिछिसमा ॥ सासणि असन्नि सन्निव, कम्म णनंगो अणाहारे ॥२४॥ तिसु इसु सुक्काइ गुणा, चउ सग तेरत्ति बंधसामित्तं ॥ देविंदसूरि रइअं, नेयं कम्मञयं सोउं ॥२५॥ इति बंधस्वामित्वाख्यस्तृतीयः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥३॥ ॥ ॥ ॥ ॥छ॥

नमिअ जिणं जिअमग्गण, गुणठाणुवउंग जोग लेसाउं ॥ बंध प्पबहू नावे, संखिज्जाई किमवि वुछं ॥१॥ नमिअ जिणं वत्तवा, चउदस जिअठाणएसु गुणठाणा ॥ जोगुवउंगो लेसा, बंधोदउ दीरणा सत्ता ॥२॥ (पाठांतरं) चउदसजियठाणेसु, चउदसगुणठाणगाणिजो गाय ॥ उवउंगलेसबंधो, दउदीरणासंत अठप ए॥२॥तह मूल चउद मग्गण, ठाणेसु बासठि उत्तरेसु यवि ॥ जिय गुण जोगुवउंगा, लेस प्पबहुं च ठाणा॥३॥पाठांतरं ॥ चउदस मग्गणठाणे, सुमूलपएसु बिसठि इयरेसु ॥ जियगुणजोगुवउंगा, लेसप्पबहुत्तठाणा ॥ ३ ॥ चउदस गुणेसु

जिअ जो,गु वउंग लेसाय बंधहेऊ यं ॥ बंधाइअ चउ अप्पा, बहुं च तो ञाव संखाई ॥४॥ (पाठांतरं) चउदसगुणठाणेसु, जियजोगुवउंग लेसबंधाय ॥ बंधुद दीरणाउं, संतप्पबहुत्तदसठाणा ॥ ४ ॥ दार गाहाउं ॥ अथ जीवस्थानानि उच्यन्ते ॥ इह सुहुम बायरेगिं, दि बि ति चउ असन्नि सन्नि पंचिंदी ॥ अपजत्ता पजत्ता, कमेण चउदस जिअठाणा ॥ ५ ॥ बायर असन्नि विगले, अपज्जि पढम बिअसन्नि अपजत्ते ॥ अजय जुअ सन्निपजे, सव्वगुणा मिछ सेसेसु ॥ ६ ॥ अपजत्त ठक्कि कम्मु र, ल मीस जोगा अपजसन्नीसु ॥ ते सवि उवमीस एसु, तणु पजेसु उरलमन्ने ॥ ७ ॥ सव्वे सन्निपजत्ते, उरलं सुहुमे सञासु तं चउसु ॥ बायरि सविउव्वि दुगं, पज सन्निसु बार उवउंगा ॥ ८ ॥ पज चउरिं दि असन्निसु, दु दंसदुअनाण दससु चक्कु विणा ॥ सन्निअपजे पण ना,ण चक्कु केवल दुग विहूणा ॥ ए ॥ सन्नि

इगि ठ लेस अप,ज्ज बायरे पढम चउ तिसेसेसु ॥ अथ बंधादीनि चत्वारि द्वाराणि प्रारभ्यन्ते ॥ सत्तठ बंधुदीरण, संतु दया अठ तेरससु ॥ १० ॥ सत्तठ ठेग बंधा, संतु दया सत्त अठ चत्तारि ॥ सत्तठ ठ पंच इगं, उदीरणा सन्निपजत्ते ॥ ११ ॥ गइ इंदिए अ काए, जोए वेए कसाय नाणे सु ॥ संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥ १२ ॥ सुर नर तिरि निरय गइ, इग बिअ तिअ चउ पणिंदि ठक्काया ॥ भूजल जलणाऽनिल वण, तसा य मण वयण तणू जोगा ॥१३॥ वेअ नरि छि नपुंसग, कसाय कोह मय माय लोभत्ति ॥ मइ सुअवहि मण केवल, विभंग मइ सुअ नाण सागारा ॥१४॥ सामाइअ ठेअ परिहा,र सुहुम अहखाय देस जय अजया ॥ चक्खु अ चक्खू ओही, केवल दंसण अणागारा ॥ १५ ॥ किण्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हा य सुक्क भविअरा ॥ वेअग खइगुवसम मि,छ मीस सासाण सन्निअरे ॥ १६ ॥

आहारे अर नेआ, सुर निरय विभंग मइसु ओहि दुगे ॥ सम्मत्त तिगे पम्हा, सुक्का सन्नीसु सन्निदुगं ॥ १७ ॥ तमसन्नि अपज्जजुअं, नरे सबायर अपज्ज तेऊए ॥ थावर इगिंदि पढमा, चउ बार असन्नि दुदु विगले ॥१८॥ दस चरिम तसे अजया, हारग तिरि तणु कसाय दु अनाणे ॥ पढमति लेसा भविअर, अचक्खु नपु मिच्छि सव्वेवि ॥१९॥ पज्ज सन्नि केवल दुग, संजम मणनाण देस मण मीसे ॥ पण चरिम पज्ज वयणे, तिय छवि पज्जिअर चक्खुंमि ॥२०॥ थी नर पणिंदि चरमा, चउ अणहारे दुसन्नि छ अपज्जा ॥ ते सुहुम अपज्ज विणा, सासणि इत्तो गुणे वुच्छं ॥२१॥ पण तिरि चउ सुर निरए, नर सन्नि पणिंदि भव तसि सव्वे ॥ इग विगल भूदगवणे, दु दु एगं गइ तस अभव्वे ॥ २२ ॥ वेअति कसाय नव दस, लोभे चउ अजइ दु ति अनाण तिगे ॥ बारस अचक्खु चक्खुसु, पढमा अहखाइ चरिम चऊ ॥२३॥ मणनाणि सग जयाई, समइअ

छेअ चउ दुन्नि परिहारे ॥ केवल दुगि दो चरिमा, जयाइ नव मइसु ओहि दुगे ॥२४॥ अड उवसमि चउ वेअगि, खइए इक्कार मिछ तिगि देसे ॥ सुहुमे स्स ठाण तेर,स जोग आहार सुक्काए ॥ २५ ॥ असन्निसु पढम दुगं, पढम तिले सासु छच्च दुसु सत्त ॥ पढमं तिम दुग अजया, अणाहारे मग्गणासु गुणा ॥ ॥ २६ ॥ सच्चे अर मीस अस,च्च मोस मणवय विउव्वि आहारा ॥ उरलं मीसा कम्मण, इअ जोगा कम्म अणाहारे ॥२७॥ नर गइ पणिंदि तस तणु, अचक्खु नर नपु कसाय सम्मदुगे ॥ सन्नि छलेसा हारग, भव मइ सुअ ओहि दुगि स व्वे ॥२८॥ तिरि इत्थि अजय सासण, अनाण उवसम अभव्व मिछेसु ॥ तेराहार दुगूणा, ते उरलदुगूण सुर निरए ॥२९॥ कम्मुरलदुगं थावरि,ते सविउव्वि दुग पंच इग पवणे ॥ छ असन्नि चरिम वइजुअ,तेविउव्वि दु गूण चउविगले॥३०॥ कम्मुरलमीस विणु मण, वय समइअ छेअ चक्खु मणनाणे ॥ उरल दुग कम्म

पढमं,तिम मण वय केवल दुगंमि ॥३१॥ मणवय उरला परिहा,र सुहुमि नव तेउ मीसि सविउव्वा ॥ देसे सविउव्वि दुगा, सकम्मुरल मीस अहखाए ॥ ३२ ॥ ति अनाण नाण पण चउ, दंसण बार जिअलक्खणु वओगा ॥ विणु मण नाण दु केवल, नव सुर तिरि निरय अजएसु ॥३३॥ तस जोअ वेअ सुक्का, हार न र पणिंदि सन्नि भवि सव्वे ॥ नयणे अरपण लेसा, कसाय दस केवल दुगूणा ॥३४॥ चउरिंदि असनि दु अना,ण दुदंस इग बि ति थावरि अचक्खु ॥ ति अनाण दंसण दुगं, अनाण तिगि अभवि मिछ दुगे ॥३५॥ केवलदुगं निअ दुगं, नव ति अनाणविणु खइअ अहखाए ॥ दंसण नाण तिगं दे,सि मीसि अन्नाण मीसंतं ॥३६॥ मण नाण चक्खु वज्जा, अणहारे तिन्नि दंस चउ नाणा ॥ चउ नाण संजमो वस,म वेअगे उहि दंसेअ ॥ ३७ ॥ दो तेर तेर बारस, म णेकमा अठ दु चउ चउ वयणे ॥ चउ दु पण तिन्नि काए, जिअ गुण जोगोव

उगन्ने ॥३८॥ छसु लेसासु सठाणं, एगिंदि असन्नि भूदगवणेसु ॥ पढमा चउ रो तिन्निउ, नारय विगलग्गि पवणेसु ॥३९॥ अहखाय सुहुम केवल, डुगि सुक्का छवि सेस ठाणेसु ॥ नर निरय देव तिरिआ, थोवा डु असंखणंतगुणा॥ ॥४०॥ पण चउ ति डु एगिंदी, थोवा तिन्नि अहिआ अणंत गुणा ॥ तस थोव असंखग्गी, भू जल निल अहिअ अणंता ॥४१॥ पण वयण काय जोगी, थोवा असंख गुणा अणंतगुणा ॥ पुरिसा थोवा इत्थी, संखगुणाणंतगुण कीवा ॥४२॥ माणी कोही माई, लोभी अहिअ मणनाणिणो थोवा ॥ उहि असंखा मइ सुअ,अहिय सम असंख विप्नंगा ॥४३॥ केवलिणोणंतगुणा, मइ सुअ अन्नाणिणंतगुण तुल्ला॥सुहुमा थोवा परिहा,र संख अहखाय संखगुणा॥४४॥ छेआ समइअ संखा,देस असंखगुणाडणंत गुण अजया ॥ थोव असंख डुणंता, उहि नयण केवल अचक्खू ॥४५॥पच्छाणु पुव्वि लेसा, थोवा दोसंखणंत दो अ

हिआ॥अजवि अर थोवमणंता, सासण थोवो वसमसंखा ॥ ४६ ॥ मीसा संखा वेअग, असंख गुण खइअ मिछ उ अणंता ॥ सन्नि अर थोवणंता,अणहार थोवेअर असंखा ॥४७॥ सव्व जिअठाण मिछे, सग सासणि पण अपज्ज सन्नि उगं ॥ सम्मे सन्नी उविहो, सेसेसु सन्नि पजत्तो ॥४८॥मिछ उगिअ जइ जोगा, हार उगूणा अपुव्व पण गेउ ॥ मणवय उरल सविउव्वि, मीसी सविउव्वि उग देसे॥४९॥साहारदुग पमत्ते, ते विउवाहार मीस विणु इअरे ॥ कम्मुरलदुगंता इम, मण वयण सजोगि न अजोगि ॥५०॥ ति अनाण दुदंसा इम, दुगे अजय देसि नाण दंस तिगं ॥ ते मीसि मीस समणा,जयाइ केवल दु अंत दुगे ॥५१॥ सासण जावे नाणं, विउव्व गाहारगे उरल मिस्सं ॥ नेगिंदिसु सासाणो, नेहाहि गयं सुअ मयंपि॥५२॥ छसु सव्वा तेउ तिगं, इगि छसु सुक्का अजोगि अल्लेसा ॥ बंधस्स मिछ अविरइ,कसाय जोगत्ति चउ हेऊ॥५३॥ अ

निगहिअ मणनिगहिआ, निनिवेसिअ संसइअ मणा जोगा ॥ पण मिछ बार अविरइ, मण करणानिअमु छ जिअवहो ॥ ५४ ॥ नव सोल कसाया पनरि जोग इअ उत्तरा उसगवन्ना ॥ इग चउ पण ति गुणेसु, चउ ति दु इग पच्चउ बंधो ॥ ५५ ॥ चउ मिछ मिछ अविरइ, पच्चइआ साय सोल पणतीसा ॥ जोग विणु ति पच्चइआ, हारग जिण वज्ज सेसाउ ॥ ५६ ॥ पणपन्न पन्न तिअ छहि, अचत्त गुणचत्त छ चउ दुगवीसा ॥ सोलस दस नव नव सत्त हेउ णो नउ अजोगम्मि ॥ ५७ ॥ पणपन्न मिछि हारग, दुगूण सासाणि पन्न मिछविणा ॥ मीस दुग कम्म अण विणु, तिचत्त मीसे अह छ चत्ता ॥ ५८ ॥ सदुमीस कम्म अजए, अविरइ कम्मुरलमीस बिकसाए ॥ मुत्तु गुण चत्त देसे, छवीस साहार दु पमत्ते ॥ ५९ ॥ अविरइ इगार तिकसा, य वज्ज अपमत्ति मीस दुग रहिआ ॥ चउवीस अपुव्वे पुण, दुवीस अविउव्वि आहारा ॥ ६० ॥ अ छहास सोल बायरि,

सुहुमे दस वेअ संजलण ति विणा ॥ खीणु वसंति अलोभा, सजोगि पुव्वुत्त सग जोगा ॥६१॥ अपमत्तंता सत्त, ठ म्मीस अपुव्व बायरा सत्त ॥ बंधइ छस्सु हमो ए, ग मुवरिमाबंधगा जोगी ॥ ६२ ॥ आसुहुमं संतुदए, अठवि मोह वि णु सत्त खीणंति ॥ चउ चरिम दुगे अठउ, संते उवसंति संतुदए ॥ ६३ ॥ उइरं ति पमत्तंता, सगठ मीसठ वेअ आउ विणा ॥ छग अपमत्ताइ तउ, छ पंच सु हुमो पणु वसंतो ॥६४॥ पण दो खीण दु जोगी, णुदीरगु अजोगि थोव उव संता ॥ संख गुण खीण सुहुमा, निअट्टि अपुव्व सम अहिआ ॥६५॥ जोगि अ पमत्त इयरे,संख गुणादेस सासणा मीसा ॥ अविरइ अजोगि मिछा,असंख चउरोदुवेणंता ॥ ६६ ॥ उवसम खय मीसोदय, परिणामा दु नव छारइगवीसा ॥ तिअ भेअसन्नि वाइअ, सम्मं चरणं पढम भावे ॥६७॥ बीए केवल जुअलं, सम्मं दाणाइ लद्धि पण चरणं ॥ तइए सेसुव ओगा, पण लद्धी सम्म विरइ दु

गं ॥ ६८ ॥ अन्नाण मसिद्धत्ता, संजम लेसा कसाय गइ वेआ ॥ मिच्छे तुरिए भव्वा, भव्वत्त जिअत्त परिणामे ॥ ६९ ॥ चउ चउ गईसु मीसग, परिणामुदएहिं चउसु खइएहिं ॥ उवसम जुएहिं वा चउ, केवलि परिणामुदय खइए ॥ ७० ॥ खय परिणामे सिद्धा, नराण पण जोगु वसम सेढीए ॥ इअ पनर संनिवाइअ, भेआ वीसं असंभविणो ॥७१॥ मोहो वसमो मीसो, चउघाइसु अठ कम्मसु असेसा ॥ धम्माइ पारिणामिअ, भावे खंधा उदइ एवि ॥ ७२ ॥ सम्माइ चउ सु तिग चउ, भावा चउ पणु वसामगुवसंते ॥ चउखीण पुव्वे ति, न्निसेस गुण ठाणगे गजिए ॥७३॥ संखिज्जेग मसंखं, परित्तजुत्त निअ पय जुअं तिविहं ॥ एव मणंतंपि तिहा, जहन्न मज्जुक्कसा सव्वे ॥ ७४ ॥ लहु संखिज्जं दुच्चिअ, अउ परं मज्झिमंतु जागुरुअं ॥ जंबूदीवपमाणय, चउपल्ल परूवणाइ इमं ॥७५॥ प ल्लाणवठिअ सिला, ग पडिसिलागा महासिलागक्का ॥ जोअण सहसो गाढा,

सवेइ अंता ससिह नरिआ ॥७६॥ तो दीवुदहिसु इक्कि,क्क सरिसवं खीवि अ निहिए पढमे ॥ पढमं व तदंतं चिअ,पुण नरिए तंमि तह खीणे ॥७७॥ खिप्प इ सिलाग पल्ले,गु सरिसवोइय सिलाग खिवणेणं ॥ पुन्नो बीउ अ तउ, पुव्वंपि व तंमि उद्धरिए ॥७८॥ खीणे सिलागि तइए, एवं पढमेहि बीअयं नरसु ॥ ते हिअ तइअं तेहिअ, तुरिअंजा किरपुन्ना चउरो ॥ ७९ ॥ पढमति पल्लुद्धरिआ, दीवुदही पल्ल चउ सरिस वाय ॥ सव्वो वि एस रासी,रूवूणो परमसंखिज्जं ॥८०॥ रूव जुअंतु परित्ता, ऽसंखं लहु अस्सरासि अब्भासे ॥ जुत्ता संखिज्जं लहु, आवलिआ समय परिमाणं ॥८१॥ बि ति चउ पंचम गुणणे, कम्मासग संख पढम चउ सत्त ॥ णंता ते रूवजुआ, मज्झारूवूण गुरुपच्छा ॥ ८२ ॥ इय सुत्तुत्तं अन्ने, वग्गिअ मिक्कसि चउत्थय मसंखं ॥ होइ असंखासंखं, लहुरूवजुअं तु तं मज्झं ॥८३॥ रूवूण माइमं गुरु, तिवग्गिउं तत्थिमे दसक्खेवे ॥ लोगागासपए

सा, धम्माधम्मेगजिअ देसा ॥८४॥ ठिइ बंधज्झवसाया, अणुभागा जोग छेअ
पलिभागा ॥ दुण्हय समाण समया, पत्तेअ निगोअए खिवसु ॥ ८५ ॥ पुण तं
मि ति वग्गिअए, परित्तणंत लहु तस्स रासीणं ॥ अब्भासे लहु जुत्ता, अंतं
अभव्व जिअमाणं ॥८६॥ तव्वग्गे पुण जायइ, णंता णंत लहु तंच तिक्खुत्तो ॥
वग्गसु तह विनतं हो,इ णंत खेवे खिवसु छ इमे ॥८७॥ सिद्धा निगोअ जीवा,
वणस्सई काल पुग्गला चेव ॥ सव्व मलोग नहं पुण, तिवग्गिउं केवल दुगंमि
॥८८॥ खित्ते णंताणंतं, हवेइ जिठं तु ववहरइ मज्झं ॥इय सुहमछ विआरो, लि
हिउ देविंदसूरीहिं ॥ ८९ ॥ इति षडशीतिकाख्यश्चर्तुथः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥
॥ ४ ॥ अथ शतकनामा पंचमः कर्मग्रंथः प्रारभ्यते ॥ नमिअ जिणं
धुव बंधो, दय सत्ता धाइ पुन्न परिअत्ता ॥ सेअर चउह विवागा, वुछं
बंधविह सामी अ ॥ १ ॥ वन्न चउ तेअ कम्मा, गुरु लहु निमिणो वघाय

न्नय कुडा ॥ मिछ कसाया वरणा, विग्घं धुवबंधि सगचत्ता॥२॥तणु वंगा गिइ संघयणा जाइ गइ खगइ पुव्वि जिणु सासं ॥ उज्जो आयव परघा, तसवीसा गोअ वेयणियं ॥३॥ हासाइ जुअल डुग वे,अ आउ तेउत्तरी अधुव बंधो ॥ न्नंगा अणाइ साई, अणतं संतुत्तरा चउरो ॥४॥ पढम विआ धुव उदइसु, धुवबंधिसु तइअ वज्ज न्नंगतिगं ॥ मिछंमि तिन्नि न्नंगा, डुहावि अधुवा तुरिअ न्नंगा ॥५॥ निमिण थिर अथिर अगुरुअ, सुह असुहं तेअ कम्म चउवन्ना ॥ नाणंतराय दंसण, मिछं धुव उदय सगवीसा ॥६॥ थिर सुन्न अर विणु अधुव, बंधी मिछ विणु मोह धुवबंधी ॥ निद्दोव घाय मीसं, सम्मं पण नवइ अधुवुदया ॥७॥ तस वन्न वीस सगते,अ कम्म धुव बंधि सेस वेय तिगं ॥ आगिइ तिग वेअणिअं, डु जुअल सग उरल सास चऊ ॥८॥ खगई तिरि डुग नीअं, धुव सत्ता सम्ममी स मणुअ डुगं ॥ विउव्विकार जिणाउं, हारस गुच्चा अधुवस

त्ता ॥९॥ पढम तिगुणेसु मिछं, निअमा अजयाइ अठ गे नजं ॥ सासाणे ख
लु सम्मं, सत्तं मिछाइ दसगेवा ॥१०॥ सासण मीसेसु धुवं, मीसं मिछाइ नव
सु नयणाए ॥ आइ छुग अण नियमा, नइआ मीसाइ नवगम्मि ॥११॥ आ
हार सत्तगं वा, सब्ब गुणे बि ति गुणे विणा तिछं ॥ नो नय संते मिछो, अंत
मुहुत्तं नवे तिछे ॥१२॥ केवल जुअला वरणा, पण निद्दा बारसाइम कसाया
॥ मिछंति सब्ब घाई, चउ नाण ति दंसणा वरणा ॥१३॥ संजलण नो कसाया,
विग्घं इअ देस धाइअ अघाइ ॥ पतेअ तणु ठाऊ, तस वीसा गोअ छुग व
ण्ा ॥१४॥ सुर नर तिगुच्च सायं, तस दस तणु वंग वइर चउरंसं ॥ परघासग
तिरिआऊ, वन्न चउ पणिंदि सुनखगइ ॥१५॥ बायाल पुन्न पगइ, अपढम
संठाण खगइ संघयणा ॥ तिरि छुग असाय नीउं, वघाय इग विगल निरय
तिगं ॥१६॥ थावर दस वन्न चउ,क्क घाय पणयाल सहिअ बासीई ॥ पाव पय

डित्ति दोसु वि, वन्नाइगहा सुहा असुहा ॥१७॥ नाम धुव बंधि नवगं, दंसण
पण नाण विग्घपरघायं ॥ भय कुछ मिछ सासं, जिण गुण तीसा अपरियत्ता
॥१८॥ तणु अठ वेअ दु जुअल, कसाय उज्जोअ गोय दुग निद्दा ॥ तस वीसा
उ परित्ता, खित्तविवागाणुपुव्वीउ ॥ १९ ॥ घणघाइ दु गोअ जिणा, तसिअर
तिगसुभग दुभग चउ सासं ॥ जाइ तिग जिअ विवागा, आऊ चउरो भव वि
वागा ॥ २० ॥ नाम धुवोदय चउ तणु, वघाय साहारणियजोअतिगं ॥ पु
ग्गल विवागि बंधो, पयइ ठिइ रस पएसत्ति ॥ २१ ॥ मूल पयडीण अड स,
त्त छेग बंधेसु तिन्नि भूगारा ॥ अप्पतरा तिअ चउरो, अवठिआ नहु.अवत्त
व्वो ॥२२॥ एगादहिगे भूउ, एगाई ऊणगम्मि अप्पतरो ॥ तम्मत्तो अवठिय
उ, पढमे समए अवत्तव्वो ॥ २३ ॥ नव छ चऊदंसे दुदु, ति दु मोहे दु इगवीस
सत्तरस ॥ तेरस नव पण चउ ति दु, इक्को नव अठ दस दुन्नि ॥२४॥ ति पण

ठ अठ नवहिया, वीसा तीसेगतीस इग नामे ॥ छस्सग अठ तिबंधो, सेसे
सु ठाणमिक्किक्कं ॥२५॥ वीसयर कोमि कोडी, नामे गोए य सत्तरी मोहे ॥ ती
सयर चउसु उदही, निरय सुराउंमि तित्तीसा ॥२६॥ मुत्तूअ कसाय ठिइ, बार
मुहुत्ता जहन्न वेयणिए ॥ अठ ठ नाम गोए, सु सेसएसु मुहुत्तं तो ॥२७॥ वि
ग्घा वरण असाए, तीसं अठार सुहुम विगल तिगे ॥ पढमा गिइ संघयणे, द
स इसु चरिमेसु इग वुड्ढी ॥२८॥ चालीस कसाएसु, मिउ लहु निद्धुण्ह सुरहि
सिय महुरे ॥ दसदो सड्ढ समहिया, ते हालिदं बिलाईणं ॥२९॥ दस सुह विह
गइ उच्चे, सुरदुग थिर छक्क पुरिस रइ हासे ॥ मिछे सत्तरि मणु दुग, इत्थी सा
एसु पसरस ॥३०॥ भय कुछ अरइ सोए, विउव्वि तिरि उरल निरय दुग नीए॥
तेअ पण अथिर छक्के, तस चउ थावर इग पणिंदि ॥ ३१ ॥ नपु कुखगइ सा
सचउ, गुरु कक्खडरुक्ख सीय दुग्गंधे॥वीसं कोडा कोडी, एवइआ बाह वाससया

॥३२॥ गुरु कोडि कोडि अंतो, तित्थाहाराण भिन्न मुहु बाहा ॥ लहु ठिइ सं
ख गुणूणा, नर तिरियाणाउ पल्ल तिगं ॥३३॥ इग विगल पुव्व कोडी, पलिया
संखंस आउ चउ अमणा ॥ निरुवक्कमाण छमासो, अबाह सेसाण भवंतंसो ॥
॥३४॥ लहु ठिइ बंधो संजलण लोह पण विग्घ नाण दंसेसु ॥ भिन्न मुहुत्तं
ते अट्ठ जसुच्चे बारसय साए ॥ ३५ ॥ दो इग मासो पक्खो, संजलण तिगे पुम
ट्ठ वरिसाणि ॥ सेसाणुक्कोसाउ, मिच्छत्तठिइ ए जलद्धं ॥३६॥ अय मुक्कोसो गिं
दिसु, पलियाऽसंखं सहीण लहु बंधो ॥ कमसो पणवीसाए, पन्नासय सहस
संगुणिउ ॥३७॥ विगल असन्निसु जिट्ठो, कणिट्ठउ पल्लसंख भागूणो ॥सुर नि
रयाउ समादस, सहस्स सेसाउ खुड्ड भवं ॥३८॥ सव्वाणवि लहु बंधे, भिन्न मु
हु अ बाह आउ जिट्ठेवि ॥ केइ सुराउ समजिण, मंत मुहु बिंति आहारं ॥
॥३९॥ सत्तरस समहिआ किर, इग आणु पाणंमि हुंति खुड्डभवा ॥ सगतीस स

य तिहुत्तर, पाणू पुण इग मुहुत्तंमि ॥४०॥ पणसठि सहस पण सय, छत्तीसा इग मुहुत्त खुड्डभवा ॥ आवलियाणं दोसय, छप्पन्ना एग खुड्डभवे ॥४१॥ अ विरय सम्मो तित्थं, आहार दुगा मराउ अपमत्तो ॥ मिच्छादिट्ठी बंधइ, जिठ ठिइ सेस पयडीणं ॥४२॥ विगल सुहुमाउग तिगं, तिरि मणुयाऽसुर विउव्वि निरय दुगं ॥ एगिंदि थावरा यव, आईसाणा सुरुक्कोसं ॥४३॥ तिरिउरल दुगु जोअं, छिवठ सुरनिरय सेसचउ गइआ ॥ आहार जिण मपुव्वो, नियट्टि संजलण पुरिस लहू ॥४४॥ सायजसु च्चावरणा, विग्घं सुहुमो विउव्वि छ असन्नि ॥ सन्नीविआ उ बायर, पज्जेगिंदीउ सेसाणं ॥ ४५ ॥ उक्कोस जहन्नीयर, भंगासाई अणाइ धुव अधुवा ॥ चउहा सग अजहन्ना, सेसतिगे आउ चउसु दुहा ॥४६॥ चउभेउ अजहन्नो, संजलणा वरण नवग विग्घाणं ॥ सेस तिगिसाइ अधुवो, तह चउहा सेस पयडीणं ॥४७॥ साणाइ अपुव्वंतो, अयरंतो कोडि

कोडिउ नहिगो ॥ बंधो नहु हीणो नय, मिच्छे अविरयसन्निंमि ॥४८॥ जइ लहु बंधो बायर, पज्ज असंख गुण सुहुम पज्जहिगो ॥ एसि अपज्जाण लहू, सुहुमे अर अपज्ज पज्ज गुरु॥४९॥लहु बिअ पज्ज अपज्जो,अपज्जि अर बिअ गुरु अहिगो एवं ॥ ति चउ असन्निसु नवरं,संख गुणा बिअ अमण पज्जे ॥५०॥ तो जइ जिठो बंधो, संख गुणो देस विरय हस्सिअरो ॥ सम्म चउ सन्नि चउरो, ठिइ बंधाणु कम संखगुणा ॥ ५१ ॥ सव्वाणवि जिठठिइ, असुहा जं साइ संकिलेसेणं ॥ इअरावि सोहिउ पुण, मुत्तं नर अमर तिरिआउ ॥५२॥सुहुम निगोआइ खण,प्पजोग बायरपविगल अमणमणा ॥ अपज्ज लहु पढम उ गुरु, पजहस्सि अरो असंखगुणो ॥ ५३ ॥ असमत्त तमुक्कोसो, पज्ज जहन्नअर एव ठिइ ठाणा ॥ अपजेयर संख गुणा, परमपज बिए असंख गुणा ॥ ५४ ॥ पइखिण मसंख गुणविरि, य अपज्ज ठिइ असंख

लोग समा ॥ अज्झवसाया अहिया, सत्तसु आउसु असंख गुणा ॥ ५५ ॥ अथोत्कृष्टस्थित्यंतरबंधमाह ॥ तिरि निरय तिजोयाणं, नरजवजुअ सच उपह्व तेसठं ॥ थावर चउ इग विगला, यवेसु पणसीइ सय मयरा ॥ ५६ ॥ अपढम संघयणा गिइ, खगई अण मिब्ब डुजग थीण तिगं ॥ निअ नपु इब्बि डुतीसं, पणिंदि सुअबंध ठिइ परमा ॥५७॥ विजयाइसु गेविज्जे, तमाइ दहि सय डुतीस तेसठं ॥ पणसीइ सयय बंधो, पह्वतिगं सुर विउव्वि डुगे ॥ ५८ ॥ समया दसंख कालं, तिरि डुग नीएसु आउ अंत मुहू ॥ उरलि असंख पर ट्टा, साय ठिइ पुव्व कोडूणा ॥ ५ए ॥ जलहि सयं पणसीयं, परघुस्सासे पणिंदि तस चउगे ॥ बत्तीसं सुह विहगइ, पुम सुजग तिगुच्च चउरंसे ॥६०॥ असुहख गइ जाइ आगिइ, संघयणा हारनिरयुजो य डुगं ॥ थिर सुज जस थावर द स, नपु इब्बी डु जुअल मसायं ॥६१॥ समयादंत मुहुत्तं, मणु डुग जिण वइर

उरलुवंगेसु ॥ तित्ती सयरा परमो, अंत मुहू लहु विआउ जिणा ॥६२॥ इति स्थितिबंधः ॥ तिव्वो असुह सुहाणं, संकेत विसोहि उविवज्जयउ ॥ मंदरसोगिरि महिरय, जल रेहा सरिस कसाएहिं॥६३॥चउ ठाणाइ असुहो, सुहन्नहा विग्घ देस आवरणा ॥ पुम संजलणिग ङुति चउ, ठाण रसा सेस ङुगमाइ॥ ॥६४॥ निबुइक्खुरसो सहजो, ङु ति चउ भाग कढि इक्क भागं तो ॥इग ठाणाई असुहो, असुहाण सुहो सुहाणं तु ॥६५॥ तिव्वमिग थावरायव, सुर मिछा विगल सुहुम निरय तिगं ॥ तिरि मणुआउ तिरिनरा, तिरि ङुग छेवठ सुर निरया ॥६६॥ विउवि सुराहारग ङुग, सुख गइ वन्न चउ तेय जिण सायं॥समचउ परघा तस दस, पणिंदि सासु च्च खवगाउ ॥६७॥ तमतमगा उज्जोयं, सम्मसुरा मणुय उरल ङुग वइरं ॥ अपमत्तो अमराउ, चउ गइ मिछाउ सेसाणं ॥६८॥ थीण तिगं अण मिछं, मंद रसं संजमुम्मुहो मिछो ॥ बिय तिय

कसाय अविरय,देस पमत्तो अरइ सोए॥६९॥अपमाइ हारग दुगं,दुनिद्द असु
वन्न हासरइ कुच्छा ॥ भय मुवघाय मपुव्वो, अनियट्टि पुरिस संजलणे ॥ ७० ॥
विग्घावरणे सुहुमो, मणु तिरिआ सुहुम विगल तिग आउ ॥ वेउव्वि छक्क म
मरा, निरया उज्जोय उरल दुगं ॥७१॥ तिरि दुग नियं तमतमा, जिण मविर
य निरय विणिग थावरयं ॥ आसुहु मायवसम्मो,वसाय थिर सुह जसा सियरा
॥७२॥ तस वन्न तेअचउ मणु, खगइ दुग पणिंदि सास परघुच्चं ॥ संघयणा गि
इ नपु थी, सुभगि अरति मिछ चउ गइआ ॥७३॥ चउ तेअ वन्न वेअणि,अ
नाम णुक्कोस सेस धुवबंधी ॥ घाईणं अजहन्नो, गोए दुविहो इमो चउहा॥७४॥
सेसंमि दुहा इग दुग, णुघाइ जा अनवणंत गुणिआणू ॥ खंधा उरलो चि अ
व,ग्गणाउ तहअगहणतिरिया ॥७५॥ एमेव विउव्वाहा, र तेअ नासाणु पाण
मण कम्मे ॥ सुहुमा कमावगाहो,ऊणूणं गुल असंखंसो ॥७६॥ इक्कि हिया

सिद्धा, णंतंसो अंतरेसु अग्गहणा ॥ सव्वत्थ जहन्नुचिया, नियणंतं साहिआ जिट्ठा ॥७७॥ अंतिम चउ फास दुगंध पंचवन्नरस कम्म खंध दलं ॥ सव्व जियणंत गुण रस, अणुजुत्त मणंतय पएसं ॥ ७८ ॥ एग पएसो गाढं, निअ सव्व पएसउ गहेइ जिउ ॥ थोवो आउ तदंसो, नामे गोए समो अहिउ ॥७९॥ विग्घावरणे मोहे, सव्वोवरि वेअणीइ जेणप्पे ॥ तस्स फुडत्तं न हवइ, ठिई विसेसेण सेसाणं ॥८०॥ निअ जाइ लद्ध दलिआ, णंतंसो होई सव्व घाईणं ॥ बज्झंतीण विभजइ, सेसं सेसाण पइ समयं ॥ ८१ ॥ सम्मदेस सव्व विरइ, उअण विसंजोअ दंस खवगेअ ॥ मोह सम संत खवगे, खीण सजोगि अर गुण सेढी ॥८२॥ गुणसेढी दल रयणा, णुसमयमुदया दसंख गुणणाए ॥ एअगुणा पुण कमसो, असंख गुण निज्जरा जीवा ॥ ८३ ॥ पलिआ संखंसमुहू, सासण इअर गुण अंतरं हस्सं ॥ गुरु मिच्छि बे छसठी, इयरगुणे पुग्गलद्धंतो ॥८४॥ उ

धार अद्ध खित्तं, पलिय तिहा समय वाससय समए ॥ केसव हारो दीवो, द
हि आउ तसाय परिमाणं ॥ ८५ ॥ दव्वे खित्ते काले, भावे चउह दुह बायरो सु
हुमो ॥ होइ अणंतुस्सप्पिणि, परिमाणो पुग्गल परट्टो ॥ ८६ ॥ उरलाइ सत्त
गेणं, एग जिउ मुअइ फुसिअ सव्व अणु ॥ जित्तिअ कालिसथूलो, दव्वे सुहुमो
सगन्नयरा ॥८७॥ लोग पएसो सप्पिणि, समयाअणुभाग बंध ठाणा य ॥
जह तह कम मरणेणं, पुठा खित्ताइं थूलियरा ॥८८ ॥ अप्पयर पयडिबंधी, उ
क्कड जोगी अ सन्नि पजत्तो ॥ कुणइ पए सुक्कोसं, जहन्नयं तस्स वच्चासे॥८९॥
मिछ अजय चउ आउ, बि ति गुण विणुमोहि सत्त मिछाइ ॥ छण्हं सतरस सु
हुमो, अजया देसा बि ति कसाए ॥९०॥ पण अनिअट्टि सुखगई, नराउ सुर
सुभग तिग विउव्वि दुगं ॥ सम चउरंस मसायं, वइरं मिछो व सम्मोवा ॥९१॥
निद्दा पयला दु जुअल, भय कुछा तिछ संमगो सुजई ॥ आहार दुगं सेसा,

उक्कोस पएस गामिड्ढो ॥९२॥ सुमुणी दुन्नि असन्नी, नरय तिग सुराउ सुर वि
उव्वि दुगं ॥ सम्मो जिणो जहन्नं, सुहुम निगोआइ खणि सेसा ॥९३॥ दंसण
छग भय कुच्छा, बि ति तुरिअ कसाय विग्घ नाणाणं ॥ मूल छगेणुक्कोसो, चउ
ह दुहा सेसि सव्वहं ॥९४॥ सेढि असंखिज्जंसे, जोगट्ठाणाणि पयडि ठिइ भे
आ॥ठिइ बंधज्झवसाया, अणुभागठाण असंख गुणा॥९५॥तत्तो कम्म पएसा,
अणंत गुणिया तउ रसच्छेया ॥ जोगा पयडि पएसं, ठिइ अणुभागं कसाया
उ ॥९६॥ चउदस रज्जू लोगो, बुद्धिकउ सत्त रज्जु माण घणो ॥ तद्दीहेग पए
सा, सेढी पयरो अ तव्वग्गो ॥९७॥ अण दंस नपुंसि त्थी, वेअ छक्कं च पुरिस
वेअं च ॥ दोदो एगं तिरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥९८॥ अण मिच्छ मीस
सम्मं, तिआउ इग विगल थीण तिगु जोअं ॥ तिरि निरय थावर दुगं, साहा
रायव अड नपुंसि त्थी ॥९९॥ छग पुम संजलणा दो, निद्दा विग्घा वरण खए

नाणी॥देविंदसूरि लिहिअं,सयगमिणं आय सरणठा ॥ १०० ॥ इति शतकना
मा पंचमः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ५ ॥
॥ अथ श्री सप्ततिकानामा षष्ठः कर्मग्रंथः प्रारभ्यते॥ सिद्धपएहिं महत्थं, बंधोद
य संत पयडि ठाणाणं ॥ वुच्छं सुण संखेवं, नीसंदं दिठि वायस्स ॥१॥ कइ बंधं
तो वेअइ, कइ कइ वासंत पयडि ठाणाणि ॥ मूलुत्तर पगईसु, भंग विगप्पा मु
णेअव्वा ॥२॥ अठ विह सत्त छव्वं, धएसु अठे च उदय संतंसा ॥ एग विहे ति
विगप्पा, एग विगप्पा अबंधंमि ॥३॥ सत्तठ बंध अठुद,यसंत तेरस सुजीव ठा
णेसु ॥ एगंमि पंच भंगा, दो भंगा हुंति केवलिणो ॥४॥ अठसु एग विगप्पो, छ
स्सु विगुण सन्निएसु छ विगप्पा ॥ पत्तेयं पत्तेयं, बंधोदय संत कम्माणं ॥ ५ ॥
पंच नव दुन्नि अठा, वीसा चउरो तहेव बायाला ॥ दुन्निय पंच य भणिया, प
यडीउ आणुपुव्वीए ॥६॥ बंधोदय संतंसा, नाणावरणं तराइए पंच ॥बंधो चरमे

वि उदय, संतंसा हुंति पंचेव॥७॥बंधस्स य संतस्स य, पगइ ठाणाइ तिन्नि तु
ल्लाइं ॥ उदयठाणाइ डुवे, चउ पणग दंसणा वरणे ॥८॥ बीयावरणे नव बं, ध
एसु चउ पंच उदय नव संता ॥ छच्चउ बंधे चेवं, चउ बंधुदये छ लंसाय ॥ ९ ॥
उवरय बंधे चउ पण, नवंस चउ रुदय छच्च ऊसंता ॥ वेयणियाउ ञ गोए, वि
भज मोहं परं वुछं ॥१०॥ गोअम्मि सत्त भंगा, अठय भंगा हवंति वेयणिए
॥ पण नव नव पण भंगा, आउ चउक्केवि कमसोउ ॥ ११ ॥ बावीस इक्कवीसा,
सत्तरसं तेरसे व नव पंच ॥ चउ तिग दुगं च इक्कं,बंधठाणाणि मोहस्स ॥१२॥
एगं च दोव चउरो, एत्तो एगाहिआ दसुक्कोसा ॥ उहेण मोहणिज्जे, उदए ठ
णाणि नव हुंति ॥१३॥ अठय सत्तय छच्चउ, तिग दुग एगाहिआ भवे वीसा ॥
तेरस बारिक्कारस, इत्तो पंचाइ एगूणा ॥ १४ ॥ संतस्स पयम्डिठाणा, णि ताणि
मोहस्स हुंति पन्नरस ॥ बंधोदय संते पुण, भंग विगप्पे बहू जाण ॥१५॥छब्बा

वीसे चउ इग, वीसे सत्तरस तेरसे दोदो ॥ नव बंधगे वि दुणिउ, इक्किक्क अउ परं नंगा ॥१६॥ दस बावीसे नव इग, वीसे सत्ताइ उदय कम्मंसा ॥ उाइअ नव सत्तरसे, तेरं पंचाइ अठेव ॥ १७॥ चत्तारि आइ नव बंध, एसु उक्कोस सत्त मुदयंसा ॥ पंच विह बंधगे पुण, उदयो दुण्हं मुणेअव्वो ॥१८॥ इत्तो चउ बंधाइ, इक्किक्कुदया हवंति सव्वे वि ॥ बंधो चरमे वि तहा,उदया नावे विवाहुजा ॥१९॥ इक्कग उक्किक्कारस, दस सत्त चउक्क इक्कगं चेव ॥ एए चउवीस गया, बार दुगिक्कम्मि इक्कारा ॥२०॥ नव तेसीइ सएहिं, उदय विगप्पेहि मोहिआ जीवा ॥ अउणुत्तरि सीआला, पयविंद सएहि विन्नेआ ॥२१॥ नव पंचाण उसए, उदय विगप्पेहि मोहिआ जीवा ॥ अउणत्तरि एगुत्तरि, पय विंद सएहि विन्नेआ ॥२२॥ तिन्नेवय बावीसे, इगवीसे अठवीस सत्तरसे ॥ उच्चेव तेर नव बंधएसु पंचेव ठाणाणि ॥२३॥ पंचविह चउविहेसु, उ उक्क सेसेसु जाण पंचेव॥

पत्तेअं पत्तेअं, चत्तारि अ बंधु वुछेए ॥२४॥ दस नव पन्नरसाई, बंधोदय संत पयडि ठाणाणि ॥ नणिआणि मोहणिजे, इत्तो नामं परं वुछं ॥२५॥ तेवीस पन्नवीसा, छब्बीसा अठवीस गुणतीसा ॥ तीसेगतीस मेगं, बंध ठाणाणि नामस्स ॥२६॥ चउ पणवीसा सोलस, नव बाण उई सयाय अडयाला ॥ एयालुत्तरछया, लसयाइक्किक्कि बंध विही ॥ २७ ॥ वीसिगवीसा चउवी,स गाउ एगाहियाय इगतीसा ॥ उदय ठाणाणि नवे, नव अठय हुंति नामस्स ॥२८॥ इक बयालिकारस, तित्तीसा छस्सयाणि तित्तीसा ॥ बारस सत्तरससया, णहि गाणि बिपंच सीईहिं ॥२९॥ अउणत्ती सिक्कारस, सयाणि हिय सतर पंच सठीहिं॥ इक्किक पंच वीसा, दहुदयंतेसु उदयविही ॥३०॥ ति दुनउई गुण नउई, अडसी छलसी असीइ गुणसीई ॥ अठय छप्पन्नत्तरि, नव अठय नाम संताणि ॥ ३१॥ अठय बारस बारस, बंधोदय संत पयडि ठाणाणि ॥ उहेणाएसेणय, जह ज

हा संभवं विभजे ॥३२॥ नव पणगोदय संता, तेवीसे पण्णवीस छव्वीसे ॥ अठ
चउरठवीसे, नव सत्ति गुण तीस तीसंमि ॥३३॥ एगेगमेगतीसे, एगे एगुदय
अठ संतंमि ॥ उवरय बंधो दस दस, वेयग संतंमि ठाणाणि ॥३४॥ तिविगप्प
पगइ ठाणेहिं जीव गुणसन्निएसु ठाणेसु ॥ भंगापउंजियव्वा, जत्थ जहा संभ
वो भवइ ॥३५॥ तेरस सु जीव संखे, वएसु नाणंतराय तिविगप्पो ॥ इक्कंमिति
दु विगप्पो, करणं पइ इत्थ अविगप्पो॥३६॥तेरे नव चउ पणगं, नव सत्ते ग
म्मि भंगमिक्कारा ॥ वेअणिआउ गोए, विभज्जमोहं परं वुत्थं ॥३७॥ पज्जत्त
ग सन्निअरे, अठ चउक्कं च वेयणिय भंगा ॥ सत्तय तिगं च गोए, पत्तेअं जीव
ठाणेसु ॥३८॥ पज्जत्ता पज्जत्तग, समणा पज्जत्त अमण सेसेसु ॥ अठावीसं दस
गं, नवगं पणगं च आउस्स ॥३९॥ अठसु पंचसु एगे, एग दुगं दसय मोह
बंध गए ॥ तिग चउ नव उदय गए, तिग तिग पन्नरस संतंमि ॥४०॥ पण दु

ग पणगं पण चउ, पणगं पणगा हवंति तिन्नेव ॥ पण छप्पणगं छछ, प्पणगं अठ ठ दसगंति ॥४१॥ सत्तेव अपजत्ता, सामी सुहुमा य बायरा चेव ॥ विगि लिंदिआउ तिन्निउ, तहय असन्नी अ सन्नी अ ॥४२॥ नाणंतराय ति विहम, वि दससु दो हुंति दोसु ठाणेसु ॥ मिछा साणे बीए, नव चउ पण नवय संतं सा ॥४३॥ मिस्साइ नियट्टीउं, छ चउपण नवय संत कम्मंसा ॥ चउ बंध तिगे चउ पण, नवंसु दुसु जुअल छस्संता ॥४४॥ उवसंते चउपण नव, खीणे चउ रुदय छच्च चउसत्ता ॥ वेअणिअ आउ गोए, विभज्ज मोहं परं वुछं ॥४५॥ च उ छस्सु दुन्नि सत्तसु, एगे चउ गुणिसु वेअणि अ भंगा ॥ गोए पण चउ दो तिसु, एगठसु दुन्नि इक्कंमि ॥४६॥ अठछाहिगवीसा, सोलस वीसं च बारस छ दोसु ॥ दो चउसु तीसु इक्कं, मिछाइसु आउए भंगा ॥४७॥ गुणठाणगेसु अठ ग, इक्किक्कं मोह बंध ठाणं तु ॥ पंचानिअट्टि ठाणा, बंधोवरमो परं तत्तो ॥४८॥

सत्ताइ दसउ मिछे, सासायण मीसए नवुक्कोसो ॥ छाई नव उअ विरई, देसे पंचाइ अठेव ॥४९॥ विरए खउवसमिए, चउराई सत्त छच्च पुव्वंमि ॥ अनियट्टि बायरे पुण, इक्कोवदुवेव उदयंसा ॥५०॥ एगं सुहुम सरागो, वेएइ अ वेअगा भवे सेसा ॥ भंगाणं च पमाणं, पुव्वुद्दिठेण नायव्वं ॥५१॥ इक्कग छक्किक्कारि, इक्कारसइक्कारसेव नव तिन्नि ॥ एए चउवीस गया, बारदुगं पंच इक्कंमि ॥५२॥ बारस पणसठिसया, उदय विगप्पेहिं मोहिआ जीवा ॥ चुलसीई सत्तुत्तरि, पयविंद सएहि विन्नेआ ॥५३॥ अठग चउ चउ चउर, ठगाय चउरो अ हुंति चउवीसा ॥ मिछाइअ पुव्वंता, बारस पणगंच अनिअट्टी ॥५४॥ अठठीबत्तीसं, बत्तीसं सठि मेव बावन्ना ॥ चोआल दोसुवीसा, मिछामाईसु सामन्नं ॥५५॥ जोगोवउग लेसा, इएहिं गुणिआ हवंति कायव्वा ॥ जे जछ गुणठाणे, हवंति ते तछ गुणाकारा ॥५६॥ तिन्नेगे एगेगं, तिगमीसे पंच चउसु तिग पुव्वे ॥ इक्कार

बायरंमिउ, सुहुमो चउ तिन्नि उवसंते ॥ ५७ ॥ छन्नव छक्क तिग सत, दुगं दुगं तिग दुगं तिअठ चउ ॥ दुग छ चउ दुग पण चउ,दुग चउ चऊ पणग एग च उ ॥५८॥ एगेग मठ इगेग, मठछ छउमत्थ केवल जिणाणं ॥ एगं चउ एगं च उ,अठ चउ दुछक्क मुदयंसा ॥५९॥ चउ पणवीसा सोलस, नव चत्तालासयाय बाणउइ ॥ बत्तीसुत्तर छाया, लसया मिछस्स बंध विही ॥६०॥ अठसया चउ सठी, बत्तीस सयाइ सासणे भेआ ॥ अठावीसाईसु, सव्वाणठाहि छन्नउइ ॥६१॥ इग चत्ति गार बत्ती, छसय इगतिसिगार नव नउइ॥ सत्तरि गंसि गुत्ति स, चउदइगार चउसठि मिछदया ॥६२॥ बत्तीस दुन्नि अठय, बासीइ सयाय पंच नव उदया ॥ बारहिआ तेवीसं, बावन्निक्कारससयाय ॥६३॥ दो छक्क ठ च उक्कं, पण नव इक्कार छक्कगं उदया ॥ नेरइआइसु सत्ता,ति पंच इक्कारस चउक्कं ॥६४॥ इग विगलिंदिअ सगले, पण पंचय अठ बंध ठाणाणं॥पण छक्किक्कारुद

या,पण पण बारसय संताणि ॥६५॥ इय कम्मपगइ ठाणा,णि सुहु बंधुदय संत
कम्माणं॥गइआएहिं अठसु, चउप्पयारेण नेआणि॥६६॥गइ इंदिए अ काए,
जोए वेए कसाय नाणे अ ॥ संयम दंसण लेसा,नव संमे सन्नि आहारे ॥६७॥
संतपयं परूवणाया, दव्व पमाणं च खित्त फुसणा य ॥ कालंतरं च नावो, अप्पा
बहुयं च दाराइ ॥६७॥ उदयस्सुदीरणाए, सामित्ताउ नविज्जइ विसेसो॥मुत्तूणय
इगयालं, सेसाणं सव्व पयडीणं ॥६ए॥ नाणंतराय दसगं, दंसण नव वेयणिज्ज
मिछत्तं ॥ सम्मत्त लोन वेआ, उआणि नव नाम उच्चं च ॥७०॥ मणुयगइ जा
इ तस बा, यरं च पजत्त सुनग आइज्जं ॥ जसकित्ती तिछयरं, नामस्स हवंति
नव एया ॥७१॥ तिछयरा हारग विर, हिआउ अज्जेइ सव्व पयडीउ ॥ मिछत्तवे
अगोसा, साणो गुणवीस सेसाउ ॥७२॥ गयाल सेस मीसो, अविरय सम्मो
तियाल परिसेसा ॥ तेवन्न देस विरउ, विरउ सगवन्न सेसाउ ॥ ७३ ॥ इगु स

ठि मपमत्तो, बंधइ देवाउ अस्सइअरोवि ॥ अठावन्न मपुव्वो, उप्पन्नं वावि उ
वीसं ॥७४॥ बावीसा एगूणं, बंधइ अठारसंत अनिअठी ॥ सत्तर सुहुम स
रागो, सायममोहो सजोगित्ती ॥७५॥ एसोउ बंध सामि, त्त उहु गइ आइए
सुवि तहेव ॥ उहा उसा हिजाइ, जउ जहा पयम्मि सब्भावो ॥७६॥ तिठयर देव
निरिआ, उअंच तिसु तिसु गईसु बोधव्वं ॥ अवसेसा पयडीउ, हवंति सव्वासु
विगईसु ॥७७॥ पढम कसाय चउक्कं, दंसण तिग सत्तगा वि उवसंता ॥ अवि
रय सम्मत्ताउ, जाव नियठित्ति नायव्वा ॥७८॥ सत्तठ नवय पनरस, सोलस
अठारसे व इगुवीसा ॥ एगाहि दु चउवीसा, पणवीसा बायरे जाण ॥ ७९ ॥
सत्तावीसं सुहुमे, अठावीसं च मोहपयडीउ ॥ उवसंत वीअरागे, उवसंता हुं
ति नायव्वा ॥८०॥ पढम कसाय चउक्कं, इत्तो मिछत्त मीस सम्मत्तं ॥ अविरय
सम्मे देसे, पमत्ति अपमत्ति खीयंति ॥८१॥ अनिअट्टि बायरेथी,ण गिद्धि ति

ग निरय तिरिअ नामाउ ॥ संखिज्ज इमे सेसे, तप्पाउं गाउ खीयंति ॥८२॥ इ
त्तो हणइ कसाय, हगंपि पछा नपुंसगं इछी ॥ तो नोकसाय ढक्कं, बुभइ संज
लणकोहम्मि ॥८३॥ पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च बुहइ मायाए ॥ मायं
च बुहइ लोहे, लोहं सुहुमंपि तो हणइ ॥८४॥ खीण कसाय ड चरिमे, निदं प
यलं च हिणइ ढउमडो ॥ आवरणमंतराए, ढउमडो चरम समयंमि ॥८५॥
देवगइ सहगयाउ, ड चरिम समयम्मि नविअ खीअंति ॥ सविवागे अर ना
मा, नीआ गोअंपि तडेव ॥८६॥ अन्नयर वेअणिज्जं, मणुआउअ मुच्चगोअ
नवनामे ॥ वेएइ अजोगि जिणो, उक्कोस जहन्न मिक्कारे ॥८७॥ मणुअ गइ जा
इ तस बा,यरं च पजत्त सुन्नग आइज्जं ॥ जस कित्ती तिडयरं, नामस्स हवंति
नव एआ ॥८८॥ तच्चाणुपुव्वि सहिया, तेरस नव सिध्दिअस्स चरमंमि ॥ सं
तं सग मुक्कोसं, जहन्नयं बारस हवंति ॥८९॥ मणुअ गइ सहगयाउ, नव खि

त्त विवाग जिअ विवागाउ ॥ वेअणिअ अन्न रुख्वं, चरम समयंमि खीयंति ॥९०॥ अह सुइअ सयल जग सिह, र मरुअ निरुवम सहाव सिद्धि सुहं॥ अनियण मवाबाहं, तिरयणसारं अणुहवंति ॥९१॥ डुरहिगम निउण परम, ठ रुइर बहु भंग दिठि वायाउ ॥ अठा अणुसरिअवा, बंधोदय संत कम्मा णं ॥९२॥ जो जठ अपमिपुन्नो, अठो अप्पा गमेण बंधोति ॥ तं खमिऊण ब हुसुआ, पूरेऊणं परि कहंतु ॥ ९३ ॥ गाहग्गं सयरीए, चंद महत्तर मयाणु सारीए ॥ टीगाइ नियमिआणं, एगूणा होइ नउईउ ॥९४॥ ॥ इति श्री सप्ततिकानामा षष्ठः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥

अथ श्रीरत्नाकरसूरिकृतरत्नाकरपंचविंशिकाप्रारंभः ॥ उपजातिछंदः ॥ श्रेयः श्रियां मंगलकेलिसद्म, नरेंद्रदेवेंद्रनतांघ्रिपद्म॥सर्वज्ञ सर्वातिशयप्रधान, चिरं जय ज्ञानकलानिधान ॥ १ ॥ जगत्रयाधार कृपावतार, डुर्वारसंसारविकारवैद्य ॥

श्रीवीतराग त्वयि मुग्धभावा, द्विज्ञ प्रभो विज्ञपयामि किंचित् ॥ २ ॥ किं
बाललीलाकलितो न बालः, पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः ॥ तथा यथार्थं
कथयामि नाथ, निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे ॥ ३ ॥ दत्तं न दानं परिशीलितं च,
न शालि शीलं न तपोऽभितप्तम् ॥ शुभो न भावोऽप्यभवद्भवेऽस्मिन्, विभो
मया भ्रांतमहो मुधैव ॥ ४ ॥ दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्यम
होरगेण॥ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया, जालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वाम् ॥५॥
कृतं मयामुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेश सुखं न मेऽभूत् ॥ अस्मादृशां
केवलमेव जन्म, जिनेश जज्ञे भवपूरणाय ॥६॥ मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्तं, त्व
दास्यपीयूषमयूखलाभात् ॥ द्रुतं महानंदरसं कठोर, मस्मादृशां देव तदश्मतो
ऽपि ॥७॥ त्वत्तः सुदुःप्रापमिदं मयाप्तं, रत्नत्रयं भूरि भवभ्रमेण ॥ प्रमादनिद्रा
वशतो गतं तत् कस्याग्रतो नायक पूत्करोमि ॥ ८ ॥ वैराग्यरंगः परवंचनाय, ध

र्मोपदेशो जनरंजनाय ॥ वादाय विद्याध्ययनं च मेऽभूत्, कियद्ब्रुवे हास्यक
रं स्वमीश ॥९॥ परापवादेन मुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणेन ॥ चेतः परा
पायविचिन्तनेन, कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहं ॥१०॥ विडंबितं यत्स्मरघस्मरा
र्त्ति,दशावशात्स्वं विषयांधलेन ॥ प्रकाशितं तद्भवतो ह्रियैव, सर्वज्ञ सर्वं स्वय
मेव वेत्सि ॥११॥ ध्वस्तोऽन्यमंत्रैः परमेष्ठिमंत्रः, कुशास्त्रवाक्यैर्निहितागमोक्तिः॥
कर्त्तुं वृथा कर्म कुदेवसंगा, दवांछि हे नाथ मतिभ्रमो मे ॥१२॥ विमुच्य दृग्ल
क्ष्यगतं भवंतं, ध्याता मया मूढधिया हृदंतः ॥ कटाक्षवक्षोजगभीरनाभि, कटी
तटीयाः सुदृशां विलासाः ॥१३॥ लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन,यो मानसे रागलवो
विलग्नः ॥ न शुद्धसिद्धांतपयोधिमध्ये, धौतोऽप्यगात्तारक कारणं किम् ॥ १४॥
अंगं न चंगं न गणो गुणानां, न निर्मलः कोपि कलाविलासः ॥ स्फुरत्प्रधान प्र
भुता च कापि, तथाप्यहंकारकदर्थितोऽहं ॥१५॥ आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि,

गतं वयो नो विषयाभिलाषः ॥ यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महामोह
विडंबना मे ॥ १६ ॥ नाऽत्मा न पुण्यं न भवो न पापं, मया विटानां कटुगीरपी
यं ॥ अधारि कर्णे त्वयि केवलार्के, परिस्फुटे सत्यपि देव धिङ् माम् ॥१७॥ न दे
वपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः ॥ लब्ध्वापि मानुष्यमिदं
समस्तं, कृतं मयाऽरण्यविलापतुल्यम् ॥१८॥ चक्रे मया सत्स्वपि कामधेनु, कल्प
द्रुचिंतामणिषु स्पृहार्त्तिः ॥ न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि, जिनेश मे पश्य विमूढ
भावं ॥ १९ ॥ सद्भोगलीला न च रोगकीला, धनागमो नो निधनागमश्च ॥
दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिंति नित्यं मयकाऽधमेन ॥२०॥ स्थितं न सा
धोर्हृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोऽर्जितं च ॥ कृतं न तीर्थोद्धरणादि कृत्यं,
मया मुधा हारितमेव जन्म ॥ २१ ॥ वैराग्यरंगो न गुरूदितेषु, न दुर्जनानां
वचनेषु शांतिः ॥ नाऽध्यात्मलेशो मम कोपि देव, तार्यः कथंकारमयं भवा

ब्धिः ॥ २२ ॥ पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य, मागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये ॥
यदीदृशोहं मम तेन नष्टा, भूतोद्भवद्भाविभवत्रयीश ॥ २३ ॥ किंवा मुधाऽहं ब
हुधा सुधाभुक्, पूज्य त्वदग्रे चरितं स्वकीयं ॥ जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप,
निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ॥२४॥ शार्दूलविक्रीडितं छंदः ॥ दीनोद्धारधुरंधरस्त्व
दपरो नास्ते मदन्यः कृपा, पात्रं नात्रजने जिनेश्वर तथाप्येतां न याचे श्रियम् ॥
किंत्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिवं, श्रीरत्नाकरमंगलैकनिलयश्रेयस्करं
प्रार्थये ॥ २५ ॥ इति श्रीवीतरागस्तोत्रं समाप्तम् ॥ इति श्रीरत्नाकरसूरिकृता
रत्नाकरपंचविंशतिका समाप्ता ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ अर्थ ॥ ज्ञान अने आनंद तेहिज स्वरूप छे जेनुं, वली औदारिकादिक रूपथकी रहित छे, तथा रक्षक छे अने सर्वथी उत्कृष्ट तेज छे जेनुं एवा श्रीपरमेश्वर परमात्माने म्हारो नमस्कार हो ॥ १ ॥ ॥ जेना स्वरूपने ध्यानरूपिणी दृष्टियें करीनें मननी शुद्धिने धरता योगीश्वर देखे छे, ते परमेश्वरने हुं स्तवुं छुं ॥ २ ॥ ॥ सर्व प्राणी चिदानंदस्वरूपाय, रूपातीताय तायिने ॥ परमज्योतिषे तस्मै, नमः श्रीपरमात्मने ॥ १ ॥ पश्यन्ति योगिनो यस्य, स्वरूपं ध्यानचक्षुषा ॥ दधाना मनसः शुद्धिं, तं स्तुवे परमेश्वरम् ॥ २ ॥ जन्तवः सुखमिछन्ति, तुः सुखं तछिवे जवेत् ॥ तध्यानात्तन्मनः शुध्या, कषायविजयेन सा ॥ ३ ॥ सत्विंद्रिय मात्र सुखनी वांछा करे छे ते संपूर्ण सुख तो जीवने मोक्षमां छे, ते मोक्षनी प्राप्ति ध्यानथी थाय छे, अने ध्यान मननी शुद्धिथी थाय छे, अने मनःशुद्धि कषाय जीतवाथी थाय छे ॥ ३ ॥ ॥ ते कषायनुं जीतवुं पांच इंद्रियना जीतवाथी थाय छे, अने ते इंद्रियजय रूडा आचारथी थाय छे, ते रूडो आचार जला उपदेशथी होय छे, ते उपदेश

मनुष्यने गुणनो कारणभूत होय ॥ ४ ॥ ॥ उपदेशथी रूडी बुद्धि थाय, रूडी बुद्धि थी सारा गुणोनो उदय थाय, ते माटे उपदेश सांभळवा संभळाववा माटे आ आचा रोपदेशनामें ग्रंथ प्रारंभीयें छैयें ॥ ५ ॥ ॥ रूडा आचारना विचारें करीने भलो

जयेन स्यात्, सदाचारादसौ भवेत् ॥ स जायते तूपदेशान्नृणां गुणनिबन्धन म् ॥ ४ ॥ सुबुद्धिश्चोपदेशेन, ततोऽपि च गुणोदयः ॥ इत्याचारोपदेशाख्य, ग्रन्थः प्रारभ्यते मया ॥ ५ ॥ सदाचारविचारेण, रुचिरश्चतुरोचितः ॥ देवा नन्दकरो ग्रन्थः, श्रोतव्योऽयं शुभात्मभिः ॥ ६ ॥ पुद्गलानां परावृत्त्या, दुर्लभं जन्म मानुषम् ॥ लब्ध्वा विवेकेन धर्मे, विधेयः परमादरः ॥ ७ ॥ ॥

अने पंमितने भणवा वांचवा योग्य तथा देवताने आनंदकारी एवो आ ग्रंथ ते पुण्य वंत मनुष्यें सांभळवो ॥ ६ ॥ ॥ पुद्गल परावर्त्तंकरी पामवो दुर्लभ एवो आ मनुष्य नो भव छे, ते पामी करीने विवेकेंकरी मनुष्यें धर्मने विषे घणो आदर करवो ॥ ७ ॥

धर्म जे छे, ते सांभल्यो, पोतें जाण्यो, पोतें कीधो, बीजाने कराव्यो, अने अनु
मोद्यो थको निश्चें सात कुलने पवित्र करे छे ॥ ८ ॥ ॥ धर्म, अर्थ, अने काम ए त्र
ण साध्या विना मनुष्यनो जन्म ते पशुनीपरें निःफल जाणवो. ते त्रणमां पण उत्त
म धर्म छे, केमके, धर्म विना बीजा बे न पामीयें ॥ ९ ॥ ॥ एक मनुष्यनो भव, बीजो

धर्मः श्रुतोऽपि दृष्टोऽपि,कृतोऽपि कारितोऽपि च॥ अनुमोदितो नियतं, पुनात्या
सप्तमं कुलम् ॥८॥ विना त्रिवर्गं विफलं, पुंसो जन्म पशोरिव ॥ तत्र स्यादुत्तमो
धर्मस्तं विना न यतः परौ ॥ ९ ॥ मानुष्यमार्यदेशश्च, जातिः सर्वाक्षपाटव
म् ॥ आयुश्च प्राप्यते तत्र, कथंचित्कर्मलाघवात् ॥ १० ॥ प्राप्तेषु पुण्यतस्ते

आर्यदेश, त्रीजी उत्तमजाति, चोथी इंद्रियोनी सदृढता, पांचमुं महोटुं आयुष्य, एट
लांवानां केम पामीयें ! जो कांइक कर्म हलवां होय तो पामीयें ॥ १० ॥ ॥ ए स
र्वे वानां पुण्यथकी पामे थके पण श्रीवीतरागनां वचन उपर श्रद्धा आववी दुर्लभ छे

ते श्रद्धा आव्या पछी रूडा गुरुनो योग जो मोहोटुं भाग्य होय तो पामीयें ॥११॥
ए सर्व वस्तु पामी, पण जेम राजा न्यायें करी शोभे, फूल सुगंधें करी शोभे, भोज
न घृतेंकरी शोभे, तेम भला आचारें करी शोभवुं एवी सामर्थ्य पामवी दुर्लभ छे ॥ १२ ॥

पु, श्रद्धा भवति दुर्लभा ॥ ततः सद्गुरुसंयोगो, लभ्यते गुरुभाग्यतः ॥ ११ ॥
लब्धं हि सर्वमप्येतत्सदाचारेण शोभते ॥ न्यायेनेव नृपः पुष्पं, गन्धेना
ज्येन भोजनम् ॥ १२ ॥ शास्त्रे दृष्टेन विधिना, सदाचारपरो नरः ॥ परस्परा
विरोधेन, त्रिवर्गं साधयेन्मुदा ॥ १३ ॥ तुर्ये यामे त्रियामाया, ब्राह्मे काले कृ
तोद्यमः ॥ मुक्त्वा निद्रां सुधी पञ्च, परमेष्ठिस्तुतिं पठन ॥ १४ ॥ ॥ ॥ ॥

माटे जेवो विधि शास्त्रमां दीठो, तेवा विधियेंकरी जे सदाचारमां तत्पर रहे, ते प्राणी
मांहोमांहे विरोध विना त्रिवर्गनें हर्षे करी साधे ॥ १३ ॥ ॥ जे पंडित छे,ते रात्रिने
चोथे पोहोरे ब्राह्मकाले एटले बे घडी पाछली रात्रें उठवानो उद्यम करीने नवकारनी

स्तुति जणतो थको निद्रानो त्याग करे ॥ १४ ॥ ॥ सदा सर्वदा शय्याथी उठतां डाबी अथवा जमणी, जे नासिका वहेती होय, ते तरफनो पग उठती वखत प्रथम धरती उपर आपे ॥ १५ ॥ ॥ पछी रात्रें सूतानां वस्त्र मूकीनें बीजां वस्त्र पहेरीने जला स्थानकें बेसीनें

वामा तु दक्षिणा वापि, या नाडी वहते सदा ॥ शय्योत्थितस्तमेवादौ, पादं दद्याद्भुवस्तले ॥१५॥ मुक्त्वा शयनवस्त्राणि, परिधायापराणिच ॥ स्थित्वा सुस्थानके धीमान्, ध्यायेत्पञ्चनमस्क्रियाम् ॥१६॥ उपविश्य च पूर्वाशाभिमुखो वाप्युदङ्मुखः ॥ पवित्राङ्गः शुचिस्थाने, जपेन्मन्त्रं समाहितः ॥ १७ ॥ अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ॥ ध्यायेत्पञ्चनमस्कारान्, सर्वपापैः प्र

बुद्धिवंत जीव प्रथम नवकारनुं ध्यान करे ॥ १६ ॥ ॥ ते पूर्वदिशि सन्मुख अथवा उत्तर दिशि सन्मुख, पवित्र शरीरें पवित्र स्थानकें बेसी मन स्थिर राखीने श्रीनवकार मंत्रनो जाप करे ॥ १७ ॥ ॥ अपवित्र अथवा पवित्रपणें सुखियो अथवा दुःखियो थको

पण जे प्राणी नवकार प्रत्यें ध्यावे, ते प्राणी सर्व पापथकी मूकाय ॥ १८ ॥ ॥ अंगु
लीने टेरवे जे नवकारनो जाप करे, जे मेरु उलंघीने जाप करे, वली जे संख्यारहित
जाप करे, तेनुं प्राये अल्प फल होय ॥ १९ ॥ ॥ जाप त्रण प्रकारें थाय, एक उ
त्कृष्टो, बीजो मध्यम अने त्रीजो अधम, ए त्रण भेद जाणवा. तेमां कमलादिकना

मुच्यते ॥ १८ ॥ अङ्गुल्यग्रेण यज्जप्तं, जप्तं यन्मेरुलङ्घनैः ॥ संख्याहीनं च य
ज्जप्तं, तत्प्रायोऽल्पफलं भवेत् ॥ १९ ॥ जपो भवेत्त्रिधोत्कृष्ट, मध्यमाधमभे
दतः ॥ पद्मादिविधिना मुख्यो, मध्यः स्याज्जपमालया ॥ २० ॥ विना मौनं
विना संख्यां, विना चेतोनिरोधनम् ॥ विना स्थानं विना ध्यानं, जघन्यो

विधियें जे गुणे, ते प्रथम मुख्य एटले उत्कृष्ट जाप जाणवो, तथा नोकरवालीयें गुणे
ते बीजो मध्यम जाप जाणवो ॥ २० ॥ ॥ तथा मौन धारण कर्या विना, संख्या
विना मन स्थिर राख्या विना, स्थानक विना अने ध्यान विना जे गुणे, ते त्रीजो ज

धन्य जाप जाणवो ॥ २१ ॥ ॥ तेवार पछी उपाश्रये अथवा पोताना घरने विषे ज
इने पोतानां पाप शुद्ध करवाने अर्थे पंडित पुरुष, पडिक्कमणुं करे ॥ २२ ॥ ॥ एक
रात्रि पडिक्कमणुं, बीजुं दैवसिकपडिक्कमणुं, त्रीजुं पाखी पडिक्कमणुं, चोथुं चौमासी पडिक्क

जायते जपः ॥ ७१ ॥ ततो गत्वा मुनिस्थानं, अथवात्मनिकेतने ॥ निजपाप
विशुद्ध्यर्थं, कुर्यादावश्यकं सुधीः ॥ ७२ ॥ रात्रिकं स्याद्दैवसिकं, पाक्षिकं चातु
र्मासिकम् ॥ सांवत्सरं चेति जिनैः, पंचधावश्यकं कृतम् ॥ ७३ ॥ कृतावश्यक
कर्मा च, स्मृतपूर्वकुलक्रमः ॥ प्रमोदमेदुरस्वान्तः, कीर्तयेन्मङ्गलस्तुतिम्
॥ ७४ ॥ मङ्गलं भगवान् वीरो, मङ्गलं गौतमः प्रभुः ॥ मङ्गलं थूलिभद्राद्या,

मणुं अने पांचमुं संवत्सरी पडिक्कमणुं, ए भगवंते पांच प्रकारें पडिक्कमणुं करवुं कह्युं छे
॥ २३ ॥ ॥ पडिक्कमणरूप कर्म करीनें पोतानो कुलक्रम संभारतो हर्षे करी पुष्ट छे चित्त
जेनुं एवो जन ते मांगलिकनी स्तुति भणे ॥ २४ ॥ ॥ मंगलिक श्रीभगवंत महावीर

स्वामीजी, मंगलिक श्रीगौतमस्वामीजी, श्रीथूलभद्रादिक साधुजी, अने मंगलिक जैनधर्म मंगलिक करो ॥ २५ ॥ ॥ श्रीऋषभादिक चोवीश तीर्थंकर, भरतादिक वार चक्रवर्त्ति तथा वासुदेव अने बलदेव, ए सर्वे मंगलिक करो ॥ २६ ॥ ॥ नाभिराजा, सिद्धार्थ राजा आदिक चोवीश जिनना पिता, जेमणें अखंड राज्य पाळ्यां छे, ते मुजने जय जैनो धर्मोऽस्तु मङ्गलम् ॥ २५ ॥ नाभेयाद्या जिनाः सर्वे, भरताद्याश्च च क्रिणः ॥ कुर्वन्तु मङ्गलं सर्वे, विष्णवः प्रतिविष्णवः ॥ २६ ॥ नाभिसिद्धार्थ भूपाद्या, जिनानां पितरः समे ॥ पालिताखंडसाम्राज्या, जनयन्तु जयं मम ॥ २७ ॥ मरुदेवीत्रिशलाद्या, विख्याता जिनमातरः ॥ त्रिजगज्जनितानन्दा, मङ्गलाय भवन्तु मे ॥ २८ ॥ श्रीपुंडरीकेन्द्रभूति, प्रमुखा गणधारिणः ॥ श्रुत आपो ॥ २७ ॥ ॥ मरुदेवीजी त्रिशला प्रमुख जे जगतमां प्रसिद्ध, जेमणें त्रण जगतने आनंद आप्यो एवी जिनजीनी चोवीश माताउ ते मुजने मंगलिक माटे हो ॥ २८ ॥ पुंडरीक गणधर, गौतम गणधर आदे देईनें चौदशें बावन गणधर बीजा पण श्रुतकेव

ली साधु, चौद पूर्वधर ते मुझनें मंगलिक प्रत्यें आपो ॥ २९ ॥ ॥ ब्राह्मी, चंदनबाला दिक जे महोटी साधवीयो अखंड शीलनी लीला जेमनी छे एवी ते सर्वे मुझने मंगलिक प्रत्यें आपो ॥ ३० ॥ ॥ चक्रेश्वरी देवी, सिद्धायिका प्रमुख चोवीश देवी जे स

केवलिनोऽपीह, मङ्गलानि दिशन्तु मे ॥ २९ ॥ ब्राह्मीचन्दनबालाद्या, महासत्यो महत्तराः ॥ अखंमशीललीलाढ्या, यछंतु मम मंगलम् ॥ ३० ॥ चक्रेश्वरीसिद्धायिकामुख्यः शासनदेवताः ॥ सम्यग्दृशां विघ्नहरा, रचयन्तु जयश्रियम् ॥ ३१ ॥ कपर्दिमातंगमुख्या, यक्षा विख्यातविक्रमाः ॥ जैनविघ्नहरा नित्यं, दिशन्तु मंगलानि मे ॥ ३२ ॥ यो मङ्गलाष्टकमिदं, पटुधीरधीते प्रातर्नरः

म्यगदृष्टि जीवोना विघ्नने हरनारी ते जयलक्ष्मी रचो अथवा करो ॥ ३१ ॥ ॥ कपर्दि, मातंग प्रमुख चोवीश यक्ष प्रसिद्ध पराक्रमना धणी जिनशासनना विघ्नना हरनार छे, ते मुझने सदा मंगलिक आपो ॥ ३२ ॥ ॥ जे नली बुद्धिनो धणी, पुण्यें नावित छे मननी

वृत्ति जेनी, सौजाग्य जाग्य सहित एवो अने गयां छे सर्व विघ्न जेनां एवो पुरुष ए पूर्वे कह्या जे मंगलिकना आठ श्लोक तेने प्रजाते जणे, ते मनुष्य जगतने विषे नित्यें घणां मंगलिक पामे ॥ ३३ ॥ ॥ तेवार पछी देरासरें जाय, त्यां कीधी छे निसिहीनी क्रिया जेणें

सुकृतजावितचित्तवृत्तिः ॥ सौजाग्यजाग्यकलितो धुतसर्वविघ्नो, नित्यं स मङ्गलमलं लजते जगत्याम् ॥३३॥ ततो देवालये यायात्, कृतनैषधिकीक्रियः ॥ त्यजन्नाशातनाः सर्वास्त्रिः प्रदक्षिणयेज्जिनम् ॥ ३४ ॥ विलासहासनिष्ठीवा, निद्राकलहदुःकथाः ॥ जिनेंद्रजवने जह्यादाहारं च चतुर्विधम् ॥ ३५ ॥ नम स्तुभ्यं जगन्नाथेत्यादिस्तुतिवदंवदः ॥ फलमक्षतपूगं वा, ढौकयेद्वीजिनाग्रतः

एवो ते समस्त देरासरनी आशातनाउने टालतो श्री जगवंतनें त्रण प्रदक्षिणा दीये ॥ ३४ ॥ ॥ स्त्री साथे विलास, हास्य, श्लेष्म, त्याग, निद्रा, कलह, माठी कथा अने चार प्रकारनो आहार जगवंतने देहेरे छांडे ॥ ३५ ॥ ॥ 'नमो जिनाय' इत्यादिक स्तु

तिनां पद जणतो थको फल, अक्षत अथवा सोपारी श्रीजगवंतने आगल मूके ॥ ३६ ॥ ठाले हाथें न जाय. राजाने, देवने, गुरुने, नैमित्तिक जे आयुष्य जाणे ते ज्योतिषीने ठाले हाथें न जोवा. फलें करीनें फलनी प्राप्ति थाय ॥ ३७ ॥ ॥ जमणे पासें पुरुष, डावे पासें स्त्री ऊनी रहीने जगवंत प्रत्यें वांदे. जघन्य नव हाथथी मांडी साठ हाथ अव ॥३६॥ रिक्तपाणिर्न पश्येत्तु, राजानं दैवतं गुरुम् ॥ नैमित्तिकं विशेषेण, फलेन फलमादिशेत् ॥ ३७ ॥ दक्षवामांगजागस्थो, नरनारीजनो जिनम् ॥ वन्देता वग्रहं मुक्त्वा, षष्टिं नव करान्विजो ॥३८॥ ततः कृत्तोत्तरासंगः, स्थित्वा सद्योग मुद्रया ॥ ततो मधुरया वाचा, कुरुते चैत्यवन्दनम् ॥ ३९ ॥ उदरे कूर्परौ न्य स्य, कृत्वा कोशाकृती करौ ॥ अन्योन्याङ्गुलिसंश्लेषाद्योगमुद्रा जवेदियम् ग्रह मूकी एटले जगवंतथी वेगला रहीने वांदे ॥ ३८ ॥ ॥ तेवार पढी उत्तरासण करे, ते करीने जली योगमुद्रायें रहीनें पढी मीठी वाणीयें करी चैत्यवंदन करे ॥ ३९ ॥ ॥ पे ट उपर बे कोणी मूकीनें कमलना डोडानें आकारें मांहे मांहे दश आंगुली जेली क

रीयें ते योगमुद्रा होय ॥ ४० ॥ ॥ पछी पोतानें घेर जईने प्रजात समयनी क्रिया करे, पछी जोजन, वस्त्र तथा घरना माणसनी चिंता करे ॥ ४१ ॥ ॥ बांधवने तथा दास प्रमुखनें पोतपोताना कार्यने विषे थापीनें आठ बुद्धिना गुणें सहित थको वली पोशालें एटले उपासरे जाय ॥ ४२ ॥ ॥ एक गुरुनी सेवा, बीजो धर्म सांजलवो, त्रीजो

॥ ४० ॥ पश्चान्निजालयं गत्वा, कुर्यात्प्राजातिकीं क्रियाम् ॥ विदधीत गेहचिन्तां, जोजनाछादनादिकाम् ॥ ४१ ॥ अनादिस्वस्वकार्येषु, बंधून् कर्मकरानपि ॥ पुण्यशालां पुनर्यायादष्टनिर्धीगुणैर्युतः ॥ ४२ ॥ शुश्रूषा श्रवणं चैव, ग्रहणं धारणं तथा ॥ ऊहापोहोऽर्थविज्ञानं, तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः ॥ ४३ ॥ श्रुत्वा धर्मं विजानाति, श्रुत्वा त्यजति दुर्मतिम् ॥ श्रुत्वा ज्ञानमवाप्नोति, श्रुत्वा

ग्रहण करवो, चोथो धारवो, पांचमो "विचारवो", छठो ऊहापोह करवो, सातमो अर्थ जाणवो, अने आठमो तत्त्वज्ञान ए आठ बुद्धिना गुण जाणवा ॥ ४३ ॥ ॥ शास्त्र सांजल्या थकी धर्मनो जाण थाय, सांजलवाथी दुष्टमतिनुं छांडवुं थाय, सांजल्या थकी

ज्ञान पामे, सांजळ्याथी वैराग्य. पामे ॥ ४४ ॥ ॥ बे हाथ, बे पग अने मस्तक ए पंचांग खमासमण गुरु अने बीजा साधुने देईने गुरुनी आशातना टाळतो थको धर्म सांजळवा बेसे ॥ ४५ ॥ ॥ मस्तकें बे हाथ लगाडीने बे ढिंचणें करी धरती प्रत्ये विधि

वैराग्यमेव च ॥ ४४ ॥ पंचाङ्गप्रणिपातेन, गुरून् साधून्परानपि ॥ उपावि शेन्नमस्कृत्य, त्यजन्नाशातना गुरोः ॥ ४५ ॥ उत्तमाङ्गेन पाणिभ्यां, जानुभ्यां च भुवस्तले ॥ विधिना स्पृशतः सम्यक्पंचाङ्गप्रणतिर्भवेत् ॥ ४६ ॥ पर्यस्थि कां न बध्नीयान्न च पादौ प्रसारयेत् ॥ पादोपरि पदं नैव, दोर्मूलं न प्रदर्शयेत् ॥ ४७ ॥ न पृष्ठे न पुरो वापि, पार्श्वयोरुभयोरपि ॥ स्थेयान्नालापयेदन्य, मा

सहित सम्यक् प्रकारें फरसीयें, ते पंचांग नमस्कार कहीयें ॥ ४६ ॥ ॥ गुरुपासें बेठा पग न बांधीयें, पग लांबा पसारीयें नही, पग उपर पग न चडावीयें, बे कांख उंची करीने नही देखाडीयें ॥ ४७ ॥ ॥ गुरुनी पाछल बेसे नही, आगल बेसे नही, जमणे

तथा न्नावे ए बे पासें पण बेसे नही. बीजा आव्या माणसने गुरुना बोलाव्या विना प्रथम पोतें न बोलावे ॥ ४८ ॥ ॥ नावनेद जाणवामां निपुण एवो पंमित जे ने ते गुरुना मुख उपर दृष्टि राखतो मन एकाग्र करीनें धर्मशास्त्रने सांनले ॥४ए॥ पोताना मनना संदेह टाले, वखाण कर्या पनी पंमित होय ते देव गुरुना गुण गानारने एटले गतं पूर्वमात्मना ॥ ४८ ॥ सुधीर्गुरुमुखन्यस्त, दृष्टिरेकाग्रमानसः ॥ शृणुयाध्र्म शास्त्राणि, नावनेदविचक्षणः ॥४ए॥ अपाकुर्यात्स्वसंदेहान्, जाते व्याख्यानके सुधीः ॥ गुर्वर्हद्गुणगातृन्यो, दद्याद्दानं निजोचितम् ॥ ५० ॥ अकृतावश्यको दत्ते, गुरूणां वन्दनानि च ॥ प्रत्याख्यानं यथाशक्ति, विदध्याद्विरतिप्रियः ॥ ५१॥ तिर्यग्योनिषु जायन्ते, विरतादानिनोऽपि ह ॥ गजाश्वादिनवे नोगान्, नाट नोजकनें यथाशक्तियें पोताने आपवा योग्य दान आपे ॥ ५० ॥ ॥ जेणें पमि क्कमणुं नथी कीधुं, ते गुरुनें पगें वांदणा आपे, पनी जेने विरतिपणुं वाहालुं ने, ते नो कारसी प्रमुख यथाशक्तियें पच्चरकाण करे ॥ ५१ ॥ ॥ विरति विना जे दातार होय

ते पण तिर्यंचनी योनिमां जइ ऊपजे. हाथी घोडानो जव पामे. त्यां जोग जोगवता पण बंधनमां पड्या थका रहे ॥ ५२ ॥ ॥ जे दातार होय ते नरकें न जाय, जे पच्चरकाण सहित होय ते तिर्यंचमां न जाय, जे दयावंत होय ते आयुष्यहीन न होय, अने जे सत्यवादी होय तेनो माठो स्वर न होय ॥ ५३ ॥ ॥ तपस्या जे छे ते सर्व

जुञ्जाना बन्धनान्वितान् ॥ ५२ ॥ न दाता नरकं याति, न तिर्यग् विरतो जवेत् ॥ दयालुर्नायुषा हीनः, सत्यवक्ता न दुःस्वरः ॥ ५३॥ तपः सर्वाक्षसारंग, वशीकरणवागुरा ॥ कषायतापमृद्वीका, कर्माजीर्णहरीतकी ॥५४ ॥ यद्दूरं यद्दुराराध्यं, यत्सुरैरपि दुष्करम् ॥ तत्सर्वं तपसा साध्यं, तपो हि दुरतिक्रमम्

इंद्रियरूप जे मृगलां तेने वश करवाने जालसमान छे, तथा कषायरूप ताप टालवाने द्राक्षा समान छे, अने कर्मरूप अजीर्ण टालवाने हरडे समान छे ॥ ५४ ॥ ॥ जे वस्तु वेगली होय, दूर होय के दुःखें आराध्य होय, तथा जे देवताने पण दुर्लज

होय, ते सर्व तपस्यायें करी सधाय छे. ते तपने पोताना गुणें करी उल्लंघन करी जाय एवुं बीजुं साधन नथी ॥ ५५ ॥ ॥ हवे बजारमां जइ धर्मनो विधियें करीने पं रीत, द्रव्य कमावानो पोतपोतानो व्यापार करे ॥ ५६ ॥ ॥ मित्रना उपकारने अर्थें, बंधु एटले जाइना उदयने अर्थें, उत्तम पुरुष लक्ष्मी उपार्जन करे, केवल पो

॥ ५५ ॥ चतुष्पथं ततो यायात्, कृतधर्मविधिः सुधीः ॥ कुर्यादर्थार्जनोपायं, व्यवसायं निजं निजम् ॥५६॥ सुहृदामुपकाराय, बन्धूनामुदयाय च ॥ अर्ज्यते विभवः सद्भिः, स्वोदरं को बिभर्ति न ॥ ५७॥ व्यवसायभवा वृत्तिः, सोत्कृष्टा मध्यमा कृषिः ॥ जघन्या भुवि सेवा तु, भिक्षा स्यादधमाधमा ॥५८ ॥ ॥

तानुं पेट तो कोण नथी भरतो? ॥ ५७ ॥ ॥ व्यापारनी आजीविकायें पेट भराय, ते उत्कृष्ट आजीविका जाणवी, खेतिवाडी करी आजीविका चलाववी ते मध्यम जाणवी, पारकी सेवा करी आजीविका चलाववी, ते पृथिवीने विषे जघन्य जाणवी

अने भिक्षा मागी पेट भरवुं ते अधमाधम आजीविका जाणवी ॥ ५८ ॥ ॥ ते माटे नीच व्यापार पोतें न करे, बीजा पासें न करावे, लक्ष्मी पुण्यथी प्राप्त थाय पण पापथी क्यारें पण वधे नही ॥ ५९ ॥ ॥ घणा आरंभरूप महापाप जेमां छे, लोकमां जेनी निंदा थाय छे, तथा जे उभयलोक विरुद्ध होय, ते कर्म आचरे नही ॥ ६० ॥ ॥

व्यवसायमतो नीचं, न कुर्यान्नापि कारयेत्॥ पुण्यानुसारिणी संपत्, न पापाद्वर्द्धते क्वचित् ॥ ५९॥ बह्वारंभमहापापं, जने चेज्जनगर्हितम् ॥ इहामुत्रविरुद्धं यत्, तत्कर्म्म न समाचरेत् ॥ ६० ॥ लोहकारचर्मकारमद्यकृत्तैलिकादिभिः ॥ सत्यप्यर्थागमे कामं, व्यवसायं परित्यजेत् ॥ ६१॥ एवं चरन् प्रथमयामविधिं

लोहार सार्थें, मोची अथवा चमार सार्थें, मद्यना करनार सार्थें अने तेली आदिक सार्थें जो घणुं धन प्राप्त थतुं होय तोपण व्यापार न करे ॥ ६१ ॥ ॥ ए प्रकारें प्रथम पोहोरनो सर्व विधि प्रत्यें करतो, श्रद्धायुक्त, भला विनयनो धणी न्यायें करी

शोजतो, विज्ञानने मान आपवुं तथा लोकने रीजववुं तेनेविषे सावधान, एवो श्रा
वक इहलोक अने परलोकसंबंधि पोताना बे जन्म सफल करे ॥ ६२ ॥ ॥ इति श्री
रत्नसिंहसूरि, तत् शिष्य श्रीचारित्रसुंदरगणिना विरचित आचारोपदेशग्रंथमां प्रथमपो

समग्रं, श्राद्धो विशुद्धविनयो नयराजमानः ॥ विज्ञानमानजनरंजनसावधा
नो, जन्मद्वयं विरचयेत्सफलं स्वकीयम् ॥ ६२ ॥ इति श्रीरत्नसिंहसूरिशिष्य
श्रीचारित्रसुन्दरगणिविरचिते आचारोपदेशे प्रथमप्रहरवर्गः ॥ १ ॥ अ
थ स्वमन्दिरे यायाद्, द्वितीये प्रहरे सुधीः ॥ निर्जन्तु भुवि पूर्वाशाभिमुखः स्ना
नमाचरेत् ॥ १॥ सप्रणालं चतुष्पादं, स्नानार्थं कारयेद्वरम् ॥ तदुद्धृते जले य

होरवर्गनो बालावबोध संपूर्ण ॥ १॥ ॥ हवे बीजे पोहोरें ते पंडित पोताने घरे जइ जीव
रहित धरतीने विषे पूर्वदिशि सन्मुख बेशीने स्नान करे ॥ १॥ ॥ नला परनाला सहित
बाजोठ स्नानने अर्थे करावे, ते उष्ण पाणी बाजोठमां रह्याथी जीवनी हिंसा न थाय॥२॥

रजस्वला स्त्रीनो अथवा चंडालनो स्पर्श थयो होय अथवा घरमां सूतक थयुं होय,
तथा स्वजनादिकनुं मृत्यु थयुं होय तो मतस्कथी मांमीने सर्वांगें स्नान करे ॥ ३ ॥
अन्य अवसरें मस्तक वर्जीने बीजुं शरीर पखाले, एटलुं विशेष जाणवुं, तथा कांइक
उष्ण एवा थोडे पाणीयें करी पुण्यवंत जीव देवपूजाने अर्थे स्नान करे ॥ ४ ॥ ॥
स्माज्जंतुबाधा न जायते ॥ २ ॥ रजस्वलाया मलिनस्पर्शे जाते च सूतके ॥
मृतस्वजनकार्ये च, सर्वाङ्गस्नानमाचरेत् ॥ ३ ॥ अन्यथा शीर्षवर्जं च, वपुः
प्रक्षालयेत्परम् ॥ कवोष्णेनाल्पपयसा, देवपूजाकृते कृती ॥ ४ ॥ चन्द्रादि
त्यकरस्पर्शात्पवित्रं जायते जगत् ॥ तदाधारं शिरो नित्यं, पवित्रं योगिनो
विदुः ॥ ५ ॥ दयासाराः सदाचारास्ते सर्वे धर्महेतवे ॥ शिरःप्रक्षालनान्नि
चंद्रमा अने सूर्यना किरण स्पर्शथी सर्व जगत् पवित्र थाय छे, ते जगत्नो आधार
मस्तक छे माटे ते मस्तक निरंतर पवित्र छे, एम योगीश्वर कहे छे ॥५ ॥ ॥ जीवदया
छे साररूप जेमां एवा सर्व आचार धर्मनां कारण छे, ते माटे मस्तक धोवाथी नित्य

मस्तकना जीवने उपद्रव होय तेथी अधर्म थाय, माटे मस्तक स्नान नित्य करवुं वर्ज्य छे ॥ ६ ॥ ॥ मस्तक क्यांहि अपवित्र न होय. केमके ! सदा ते लुगडांथी वीटयुं रहे, वली निर्मल तेजनो धरनार एवो आत्मा जे जीव, तेनी स्थिति एटले रहेवुं ते निरंतर मस्तकें छे, माटे क्यारें पण मस्तक अपवित्र थतुं नथी ॥ ७ ॥ ॥ स्नानने अर्थें पाणी नाख्या

त्यं, तज्जीवोपद्रवो भवेत् ॥ ६॥ नापवित्रं भवेच्छीर्षं, नित्यं वस्त्रेण वेष्टितम् ॥ अध्यात्मनः स्थिते सत्वनिर्मलद्युतिधारिणः ॥ ७ ॥ स्नानायेति जलोत्सर्गाद् घ्नंति जन्तून् बहिर्मुखान् ॥ मलिनं कुर्वते जीवं, शोधयंति वपुर्हि ते॥८॥विहाय पोतकं वस्त्रं, परिधाय जिनं स्मरन् ॥ यावज्जलार्द्रौ चरणौ, तावत्तत्रावतिष्ठते

थी जीव हणाय छे, एवा स्नान धर्मथी मिथ्यात्वी जनो पोताना जीवने मलीन करे छे अने शरीरने पवित्र करे छे ॥ ८ ॥ ॥ स्नान करेलुं पोतीयुं मूकीने बीजुं वस्त्र पहेरीने जिनेश्वरनुं स्मरण करतो छतो ज्यांसुधी भीना पग होय त्यांसुधी त्यांज उभो रहे ॥९॥

अन्यथा त्रीना पग उपर मल लागे, तेवारें वली पग अपवित्र थाय, तथा ते त्रीजेला पगे जीव लागे तेमनी घात थाय, तेथी महोटुं पाप लागे ॥ १० ॥ ॥ घरना देरासर पासें जइने धरती पूंज्या पठी धोयेलां पूजानां वस्त्र पहेरीने आठ पडनो मुखकोश बांधे ॥ ११ ॥ ॥ देवपूजाने अवसरें एक मन, बीजुं वचन, त्रीजी काया, चोथुं

॥ ए ॥ अन्यथा मलसंश्लेषादपवित्रौ पुनः पदौ ॥ तल्लीनजीवघातेन, नवेद्धा पातकं महत् ॥ १० ॥ गृहचैत्यांतिकं गत्वा, नूमिसंमार्जनादनु ॥ परिधाय च वस्त्राणि, मुखकोशं दधात्यथ ॥ ११ ॥ मनोवाक्कायवस्त्रेषु, नूपूज्योपकरस्थितौ ॥ शुद्धिः सप्तविधा कार्या, देवतापूजनक्षणे ॥ १२ ॥ पुमान् परिदधेन्न स्त्रीवस्त्रं

वस्त्र, पांचमी नूमि, उठां पूजानां उपकरण अने सातमी स्थिति स्थैर्य, ए सात वानां देव पूजवाने अवसरें शुद्ध करवां ॥ १२ ॥ ॥ पूजा करती वखतें क्यारें पण पुरुषें स्त्रीनुं वस्त्र पहेरवुं नही, अने स्त्रीयें पुरुषनुं वस्त्र न पहेरवुं. जो पहेरे, तो कामनी त

था रागनी वृद्धि थाय ॥ १३ ॥ ॥ जारीयें करी पाणी लावी ते पाणीयें करी जगवंतनी अंग पखाल करीने अंगलूहणे करी जगवंतनुं शरीर सूकुं करे. तेवार पछी अष्ट प्रकारनी पूजा करे, ते कहे छे ॥ १४ ॥ ॥ कस्तूरी केशर कपूर तेणेकरी मिश्रित करेलुं एवुं

पूजाविधौ क्वचित् ॥ न नारी नरवस्त्रं तु, कामरागविवर्धनम् ॥ १३ ॥ भृंगारानीतनीरेण, संस्नाप्यांगं जिनस्य तु ॥ रूक्षीकृत्य सुवस्त्रेण,पूजां कुर्यात्ततोऽष्टधा ॥ १४॥ सच्चन्दनेन घनसारविमिश्रितेन, कस्तूरिकाऽवयुतेन मनोहरेण ॥ रागादिदोषरहितं महितं सुरेन्द्रैः, श्रीमज्जिनं त्रिजगतः पतिमर्चयामि ॥ १५ ॥ जातीजपाबकुलचम्पकपाटलाद्यै, र्मन्दारकुन्दशतपत्रवरारविन्दैः ॥ संसारनाश

मनोहरचंदन तेणें करीने,राग द्वेषादिके रहित अने जेने चोसठ इंद्रे पूज्या एवा जे श्रीजगवंत त्रण जगतना स्वामी तेने हुं अर्चुं छुं ॥ १५ ॥ इति प्रथमा चंदनपूजा ॥ १ ॥ ॥ तेवार पछी जाइनां फूल, जासूलनां फूल, बोलसिरि, चंपक, पारुल, मंदार, मचकुंद, सो

पांखडीनां कमल, तथा बीजां पण फूलें करी, संसारना नाश करनार, करुणायें
करी प्रधान, एवा भगवंतने हुं पूजुं छुं ॥ १६ ॥ इति द्वितीया पुष्पपूजा ॥ २ ॥
काला अगरनो करेलो साकर सहित घणा कपूरें करी सहित घणा यत्नें कर्यो बहु
हर्ष आपनारो एवो धूप भक्तियें करी म्हारा पोताना पापनो नाश करवाने अर्थे हुं

करणं करुणाप्रधानं, पुष्पैः परैरपि जिनेन्द्रमहं यजामि ॥१६ ॥ कृष्णागुरुप्रचु
रितं सितया समेतं, कर्पूरपूरमहितं विहितं सुयत्नात् ॥ धूपं जिनेन्द्रपुरतो गुरु
तोषपोषं, भक्त्योत्क्षिपामि निजदुष्कृतनाशनाय ॥ १७ ॥ ज्ञानं च दर्शनमथो
चरणं विचिन्त्य, पुंजत्रयं च पुरतः प्रविधाय भक्त्या॥चोक्षाक्षतैः कणगणैरपरै

भगवंत आगल उखेवुं छुं ॥ १७ ॥ इति तृतीया धूप पूजा ॥ ३ ॥ ॥ ज्ञान, दर्शन अने
चारित्र ए त्रण भाव मनमां चिंतवी त्रण ढगला आखे स्वछ चोखायेंकरी तथा बीजा
पण सारा कण धान्य तेणेकरी भगवंत आगल करीने ते भगवंत श्रीआदीश्वर प्रत्यें

अक्षतें करी हुं पूजुंबुं॥१८॥इति चतुर्थी अक्षत पूजा॥४॥ ॥भलां एवां नालियेर, फनस, आमलां, बीजोरां, जंबीर, सोपारी अने आंबां प्रमुख फलेंकरीने स्वर्गादिक देवलोकादिक घणा फलना देनार एवा श्रीदेवाधिदेव एटले सर्व देव थकी अधिक देव जे श्रीभ

रपीह, श्रीमन्तमादिपुरुषं जिनमर्चयामि ॥ १८ ॥ सन्नालिकेरपनसामलबीजपूरजंबीरपूगसहकारमुखैः फलैस्तैः ॥ स्वर्गाद्यनल्पफलदं प्रमदाप्रमोदं, देवाधिदेवमशुभप्रशमं महामि ॥ १९ ॥ इति फलपूजा ॥ सन्मोदकैर्वटकमंडकशालिदालिमुख्यैरसंख्यरसशालिभिरन्नभोज्यैः ॥ क्षुत्तृड्व्यथाविरहितं स्वहिताय नित्यं, तीर्थाधिराजमहमादरतो यजामि ॥ २० ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥

गवंत ते प्रत्यें हर्षें करी हुं पूजुं बुं ॥१९॥ इति पंचमी फल पूजा ॥५॥ ॥भला एवा लाफवा, वडां, मांडा, चोखा, दाल प्रमुख घणा रससहित भोजनतां एवां नैवेद्य तेणेकरीने भूख अने तृषानी पीडा रहित एवा भगवंत तीर्थंकरने पोताना हितने अर्थें नि

त्य प्रत्यें हुं आदरेंकरी पूजुं छुं ॥२०॥ ॥ इति षष्ठी नैवेद्य पूजा ॥ टाळ्यो छे पापनो स
मूह जेणें, नित्यें उदयवंत, त्रण विश्वने एटले त्रण जगतने जोवानी कला तेणेकरी
सहित एवा भगवंत प्रत्यें भक्तियें करी महारुं तम जे अज्ञान ते शमाववामाटे शमताना
समुद्र एवा भगवंत प्रत्यें भक्तियें करी हुं दीपक करुं छुं ॥२१॥ ॥इति सप्तमी दीपक

विध्वस्तपापपटलस्य सदोदितस्य, विश्वावलोकनकलाकलितस्य भक्त्या ॥ उ
द्द्योतयामि पुरतो जिननायकस्य, दीपं तमःप्रशमनाय शमांबुराशेः ॥२१॥ इति
दीपकपूजा ॥ तीर्थोदकैर्धुतमलैरमलस्वभावं, शश्वन्नदीह्रदसरोवरसागरोत्थैः ॥
दुर्वारमारमदमोहमहाहितार्क्ष्यं, संसारतापशमनाय जिनार्चयामि ॥ २२ ॥

पूजा ॥ हे जिन! निरंतर निर्मल छे स्वभाव जेमनो, कंदर्प तथा आठ मद अने मोहरूप
सर्प तेने हणवाने गरुड समान एवा तमने नदी, द्रह, सरोवर अने समुद्र तेना निर्मल
पाणीयें करी संसारनो ताप शमाववाने अर्थे हुं पूजुं छुं ॥ २२ ॥ ॥ इत्यष्टमी जल

पूजा॥ए पूजानां महोटां आठ काव्यनी स्तुति ते जणीने ए पूर्वें कह्यो जे जलो विधि, ते वि धियें करी जे पूजा करे, ते पुण्यवंत श्रावक देवताना तथा मनुष्यना अखंड सुख पूर्ण जोगवीने थोडा कालमां मोक्षना सुख प्रत्यें पामे ॥ २३ ॥ ॥ इति पूजाष्टकम् ॥

इति जलपूजा ॥ पूजाष्टकस्तुतिमिमामसमामधीत्य, योऽनेन चारुविधिना वित नोति पूजाम् ॥ जुक्त्वा नरामरसुखान्यविखंभितानि, धन्यः सुवासमचिराल्ल जते शिवेऽपि ॥२३॥ इति पूजाष्टकम् ॥ शुचिप्रदेशे निःशल्ये, कुर्याद्देवालयं सु धीः ॥ सौधे यातां वामजागे, सार्द्धहस्तोच्चभूमिके ॥ २४ ॥ पूर्वाशाजिमुखोऽ र्चासु, उत्तराजिमुखोऽथवा ॥ विदिशांसंमुखो नैव, दक्षिणां वर्जयेद्दिशम् ॥२५॥

घरमां जातां ते डाबे हाथे दोढ हाथ उंची धरतीने विषे शल्य रहित एवा पवित्र स्था नकें पंडितजन देरासर करे ॥ २४ ॥ ॥ पूजानो करनार पूर्वदिशि साहामो अथवा उत्तरदिशि साहामो बेसे; पण विदिशिनी साहामो न बेसे; अने दक्षणदिशि वर्जे ॥

॥ २५ ॥ ॥ पूर्वदिशि साहामो बेसी पूजा करे तो लक्ष्मी पामे, अग्निखुणें से स पामे, दक्षिण दिशियें मरण पामे, अने नैऋत्य खुणे उपद्रव उपजे ॥२६॥ ॥ पश्चिम दिशियें पुत्रनुं दुःख होय, वायु खुणे संतान न होय, उत्तर दिशियें घणो लाभ थाय,

पूर्वस्यां लभते लक्ष्मीमग्नौ संतापसंभवः ॥ दक्षिणस्यां भवेन्मृत्युर्नैर्ऋते स्यादुपद्रवः ॥२६॥ पश्चिमायां पुत्रदुःखं, वायव्यां स्यादसंततिः ॥ उत्तरस्यां महालाभ, ईशान्यां धाम्नि नो वसेत् ॥ २७ ॥ अंघ्रिजानुकरांसेषु, मस्तके च यथाक्रमम् ॥ विधेया प्रथमं पूजा, जिनेन्द्रस्य विवेकिभिः ॥२८॥सचंदनं च काश्मीरं, विनार्चा न विरच्यते ॥ ललाटकंठहृदये, जठरे तिलकं पुनः ॥ २९ ॥ ॥

ईशान खुणे घरने विषे न रहे ॥ २७ ॥ ॥ बे पग, बे ढीचण, बे हाथ, बे खभा अने एक मस्तक ए नवे अंगें अनुक्रमें डाबा पाश्वार्थी विवेकी श्रावकें श्रीजिनेंद्रनी प्रथम पूजा करवी ॥२८॥ ॥ भला चंदन अने सारा केशर विना पूजा न करवी, वली ल

लाटें, कंठें, हृदयें अने पेट ऊपर श्रीभगवंतने तिलक करे ॥ २९ ॥ ॥ प्रभातें पवित्र वास करे, बे पोहोरें फूलनी पूजा करे, तेम सांजें धूप दीप करी पूजा करे एम पंक्तिं त्रिकाल पूजा करवी ॥ ३० ॥ ॥ पूजा करतां एक फूलना बे कटका न करवा, क

प्रभाते शुद्धवासेन, मध्याह्ने कुसुमैस्तथा ॥ संध्यायां धूपदीपाभ्यां, विधेयार्चा मनीषिभिः ॥३०॥ नैकं पुष्पं द्विधा कुर्यान्न छिन्द्यात्कलिकामपि ॥ पत्रकुड्मलभेदेन, हत्यावत्पातकं भवेत् ॥३१॥ हस्तात्प्रस्खलितं पुष्पं, लग्नं पादेऽथवा भुवि ॥ शीर्षोपरि धृतं यच्च, तत्पूजार्हं न कर्हिचित् ॥३२॥ निर्गन्धमुग्रगन्धं च, तत्त्याज्यं कुसुमं समम् ॥ स्पृष्टं नीचजनैर्दष्टं, कीटैः कुवसनैर्धृतम् ॥ ३३ ॥ ॥

ली पण छेदवी नही, पत्रथी फूल जूदुं न करवुं. एम करवाथी हत्या सरखुं पाप लागे ॥ ३१ ॥ ॥ हाथथी पमी गयेलुं, जेने पग लाग्यो, जे भूमियें पड्युं, तथा जे मस्तक उपर आण्युं, एवुं जे फूल ते पूजायोग्य कहेवाय नही ॥ ३२ ॥ ॥ गंध रहित, ग॥

गंधवालुं, नीच मनुष्यें फरश्युं, कीडे डंस्युं, माठे वस्त्रें लावेलुं, एवुं फूल बांडऊ
जामां लेवुं नही ॥ ३३ ॥ ॥ भगवंतने डावे पासें धूप देवो, जलनो कुंभ सन्मुख
ढोववो, नागरवेलनां पान फल ते भगवंतना हाथने विषे देवां ॥ ३४ ॥ ॥ १ स्नात्र,
२ चंदन, ३ दीवो, ४ धूप, ५ फूल, ६ नैवेद्य, ७ जल, ८ ध्वजा, ९ वासक्षेप, १० अ

वामांगे धूपदाहः स्याज्जलपात्रं तु संमुखे ॥ हस्ते दद्याज्जिनेन्द्रस्य, नागवल्लीदलं
फलम् ॥ ३४॥ स्नात्रैश्चन्दनदीपधूपकुसुमैर्नैवेद्यनीरध्वजै, र्वासैरक्षतपूगपत्रसहि
तैः सत्कोशवृद्ध्या फलैः ॥ वादित्रध्वनिगीतनृत्यनुतिभिश्छत्त्रैर्वरैश्चामरै, र्भूषा
भिश्च किलैकविंशतिविधा पूजा भवेदर्हताम् ॥ ३५ ॥ इत्येकविंशतिविधां रच

क्षत, ११ सोपारी, १२ तांबूल, १३ देव भंडारमां वृद्धि करवी, १४ फल, १५ वाजित्रध्वनि,
१६ गीतगान, १७ नाटक, १८ स्तुति, १९ छत्र, २० भलां चामर, २१ भलां आभरण,
ए एकवीश प्रकारें करीने श्रीअरिहंत देवनी पूजा होय ॥३५॥ ॥ ए एकवीश प्रकारें

करी जे भगवंतनी पूजा छे तेने रूडा जीव भला पर्वने दिवसें करे,अथवा तीर्थे जइने करे अने प्रथम कही जे उत्तम आठ प्रकारनी पूजा ते नित्य करवी, तथा बीजी पण वली जे जे भली वस्तु होय ते भावें करी पूजामां जोडीयें ॥ ३६ ॥ ॥ तेवार पछी विशेष थकी धर्म पामवानी इछाएं अपवित्र मार्ग प्रत्यें मूकतो, धौतवस्त्र

यन्ति पूजां, भव्याः सुपर्वदिवसेऽपि च तीर्थयोगे ॥ पूर्वोक्तचारुविधिनाष्टविधां च नित्यं, यद्यद्वरं तदिह भाववशेन योज्यम् ॥३६॥ ग्रामचैत्यं ततो यायाद्विशेषाद्धर्म्मलिप्सया ॥ त्यजन्नशुचिमध्वानं, धौतवस्त्रेण शोभितः ॥३७॥ यास्यामीति हृदि ध्यायंश्चातुर्थं फलमश्नुते ॥ उछितो लभते षाष्ठं, त्वाष्टमं पथि च

पहेरवे करी शोभतो गामना देरासरने विषे जाय ॥३७॥ ॥ देरासरें जइशुं एम मनमां धरतो थको चोथनुं एटले एक उपवासनुं फल पामे, अने जेवारें देरासरें जावाने ऊठे तेवारें छठनुं फल थाय, देरासरने मार्गे जातां अठम फलनो लाभ थाय ॥ ३८ ॥ ॥

देरासरने दीठे थके दशमनो एटले चार उपवासनो लाज थाय, देरासरने बारणे गया थकां डुवादसनो लाज थाय, देरासरनी मांहे प्रवेश करे त्यारें पन्नर उपवासनो लाज थाय, जगवानने पूजतां मासखमणनो लाज थाय ॥ ३ए ॥ ॥ पठी त्रणवार निसिही कहीने पंडित होय ते देरासरमां प्रवेश करे, तिहां देरासरनी चिंता प्रत्यें करीने पठी व्रजन् ॥ ३७ ॥ दृष्टे चैत्ये च दशमं, द्वारे द्वादशकं लजेत् ॥ मध्ये पक्षोपवासस्य, मासस्य च जिनार्चने ॥ ३ए॥ तिस्रो नैषेधिकीः कृत्वा, चैत्यं तत्प्रविशेत्सुधीः ॥ चैत्यचिंतां विधायाथ, पूजयेन्नीजिनं मुदा ॥ ४० ॥ मूलनायकमञ्यर्च्य, अष्टार्हत्प्रतिमाः पराः ॥ पूजयेच्चारुपुष्पौघैः, शिष्टाश्चांतर्बहिःस्थिताः ॥ ४१ ॥ अवग्रहाद्बहिर्गत्वा, वन्देतार्हन्तमादरात् ॥ विधिना पुरतः स्थित्वा, रचयेच्चैत्य हर्षें करी श्रीजगवंतने पूजे ॥ ४० ॥ ॥ प्रथम आठ प्रकारें जला फूलना समूहें श्रीमूलनायकजीनी प्रतिमा पूजीने पठी अनुक्रमें बीजी आठ बाहिरनी प्रतिमा प्रत्यें पूजे ॥ ४१ ॥ ॥ पठी अवग्रहथी बाहेर जइने आदरथी श्रीअरिहंतने वांदे, पठी

विधियें सहित आगल रहीने चैत्यवंदन करे ॥ ४२ ॥ ॥ एक नमुत्थुणेंकरी प्रथम जघन्य चैत्यवंदन जाणवुं, बे नमुत्थुणेंकरी बीजुं मध्यम चैत्यवंदन जाणवुं, पांच नमुत्थुणेंकरी त्रीजुं उत्तम चैत्यवंदन जाणवुं. वीजां पण त्रण प्रकारें चैत्यवंदन छे, ते कहे छे ॥ ४३ ॥ ॥ नमुत्थुणंनो पाठ योगमुद्रायें जणीजें, तथा जावंति चेइआइं

वन्दनम् ॥ ४२ ॥ एकशस्तु जघन्या स्याद्, द्वाभ्यां भवति मध्यमा ॥ पञ्चभिस्तूत्तमा ज्ञेया, जायते सा त्रिधा पुनः ॥४३॥ स्तुतिपाठे योगमुद्रा, जिनमुद्रा तु वन्दने ॥ मुक्ताशुक्तिकमुद्रा तु, प्रणिधाने प्रयुज्यते ॥ ४४ ॥ उदरे कूर्परौ न्यस्य, कृत्वा कोशाकृती करौ ॥ अन्योन्याङ्गुलिसंश्लेषाद्योगमुद्रा भवेदियम् ॥ ४५ ॥ पुरोंगुलानि चत्वारि, पश्चादूनानि तानि तु ॥ अवस्थितिः पादयोर्या,

ए पाठ जिनमुद्रायें जणवो, तथा जयवीयरायनो पाठ मुक्ताशुक्ति मुद्रायें जणीयें॥४४॥ पेटने विषे कुणी थापीने कमलना डोडाने आकारें बे हाथ करीने मांहोमांहे आंगली जेलियें ए प्रथम योगमुद्रा होय ॥ ४५ ॥ ॥ चार अंगुल आगली आंगलीनी

बाजुयें पग पोहोला राखीयें, अने पाछला पानीना जाग तरफ चार अंगुलथी कांइक उंछा पग पोहोला राखीयें, ए रीतें जे पगनुं थापवुं, ते बीजी जिनमुद्रा कहीयें ॥४६॥ बे गोठणनी वच्चे रहेला तथा मोती पाकवानी बे छीपो जेम जोडेली होय तेनी जेवा आकारवाला अने पोताना कपालने लगाडेला जेमां बे हाथ होय; ए

जिनमुद्रेयमीरिता ॥ ४६ ॥ मुक्ताशुक्तिसमाकारौ, जानुगर्जस्थितौ समौ ॥ ल लाटलग्नौ हस्तौ, यौ मुक्ताशुक्तिरियं मता ॥ ४७ ॥ नत्वा जिनवरं यायाद्गृदन्ना वश्यकीं गृहम् ॥ अश्नीयाद्बन्धुजिः सार्धं, जद्याजदयविचक्षणः ॥ ४८ ॥ अ धौतपादः क्रोधान्धो, वदन् दुर्वचनानि यत्॥ दक्षिणाजिमुखो जुंक्ते, तस्याजाक्ष

मुक्ताशुक्ति नामक मुद्रा ज्ञानी पुरुषोयें मानेली छे ॥४७॥ ॥ जगवंतने नमीनें आव सहि कहेतो थको पोताना घर प्रत्यें जाय, त्यां जइने ते डाह्यो श्रावक जक्ष अजक्षने उलखतो थको पोताना बांधवो साथें जमे ॥४८॥ ॥पग धोया विना, रीसें अंध थको,

मुखमांथी माठां वचन बोलतो थको जे दक्षिण दिशिनी साहामो वेसी जमे ते राक्षस भोजन कहीयें ॥ ४९ ॥   ॥ अंग पवित्र करी शुभस्थानकें, निश्चल आसने बेठो थको, देव गुरुने संभारतो थको जे जमे ते भोजनने मनुष्यनुं भोजन कहीयें ॥ ५० ॥   ॥ स्नान, तथा देवपूजा करीने,पूज्य जे पोताना माता पिता आदि तेने नमीने, हर्ष सहित

सद्भोजनम् ॥ ४९ ॥ पवित्रांगः शुभे स्थाने, निविष्टो निश्चलः शनैः ॥ स्मृत देवगुरुर्भुङ्क्ते, तत्स्यान्मानुषभोजनम् ॥ ५०॥ स्नात्वा देवान् समभ्यर्च्य, न त्वा पूज्यजनान्मुदा ॥ दत्वा दानं सुपात्रेभ्यो, भुंक्ते भुक्तं तदुत्तमम्॥५१॥ भोज ने मैथुने स्थाने, वमने दन्तधावने ॥ विण्मूत्रोत्सर्गकाले च, मौनं कुर्यान्महाम

सुपात्रने दान देइने जे जमवुं तेने उत्तम देवभोजन जाणवुं ॥ ५१ ॥   ॥ महोटी बु द्धिना धणीयें एक भोजन करतां, बीजुं स्त्रीसेवा करतां, त्रीजा वमनने विषे, चोथुं दातण करतां, पांचमी वडीनीत करतां, छठी लघुनीत करतां, एटले स्थानकें बोलवुं

नही ॥ ५२ ॥ ॥ अग्निखुण, नैरुतखुण अने दक्षिणदिशि आ त्रणदिशा जोजनमां वर्ज्य बे, तथा रविना अस्तवेलायें, उदय वेलायें, ग्रहण पर्व होय त्यारें अथवा आप णा ज्ञाति बांधवमां शब ज्यांसुधी पड्युं होय त्यांसुधी जमवुं नही ॥ ५३ ॥ ॥ जे बते इव्यें जोजनादिकने विषे कृपणपणुं करे, ते मूर्खबुद्धिवालो जाणवो. ते देवने काजें धन

तिः ॥५२॥ आग्नेयीं नैर्ऋतिं जुक्तौ, दक्षिणां वर्जयेद्दिशम् ॥ सांध्ये ग्रहणकाले च, स्वजनादेः शवस्थितौ ॥ ५३॥ कार्पण्यं कुरुते यो हि, जोजनादौ धने सति ॥ मन्ये मन्दमतिस्सोत्र, देवाय धनमर्जति ॥५४॥ अज्ञातजाजने नाद्याद्, जातिज्रष्टगृहेऽपि च ॥ अज्ञातानि निषिद्धानि, फलान्यन्नानि संत्यजेत् ॥५५॥ बालस्त्रीभ्रूणगोहत्याकृतामाचारलोपिनाम् ॥ स्वगोत्रजेदिनां पंक्तौ, जानन्नोपवि

कमावे बे? ॥५४॥ ॥ अजाणी थाली प्रमुख जाजनमां जमवुं नही, जे ज्ञाति थकी भ्रष्ट थयो होय तेने घेर जमवुं नही. अजाण्यां, जगवंतें निषेध्यां एवां फल तथा अन्न बांडे, त्याग करे ॥ ५५ ॥ ॥ जे पंडित होय ते, १ बाल, २ स्त्री, ३ गर्भ, ४ गो, एनी

हत्याना करनार, आचारना लोपनार, अथवा पोताना कुलनो त्याग करनार एटला
नी पंक्तिमां जाणतो थको जमवा बेसे नही ॥ ५६ ॥ ॥ मदिरा, मांस, माखण,
मधु, पांच जातिनां उंबरनां झाडनां फल, अनंतकाय, सर्व जातिनां अजाण्यां फल त
था रात्रे भोजन ए सर्वदा वर्ज्य छे ॥ ५७ ॥ ॥ काचो गोरस ते छास दहिं इत्यादि

शेत्सुधीः ॥ ५६ ॥ मद्यं मांसं नवनीतं, मधूदुंबरपञ्चकम् ॥ अज्ञातकायमज्ञा
तफलं रात्रौ च भोजनम् ॥५७॥ आमगोरससंयुक्तं, द्विदलं पुष्पितौदनम् ॥ द
ध्यहोद्वितयातीतं, कुथितान्नं च वर्जयेत् ॥५८॥ जन्तुमिश्रं फलं पुष्पं, पत्रं चा
न्यदपि त्यजेत् ॥ संधानमपि संसक्ति, जिनधर्मपरायणः ॥ ५९ ॥ ॥ ॥

तेणें करी सहित कठोल चीज, सडी गयेलुं अन्न, बे दिवस उपरांतनुं दहीं तथा को
हीगयेलुं कुत्सित अन्न ए सर्व वर्जन करे ॥ ५८ ॥ ॥ श्रीजिन धर्मने विषे रक्त थयेलो
श्रावक फल, फूल तथा पान अने बीजा पण जे पदार्थ जीवादिसहित होय ते सर्व

त्यागे, न खाय; तथा अथाणां प्रमुख बावीश अभक्ष्य छांडे ॥ ॥ ५ए ॥ ॥ भोज
न करतां तथा वडीनीत करतां घणो वखत लगाडे नही, तथा पाणी पीवुं, अने स्ना
न करवुं, ए बे वानां स्थिरतायें हलवे हलवे करीयें ॥ ६० ॥ ॥ भोजननी आदिमां
पाणी पीवुं ते विष सरखुं छे, तथा भोजननें अंतें पाणी पीवुं ते शिला सरखुं छे, अने

भोजनं विम्विमोक्षं च, कुर्यादतिचिरं नहि॥ वारिपानं तथा स्नानं, पुनः स्थिरतया
सृजेत् ॥६०॥ भोजनादौ विषसमं, भोजनान्ते शिलोपमम् ॥ मध्ये पीयूषसदृशं,
वारिपानं भवेत्त्रिधा ॥६१॥ अजीर्णे भोजनं जह्यात्, कालेऽश्नीयाच्च साम्यतः ॥
भुक्तोत्थितो वक्त्रशुद्धिं, पत्रपूगादिभिः सृजेत् ॥ ६२ ॥ विवेकवान्न ताम्बूलम

भोजननी वचमां पाणी पीवुं ते अमृत सरखुं छे. ए रीते पाणी पीवानुं फल जाणवुं
॥६१॥ ॥अजीर्ण होय तेवारें भोजन न करवुं, जेवुं रुचे तेवुं भोजन कालें करे. जमी
उठ्या पछी मुख धोइने पान सोपारीयें करी मुख शुद्ध करे ॥ ६२ ॥ ॥विवेकी पुरुष

मार्गे चालतो थको तंबोल न खाय, तथा पुण्यवंत होय ते आखी सोपारी वगेरेने दांतें
करी जांजे नही ॥६३॥ ॥ जम्या पछी उनालाविना निद्रा करे नही, केमके, दिवसें
सूवा थकी शरीरने विषे रोगोत्पत्ति थाय ॥ ६४ ॥ ॥ इति श्रीआचारोपदेशे द्वितीय

श्रीयाद्विचरन्पथि ॥ पूगाद्यमखंडितं दंतैर्दलयेन्न तु पुण्यवित् ॥ ६३ ॥ जोजनादनु
नो स्वप्याद्विना ग्रीष्मं विचारवान् ॥ दिवा स्वपयतो देहे, जायते व्याधिसंजवः
॥ ६४ ॥ इति श्रीआचारोपदेशे द्वितीयवर्गः समाप्तः ॥ २ ॥ अथ तृतीयव
र्गप्रारंजः ॥ ततो गेहे श्रियं पश्यन्, विद्वज्गोष्ठीपरायणः ॥ सुतादिज्यो ददच्छिक्षां,
सुखं तिष्ठेद्घटीद्वयम् ॥ १ ॥ आत्मायत्ते गुणग्रामे, दैवायत्ते धनादिके ॥ वि

वर्ग संपूर्ण॥२॥तेवार पछी घरनी शोजाप्रत्यें जोतो थको पंडितनी साथे वातचित कर
तो, पुत्रादिकने शीखामण देतो सुखें समाधें बे घडी पर्यंत घरने विषे रहे ॥ १ ॥
गुणनो समूह पोताने वश छे, अने धनादिक तो जाग्यने हाथें छे, एम समस्त

तत्त्व जाण्यां ठे जेणे एवा माणसने गुणनी हाणी न थाय ॥ २ ॥ ॥ कुलहीन मा
णस पण गुणें करी उत्तमता पामे, जेम कचराथी उत्पन्न थयेलुं कमल मस्तकें चडे
ठे, अने कचरो ठे ते पगें घसाय ठे ॥ ३ ॥ ॥ उत्तम माणसनी कोइ खाण नथी,
संसारमां उत्तम माणसनुं कोइ कुल नथी, मनुष्य मात्र पोताने स्वन्नावें गुणेकरीज
ज्ञाताखिलतत्त्वानां, नृणां न स्याद्गुणच्युतिः ॥२॥ गुणैरुत्तमतां याति, वंशही
नोऽपि मानवः ॥ पंकजं ध्रियते मूर्ध्नि, पङ्कः पादेन घृष्यते ॥ ३॥ न काचिदुत्तमा
नां स्यात्, कुलं वान्यगतिः क्वचित् ॥ प्रकृत्या मानवा एव, गुणैर्यांति जगन्नु
तिम् ॥४॥ सत्वादिगुणसंपन्नो, राज्यार्हः स्याद्यथा नरः ॥ एकविंशतिगुणः स्या
द्धर्मार्हो मानवस्तथा ॥ ५ ॥ अक्षुद्रहृदयः सौम्यो, रूपवान् जनवल्लभः ॥ अ
जगतमां स्तववा योग्य थाय ठे ॥ ४ ॥ ॥ सत्वादिक गुणें संपन्न पुरुष ते जेम रा
ज्ययोग्य होय, तेम श्रावकना एकवीश गुणें सहित माणस ते धर्मयोग्य होय
॥ ५ ॥ ॥ जेनुं क्षुद्र हृदय न होय ते अक्षुद्र नामा प्रथम गुण, २ सौम्य होय,

३ रूपवंत होय, ४ सर्वलोकने वाहालो होय, ५ क्रूर न होय, ६ संसारथी बीये, ७ मूर्ख न होय, ८ सदा दाक्षिण्यवंत होय ॥ ६ ॥ ॥ ९ लज्जावंत होय, १० दया सहित होय, ११ कोइ ऊपर राग द्वेष न करे, १२ सौम्य नजर होय, १३ गुणनो रागी होय, १४ भली धर्मकथा सहित होय, १५ भला परिवारवालो होय, १६ दीर्घदृष्टि

क्रूरो भवभीरुश्चाशठो दाक्षिण्यवान् सदा ॥६॥ अपत्रपी च सदयो, मध्यस्थः सौम्य एव च ॥ गुणरागी सत्कथश्च, सुपक्षो दीर्घदर्श्यपि ॥ ७ ॥ वृद्धानुगतो विनीतः, कृतज्ञः सुहितोऽपि च ॥ लब्धलक्षो धर्मरत्नयोग्य एभिर्गुणैर्भवेत् ॥ ८ ॥ प्रायेण राजदेशस्त्रीभक्तवार्तां त्यजेत्सुधीः ॥ ततो नार्थागमः कश्चित्,

ते ठंडो विचार करनार होय ॥ ७ ॥ ॥ १७ वृद्ध माणसने माननार होय, १८ विनयवंत होय, १९ करेला उपकारनो जाण होय, २० परम हितार्थ होय, २१ सर्व वातना भेदमां समजे, ए एकवीश गुणें करी सहित श्रावक धर्मरत्नने योग्य होय ॥८॥ जे पंडित ते प्रायें राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा अने भक्तकथानो त्याग करे, केमके,

तेथी अर्थप्राप्ति कंइ थती नथी, एटलुंज नही, परंतु सामो अनर्थ उपजे छे ॥९॥ ॥ रूडा मित्र साथें जाइ साथें मांहोमांहे धर्मवार्त्ता करे, जे धर्मनां शास्त्र जाणतो होय तेनी पासें बेसे, तत्त्वना जाव जाणे, विचारे ॥ १० ॥ ॥ जेथकी पापनी बुद्धि ऊपजे तेनी संगति न करे, कोइ क्रोधने वचनें कहे तोपण पोतें न्यायमार्ग न मूके ॥११॥

प्रत्युतानर्थसंजवः ॥९॥ सुमित्रैर्बन्धुजिः सार्द्धं, कुर्याद्धर्मकथामपि ॥ तद्विदा सह शास्त्रार्थरहस्यानि विचारयेत् ॥ १० ॥ पापबुद्धिर्जवेद्यस्माद्वर्जयेत्तस्य संगतिम् ॥ कोपेन वचनेनापि, न्यायं मुञ्चेन्न कर्हिचित् ॥ ११ ॥ अवर्णवादकस्यापि, न वदेडुत्तमाग्रणीः ॥ पित्रोर्गुरोः स्वामिनोऽपि, राजादिषु विशेषतः ॥ १२ ॥ मूर्खैर्डुष्टैरनाचारै,र्मलिनैर्धर्मनिन्दकैः ॥ डुःशीलैर्लोजिजिश्चौरैः, संगतिं वर्जयेद

जे उत्तम मनुष्य पंडित ते कोइनो अवगुण कहे नही; माता, पिता, गुरु, शेठ अने स्वामीना अवगुण बोले नही, वली विशेषें राजादिकनो अवगुण न बोले ॥ १२ ॥ मूर्खनी, डुष्टनी, अनाचारीनी, मलीननी, धर्मना निंदकनी, कुशीलवालानी, लोजी

नी, चोरनी एटलानी संगति वर्जन करे ॥ १३ ॥ ॥ अजाण्या माणसनी प्रशंसा करवी, अजाण्या माणसने पोताना घरमां रहेवा स्थानक आपवुं, अजाण्या कुलसाथें सगाइ करवी, अजाण्या माणसने चाकर राखवो, पोताथी मोहोटा माणस उपर कोप करवो, पोताथी मोटा वैरी साथे मत्सर राखवो, गुणवान् साथें विवाद करवो, पोताथी मोहोटो चाकर राखवो, माथें देवुं करीने धर्म करवो, व्याजें उठीनुं उधारुं धन आलम् ॥ १३ ॥ अज्ञातस्योत्कीर्तनं यत्, स्थानदानं तथाविधम् ॥ अज्ञातकुलसंबन्धोऽज्ञातभृत्यस्य रक्षणम् ॥ १४ ॥ महत्सु कोपकरणं, महता विग्रहस्तथा ॥ विवादो गुणिभिः सार्धं, स्वोच्चभृत्यस्य संग्रहः ॥ १५ ॥ ऋणं कृत्वा धर्मपी मागवुं नही, स्वजन साथें विरोध करवो, पारका माणस साथें स्नेह प्रीति राखवी, मोक्षने अर्थे उंचे चढवुं, चाकरने दंडीने धन भोगववुं, दारिद्र आवे थके भाइ बांधवनो आश्रय करवो, पोते पोताना गुणनां वखाण करवां, पोतें वात कही पोते ज हसवुं, जे ते वस्तु खावी, ए सर्व आलोकमां तथा परलोकमां विरुद्ध एवां मूर्खनां

लक्षणनो तदन त्याग करवो ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥
न्यायें धन उपार्जे, चर्यायें चालतो थको देश विरुद्ध अने कालविरुद्ध कार्यने छांडे,
त्यागे; राजाना वैरीनी संगत न करे, घणा माणस साथें विरोध न करे ॥१९॥ ॥ कुल

कृत्यं, कुसीदस्याप्ययाचनम् ॥ विरोधः स्वजनैः सार्धं, मैत्री चापि परैर्नरैः ॥
॥१६॥ ऊर्ध्वारोहणमोक्षार्थं, भुक्तिर्भृत्यस्य दंडनात् ॥ दौस्थ्ये बंधोराश्रयश्च,
स्वयं स्वगुणवर्णनम्॥ १७ ॥ उक्त्वा स्वयं च हसनं, यस्य कस्यापि भक्षणम्॥
एतानि च विरुद्धानि, मूर्खचिह्नानि संत्यजेत् ॥ १८ ॥ न्यायार्जितधनश्चर्या,
मदेशकालकौ त्यजेत् ॥ राजविद्वेषिभिः संगं, विरोधं च गणैः समम् ॥१९॥ अ
न्यगोत्रैर्विवाहं च, शीलाचारकुलैः समैः ॥ सुप्रातिवेश्मके स्थाने, कृतवेश्मान्वि

अने आचार जे शील ते जेनां पोता सरखां होय एवा अन्यगोत्र साथें विवाह करे,
वली भला पाडोशीने स्थानकें घर बनावीने बांधव सहित रहे॥ २० ॥ ॥ ॥ ॥

उपद्रवना स्थानकनो त्याग करे, तथा श्रावक योग्य खरच करे, द्रव्यने अनुसारें वस्त्रा
दिक पहेरवां, लोक निंदा करे ते काममां प्रवर्ते नही ॥ २१ ॥ ॥ देशने आचा
रें चालतो पोतानो धर्म न मूके, जे पोताने आशरे रह्यो होय तेनुं हित करे, पोतानुं
बल अने निर्बलपणुं जाणे, वली हित अने अहितनी वातने विशेषें जाणे ॥ २२ ॥
तः स्वकैः ॥ २० ॥ उपद्रुतस्य त्यजनं, यथायं च व्ययं चरेत् ॥ वेषं वित्तानुसारे
णाप्रवृत्तो जनगर्हिते ॥२१॥ देशाचारं चरन् धर्ममसुंचन्नाश्रिते हितः ॥ बला
बलं विजानन्, स्वं विशेषाच्च हिताहितम् ॥ २२ ॥ वशीकृतेन्द्रियो देवे, गुरौ
च गुरुभक्तिमान् ॥ यथावत्स्वजने दीनेऽतिथौ च प्रतिपत्तिकृत् ॥ २३ ॥ एवं
विचारचातुर्यं, रचयंश्चतुरैः समम् ॥ कियतीं क्रामयेद् वेलां, शृण्वन् शास्त्राणि
पांच इंद्रियनें वश करे, देव गुरुनें विषे घणी भक्ति राखे, यथायोग्यपणे स्वजननी,
दीननी अने अतिथीनी सेवा करे ॥२३॥ एवा कह्या जे विचार तेनी चतुराई प्रत्यें करे,
शास्त्रनें सांभलतो अथवा भणतो थको, चतुर माणसनी साथें केटलोएक वखत गमा

वे ॥ २४ ॥ ॥ वलतो द्रव्य कमाववानो उपाय करे, परंतु जे भाग्यमां हशे ते मलशे एम कहीनें बेसी न रहे, केमके, उद्यम कर्या विना भाग्यवंत पुरुषनुं भाग्य केवारें फले नही, माटे उद्यम करवो ॥ २५ ॥ ॥ शुद्ध चोखे व्यवहारें करी व्यापार करतो सदैव रहे; खोटां तोल, खोटां माप, खोटा लेख प्रत्यें वर्जे ॥ २६ ॥ ॥ १ लीहालानुं

वा भणन् ॥२४॥ कुर्वन्नर्थार्जनोपायं, न तिष्ठेद्दैवतत्परः ॥ उपक्रमं विना भाग्यं, पुंसां फलति न क्वचित् ॥२५॥ शुद्धेन व्यवहारेण, व्यवसायं सृजन् सदा॥कूट तोलं कूटमानं, कूटलेख्यं च वर्जयेत् ॥२६॥ अंगारवनशकटभाटकस्फोटजीविकाम् ॥ दंतलाक्षारसकेशविषवाणिज्यकानि च ॥ २७ ॥ यंत्रपीडां निर्लांछन

कर्म, २ वन कर्म, ३ गाडानुं कर्म ४ भाडानुं कर्म, ५ धरती फोरुवानुं कर्म, ६ दांत कुवाणिज्य, ७ लाख कुवाणिज्य, ८ घृत तेल मधादिकनुं कुवाणिज्य, ए केश कुवाणिज्य अने १० विष कुवाणिज्य एना व्यापारनो त्याग करे ॥२७॥ ॥११ घाणीयंत्रप्रमुख

१२ बलद समारवा, कर्ण कंबल छेदवा, १३ असती ते दुष्टदासी श्वान मार्जार प्रमुख पापीजीवोनुं पोषण करवुं, १४ दव लगाडवा, अने १५ सर, द्रह तथा तलावादिकना शोषण करवा ए पन्नरे कर्मादान पाप जाणीनें छांडवा ॥ २८ ॥ ॥ लोखंड, महुडा नां फूल, मदिरा, मधु प्रत्ये पण तेमज वली कंदमूल पान प्रमुख वस्तु व्यापार कर

न, मसतीपोषणं तथा ॥ दवदानं सरःशोष इति पंचदश त्यजेत् ॥ २८ ॥ ॥ लोहं मधुकपुष्पाणि, मदनं माक्षिकं तथा ॥ वाणिज्याय न गृह्णीयात्, कंदान् पत्राणि वा सुधीः ॥२९॥ न रक्षेत्फाल्गुनादूर्ध्वं, न तिलानतसीमपि ॥ गुडदुप्परकादीनि, जन्तुघ्नानि घनागमे ॥३०॥ शकटं वा बलीवर्दान्, नैव प्रावृषि वाहयेत् ॥

वाने अर्थे ग्रहण करे नही ॥ २९ ॥ ॥ जे डाह्यो श्रावक ते फागुण मास उपरांत तिल, अलशी, गोल, टोपरा प्रमुखने, घणा जीवोनो घात जाणीने चोमासे न राखे ॥ ३० ॥ गाडी अथवा पोठीया प्रमुख चोमासामां खेडावे नही, तथा जीवनी हिंसा

नुं प्रायें कारण एवुं खेत्रवाडीनुं कर्म न करे ॥ ३१ ॥ ॥ व्याजवी मूल आवते व स्तु वेचवी, अधिको अधिको लाभ वांछवो नहीं. केमके, घणुं मूल खावा जातां प्रायें मूलगा नाणानो पण नाश थाय ॥ ३२ ॥ ॥ कोईने उधारें आपीयें नही. घणो लाभ थाय तोपण घरेणा राख्या विना लोभेंकरी निश्चें थकी कोइने व्याजे नाणुं प्राणिहिंसाकरं प्रायः, कृषिकर्म न कारयेत् ॥ ३१ ॥ विक्रीणीयात्प्राप्तमूल्यं, वांछेन्नैवाधिकं ततः ॥ अतिमूल्यकृतां प्रायो, मूलनाशः प्रजायते ॥३२॥ उद्धारकं न प्रदद्यात्, सति लाभे महत्यपि ॥ ऋते ग्रहणकाल्लोभान्न प्रदद्याद्धनं खलु ॥३३॥ जानन्स्तेयाहृतं नैव, गृह्णीयाद्धर्ममर्मवित् ॥ वर्जयेत्तत्प्रतीरूपं, व्यवहारं विवेकवान् ॥ ३४ ॥ तस्करैरंत्यजैर्धूर्तै, र्मलिनैः पतितैः समम् ॥ इहामुत्र हितं वांछ आपियें नही ॥ ३३ ॥ ॥ चोरीनी वस्तु आवी जाणीने धर्मनो जाण पुरुष वर्जे, तथा सरस निरस वस्तु भेल सेल करवी ते तत्प्रतिरूप व्यापार कहीयें, ते व्यापार प्रत्यें विचारवान् पुरुष वर्जे ॥ ३४ ॥ ॥ चोरसाथें, चांडालसाथें, धूर्त्तसाथें मलिन

अंतःकरणवाला साथें, पापोयें करी पतित थयेला साथें, आलोक अने परलोकनेविषे हितनी इच्छा करनार प्राणीयें कोई पण प्रकारना व्यवहारनो त्याग करवो ॥ ३५ ॥ पोतानी वस्तु वेचतो थको असत्य न बोले, सत्य बोले, बीजानी वस्तु लेतो थको संचकार दीधो ते प्रत्यें लोपे नही ॥ ३६ ॥ ॥ जे डाह्यो होय ते अणदीठी वस्तुनो न्, व्यवहारं परित्यजेत् ॥३५॥ विचारवान् विक्रीणानो वदेत् कूटक्रयं नहि ॥ आददानोऽन्यसत्त्कानि, सत्यंकारं न लोपयेत् ॥ ३६ ॥ अदृष्टवस्तुनो नैव, साटकं दृढयेत्सुधीः ॥ स्वर्णरत्नादिकं प्रायो, नाददीतापरीक्षितम् ॥ ३७ ॥ राजतेजो विना न स्यादनर्थापन्निवारणम् ॥ नृपाननुसरेत्तस्मात्, पारवश्यमनाश्रयन् ॥३८ ॥ तपस्विनं कविं वैद्यं, मर्मज्ञं भोज्यकारकम् ॥ मंत्रकं निजपूज्यं च, साटो सहसा निश्चित नही करे. सोनुं, रुपुं अने रत्न ए प्रायें अणपरख्या लेवा नहि ॥ ३७ ॥ ॥ राजाना तेज विना अनर्थ अने आपदानो नाश न होय, माटे राजादिकनो आसरो लेवो, पण परवशपणुं छांडवुं, पोताने वश रहेवुं ॥ ३८ ॥ जे पंडित

होय तेणे १ तपस्वी, कवीश्वर, वैद्य, मर्मना जाण, रसोइ करनार, मंत्रवादी अने पोताना पूजनीक एटलाने कोपाववुं नही ॥ ३९ ॥ ॥ द्रव्यनो आर्थीद्रव्य पेदा करवामां तत्पर थको घणा क्लेश तथा धर्मनुं अतिक्रमण करे नही, नीचनी सेवा प्रत्यें आचरे नही, तथा विश्वासघात करवो ते प्रत्यें आचरे नही ॥ ॥ ४० ॥

कोपयेज्जातु नो बुधः ॥ ३९ ॥ अतिक्लेशं च धर्मातिक्रमणं नीचसेवनम् ॥ विश्वस्तघातकरणं, नाचरेदर्थतत्परः ॥ ४०॥ आदाने च प्रदाने च, न कुर्यादुक्त लोपनम् ॥ प्रतिष्ठां महतीं याति, नरः स्ववचने स्थिरः॥४१॥ धीरः स्ववस्तुनाशेऽपि, पालयेद्धि निजां गिरम् ॥ नाशयेत् स्वल्पलाभार्थे, वसुवत्स्यात्स दुःखि

लेवड देवड करतां थकां पोताना बोलनो लोप न करे, पण पोतानुं वचन पाले. केमके, जे माणस पोताना वचने स्थिर होय, ते माणस घणी प्रतिष्ठा प्रत्यें पामे ॥ ४१ ॥ ॥ पंडित होय ते सर्व वस्तुनो नाश थतां पण पोतानी वाचा

प्रत्यें पाले, थोडा लाजने अर्थें जे पोतानुं बोल्युं न पाले, ते वसुराजानी परें दुःख पामे ॥ ४२ ॥ ॥ एवा व्यवहारने विषे दिवसनो चोथो प्रहर गमावे, तेवार पछी सांजें वालु करवाने पोताना घर प्रत्यें जाय ॥ ४३ ॥ ॥ एकासणुं, आंबिल, उप वासनुं जेणें पच्चख्काण कीधुं होय ते पडिक्कमणुं करवाने संध्याकाले मुनि महाराजने

तः ॥ ४२ ॥ एवं व्यवहारपरो, यामं तुर्यं च यापयेत् ॥ वैकालिककृते गछेद्‌यो मंदिरमात्मनः ॥ ४३ ॥ एकाशनादिकं येन, प्रत्याख्यानं कृतं भवेत् ॥ आवश्य ककृते सायं, मुनिस्थानमसौ व्रजेत् ॥ ४४ ॥ दिवसस्याष्टमे भागे, कुर्याद्वैकालि कं सुधीः॥ प्रदोषसमये नैव, निश्चयधान्नैव कोविदः॥४५॥ चत्वारि खलु कर्माणि, संध्याकाले विवर्जयेत् ॥ आहारं मैथुनं निद्रां, स्वाध्यायं च विशेषतः ॥ ४६ ॥

स्थानकें जाय ॥ ४४ ॥ ॥ दिवसने आठमे भागे एटले चार घडी दिवस छते वालु करे, पण संध्या वेलाये वालु करे नही, वली डाह्यो माणस रात्रे सर्वथा जमे नही ॥ ४५ ॥ ॥ १ आहार, २ स्त्रीसेवा. ३ निद्रा अने ४ विशेषे करी स्वाध्याय ए चार

कर्म निश्चेंकरी संध्याकाले वर्जन करे ॥ ४६ ॥ ॥ जो संध्याकाले आहार करे तो व्याधि उपजे, मैथुन सेवा करे तो गर्भ दुष्ट थाय, निद्रा करे तो भूत प्रेत पिशाचनी पीडा थाय, अने जो सद्याय करे तो बुद्धिनी हीनता थाय ॥ ४७॥ ॥ दिवस चरिमनुं पच्चरकाण वालु कीधा पछी करे. दुविहार, तिविहार, चउविहार प्रत्यें वर्जो, पच्च

आहाराजायते व्याधिर्मैथुनाद्गर्भदुष्टता ॥ भूतपीडा निद्रया स्यात्, स्वाध्याया द्बुद्धिहीनता ॥ ४७ ॥ प्रत्याख्यानं द्बुश्चरिमं, कुर्याद्वैकालिकादनु ॥ द्विविधं त्रिविधं वापि, चाहारं वर्जयेत्समम् ॥ ४८ ॥ अह्नो मुखेऽवसाने च, यो द्वे द्वे घटिके त्यजेत् ॥ निशाभोजनदोषज्ञो, विज्ञेयः पुण्यभाजनम् ॥ ४९ ॥ करोति वि

स्काण करे ॥४८॥ ॥ रात्रि भोजन संबंधि दोषना जाण होय ते प्रभातवेलानी तथा सांऊ वेलानी बे बे घडी वर्जे. रात्रिभोजनना दोषनो जाण होय ते पवित्र पुण्यनुं ठाम जाणवो ॥ ४९ ॥ ॥ जे सदा सर्वदा रात्रिभोजनने विषे विरति एटले पच्चस्का

ण करे, ते पुरुषने धन्य छे, कारण के ते पुरुषनुं अर्धुं आयुष्य अवश्य उपवासमां जाय, अर्थात् ते पुरुषनुं एक वर्षमां अर्धुं वर्ष उपवासमां जाय ॥ ५० ॥ ॥ जे मनुष्य दिवसें तथा रात्रिने विषे खातो थको रहे, ते मनुष्य प्रगटपणे सींगडा पूछडा रहित एवा पशु एटले ढोरसमान जाणवो ॥ ५१ ॥ ॥ रात्रिभोजनना करवाथी तें मनु

रतिं धन्यो, यः सदा निशि भोजनात् ॥ सोऽर्द्ध पुरुषायुषस्य, स्यादवश्यमुपोषितः ॥ ५० ॥ वासरे च रजन्यां च, यः खादन्नवतिष्ठते ॥ शृंगपुछपरिभ्रष्टः, स स्पष्टं पशुरेव हि ॥ ५१ ॥ उलूककाकमार्जारगृध्रशंबरशूकराः ॥ अहिवृश्चिक गोधाश्च, जायंते रात्रिभोजनात् ॥५२॥ नैवाहुतिर्न च स्नानं, न श्राद्धं देवता

ष्य घूअड, काक, बिलाड मांजार, गृध, सांबर, सूअर, सर्प, विंछु अने गिरोलीना अवतार पामे ॥ ५२ ॥ ॥ रात्रें होम न करवो, स्नान न करवुं, श्राद्ध न करवुं, देवपूजा न करवी, दान पण रात्रें दीधुं निःफल थाय, माटे न करवुं, अने विशेषे भोजन तो

नज करवुं ॥५३॥ ॥ न्यायमार्गें शोभतो एवो पुरुष जो ए प्रकारें दिवसना चारे प्रहर पूरण करे, तो विनयें करीने डाह्यो ते पुरुष अक्षय मोक्षना सुखनो भजनार थाय ॥ ५४ ॥ इति आचारोपदेशे तृतीय वर्ग संपूर्ण ॥ ३ ॥ ॥ थोडे पाणीयें पग, हाथ

र्चनम् ॥ दानं वा विहितं रात्रौ, भोजनं तु विशेषतः ॥ ५३ ॥ एवं नयेद्यश्चतुरोऽपि यामान्, नयाभिरामः पुरुषो दिनस्य ॥ नयेन युक्तो विनयेन दक्षो, भवे दसावच्युतसौख्यभाग् वै ॥ ५४ ॥ इति आचारोपदेशे तृतीयवर्गः ॥ ३ ॥
॥ अथ चतुर्थवर्गप्रारंभः ॥ प्रक्षाल्य स्वल्पनीरेण, पादौ हस्तौ तथा मुखम् ॥ धन्यंमन्यः पुनः सायं, पूजयेच्छ्रीजिनं मुदा ॥ १ ॥ सक्रियासहितं ज्ञानं, जायते मोक्षसाधकम् ॥ जानन्निति पुनः सायं, कुर्यादावश्यकीं क्रियाम् ॥ २ ॥ ॥

तेमज मुखने पखालीने आत्माने धन्य मानतो वली श्रीजिनेश्वरनी हर्षेकरी पूजा करे ॥ १ ॥ ॥ भली क्रिया सहित जे ज्ञान ते मोक्षनुं साधन थाय, एवुं जाणतो थ

को सांजे पडिक्कमणानी क्रिया प्रत्यें करें ॥ २ ॥ ॥ जेम स्त्री अने जोजनना सुखनो जाण होय ते स्त्रीने जोगव्या विना अने जोजन खाधा विना मात्र जाणवाथीज सुखी न थाय, तेम क्रिया विना एकलुं ज्ञान फलदायक नथी. क्रिया लोकने विषे फलनी आपनारी ठे, माटे मात्र नाम जाण्याथीज सुखी न थाय जेवारें क्रिया करे तेवारें जोगवी क

क्रियैव फलदा लोके, न ज्ञानं फलदं मतम् ॥ यतः स्त्रीजक्ष्यजेदज्ञो, न ज्ञानात् सुखितो जवेत् ॥३॥ गुर्वजावे निजगृहे, कुर्वीतावश्यकं सुधीः॥ विन्यस्य स्थापनाचार्यं, नमस्कारावलीमथ ॥४॥ धर्मात्सिद्धि सर्वकार्याणि, सिध्यन्तीति विदन् हृदि॥

हेवाय, तेथी सुखी थाय ॥ ३ ॥ ॥ पंडित पुरुष जो गुरुनो योग न होय, तो पोताना घरने विषे स्थापनाचार्य मांमीने, थापना न होय तो नोकरवाली थापीने पडिक्कमणुं करे ॥ ४ ॥ ॥ धर्मथी सघला कार्यनी सिद्धि पामिये, एवुं हृदयने विषे जाणतो थको सदा सर्वदा धर्मने विषे चित्त ठे जेनुं एवो ते पुरुष धर्मनी वेलाने उल्लंघे नही

॥ ५ ॥ ॥ ते वेला वोल्या पछी अथवा ते वेला आव्यानी पहेलांज जे जपादिक धर्म कर्म करीयें, ते सर्व ऊखर खेत्रने विषे धान्य वाव्यानी परे निःफल थाय ॥ ६ ॥ ॥ पंकित छे ते सघली विधि प्रत्यें पूरण करीने धर्मनी क्रिया प्रत्यें करे; परंतु जे हीन ए टले उंछुं अथवा अधिकुं करे ते मंत्रनी विधिनी परे दुःखीयो थाय, तेमज क्रिया आघी

सर्वदा तद्गतस्वान्तो, धर्मवेलां न लंघयेत् ॥५॥ अतीतानागतं कर्म्म, क्रियते य ज्जपादिकम् ॥ वापिते चोषरे क्षेत्रे, धान्यवन्निष्फलं भवेत् ॥ ६॥ विधिं सम्यक् प्रयुञ्जित, कुर्वन्धर्मक्रियां सुधीः॥ हीनाधिकं सृजन्मंत्रं, विधिवद् दूषितो भवेत् ॥ ७ ॥ धर्मानुष्ठानवैतथ्ये, प्रत्युतानर्थसंभवः ॥ रौद्ररंध्रादिजनकाद्दुष्प्रयुक्ता

पाछी करतां पण दुःखी थाय ॥ ७ ॥ ॥ धर्म करतां आघी पाछी क्रिया करतां सामो अनर्थ ऊपजे, जेम माठी रीते कीधुं औषधादिक ते उलटुं आकरा चांदा प्रमुख रो गने पेदा करे, तेम धर्म करतां जो क्रिया आघी पाछी करे तो सामो अनर्थ ऊपजे

॥ ८ ॥ ॥ वैयावच्च कीधाथी अक्षय श्रेय मंगलिक थाय, बाहुबली बाहुनुं बल पाम्यो, चक्रवर्ती सरखाने हराव्या, ते वैयावच्चना प्रजावथीज थयुं, एम जाणीने पंडित श्रावक पडिक्कमणुं करीने पछी गुरुनी विसामणा ते वैयावृत्य प्रत्यें करे ॥ ए ॥ वस्त्रें करी मुखें मुखकोश बांधीने अणबोलतो, सर्व अंगना खेद प्रत्यें हरतो पोताना दिवौषधात् ॥८॥ वैयावृत्त्ये कृते श्रेयोऽक्षयं मत्वा विचक्षणः ॥ विहितावश्यकः श्राद्धः, कुर्याद्विश्रामणां गुरोः ॥ ए ॥ वस्त्रावृतमुखो मौनी, हरन् सर्वांगजं श्रमम् ॥ गुरुं संवाहयेद्यत्नात्, पादस्पर्शं त्यजन्निजम् ॥ १० ॥ ग्रामचैत्ये जिनं नत्वा, ततो गछेत्स्वमंदिरम् ॥ प्रक्षालितपदः पंचपरमेष्ठिस्तुतिं स्मरेत् ॥ ११ ॥ अर्हन्तः शरणं संतु, सिद्धाश्च शरणं मम ॥ शरणं जिनधर्मो मे, साधवः शर पगनो फरस त्यजतो एटले गुरुने पग अण लगाडतो यत्नथी गुरुनी चरणसेवा करे ॥ १० ॥ ॥ गाममां देरासरें जगवंतने नमीने वलतो पोताने घरे जाय, तिहां पग धोइने पंच परमेष्ठी नवकार प्रत्यें गणे ॥ ११ ॥ ॥ मुजने श्रीअरिहंत शरण हो

य, वळी मुजने श्रीसिद्ध शरण होय, मुजने श्रीकेवलिभाषित जिनधर्म शरण होय, वळी मुजने सदैव श्रीसाधु शरण होय ॥ १२ ॥ मंगलिकनो करनार, दुःखथी राखनार, जे शील रूप संनाहने पहेरीने कंदर्पने उतावळो वेगे करीने जीततो हवो, ते श्री थुलिभद्रने नमस्कार हो ॥ १३ ॥ ॥ गृहस्थ थकां पण जेने महोटी शीलनी लीला

णं सदा ॥ १२ ॥ नमः श्रीथूलिभद्राय, कृतभद्राय तायिने ॥ शीलसन्नाहमा बिभ्रद्, यो जिगाय स्मरं रयात् ॥ १३ ॥ गृहस्थस्यापि यस्यासन्, शीलली ला महत्तराः॥ नमः सुदर्शनायास्तु, दर्शनेन कृतश्रिये ॥ १४॥ धन्यास्ते कृतपु ण्यास्ते, मुनयो जितमन्मथाः ॥ आजन्मनिरतीचारं, ब्रह्मचर्यं चरंति ये ॥१५॥

थइ, भलुं समकित तेणे करी कीधी छे शोभा जेणे एवा श्रीसुदर्शन शेठने नमस्कार हो ॥ १४ ॥ ॥ जेमणे कंदर्प जीत्यो छे, वळी जन्मथी मांडी अतिचारना दोष रहित जे शील प्रत्यें पाले छे, ते धन्य पुण्यना करनार यति जाणवा ॥ १५ ॥ ॥ ॥ ॥

अशक्त अने घणां अनवद्यकर्म करनारो, सर्व प्रकारें नथी जीती इंद्रिय जेणे एवो पुरुष, एक दिवस पण उत्तम एवा शीलने धारण करवाने समर्थ थातो नथी ॥ १६ ॥ ॥ रे संसार समुद्र! मदयुक्त छे नेत्रो जेनां एवी स्त्रीयोरूप दुस्तर खराबा जो वच्चे न आवे,तो तारो पार पामवानो मार्ग बहु वेगलो नथी ॥१७॥ ॥ जूठुं बोलवुं, साहसपणुं, माया ते

निःसत्वो भूरिकर्मा हि, सर्वदाप्यजितेन्द्रियः॥ नैकाहमपि यः शक्तः, शीलमाधा तुमुत्तमम् ॥ १६ ॥ संसार तव निस्तारपदवी न दवीयसी ॥ अंतरा दुस्तरा न स्युर्यदि रे मदिरेक्षणाः ॥१७॥ अनृतं साहसं माया, मूर्खत्वमतिलोभिता ॥ अशौचं निर्दयत्वं च, स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः॥१८॥ या रागिणि विरागिणी,

कपट, मूर्खपणुं, घणो लोभ, अपवित्रपणुं, दया रहितपणुं ए दोष स्त्रीना स्वभा वेज होय छे ॥ १८ ॥ ॥ जे स्त्री रागी पुरुष उपर पण वैरागी थाय, ते स्त्रीने कोण भोगवे? जे पंडित होय ते मुक्ति रूपिणि स्त्रीनेज भोगवे; केमके, मुक्ति रूपिणी स्त्री जे

छे, ते वैरागी ऊपर रागिणी छे ॥ १ए ॥ ॥ एवुं स्त्रीनुं असारपणुं चिंतवतो थोडी वेला तो समाधिवंत थको निद्रा करे, पण बुद्धिवंत धर्मना पर्वने विषे मैथुन एटले स्त्रीनो जोग न करे ॥ २० ॥ ॥ वली बुद्धिवंत होय ते घणी वेला पर्यंत निद्रानुं से

स्त्रियस्ताः कामयेत कः ॥ सुधीस्तां कामयेन्मुक्तिं, या विरागिणि रागिणी ॥ ॥ १ए ॥ एवं ध्यायन् जजेन्निद्रां, स्वल्पं कालं समाधिमान् ॥ जजेन्न मैथुनं धीमान्, धर्मपर्वसु कर्हिचित् ॥ २० ॥ नातिकालं निषेवेत, प्रमीलां जातु चित्सुधीः ॥ अत्युद्रिक्ता जवेदेषा, धर्मार्थसुखनाशिनी ॥ २१ ॥ अत्याहारोऽल्पनिद्रश्च, अल्पारंजपरिग्रहः ॥ जवत्यल्पकषायी यो, ज्ञेयःसोऽल्पजवभ्रमः ॥२२॥

वन न करे, केमके, घणी उंघ करे तो धर्म, अर्थ अने सुख तेनो नाश करनारी थाय ॥ २१ ॥ ॥ जे स्वल्प आहार करे, स्वल्प निद्रा लीए, स्वल्प आरंज करे, जेने स्वल्प परिग्रह होय, अने जेने क्रोध थोडो होय, तेनुं संसारमां जमवुं पण स्वल्पज जाणवुं

॥ २२ ॥ निद्रा, आहार, भय, स्नेह, लज्जा, काम, विषय, कलह, क्रोध, ए जेटला वधारीयें, तेटला वधे छे, अने जेटला प्रमाणे घटाडीयें तेटला घटी पण जाय ॥ २३ ॥ ॥ विघ्नरूप वेल छेदवाने कुहाडा सरखा एवा श्रीनेमिनाथ भगवानने निद्राने वखते मनमां स्मरतां पुरुष माठे स्वप्नें पराभव पामे नही ॥ २४ ॥ ॥ अश्वसेन

निद्राहारभयस्नेहलज्जाकामकलिक्रुधः ॥ यावन्मात्रा विधीयन्ते, तावन्मात्रा भवन्त्यमी ॥ २३ ॥ विघ्नव्रातलतानेमिं, श्रीनेमिं मनसि स्मरन् ॥ स्वापकाले नरो नैव, दुःस्वप्नैः परिभूयते ॥ २४ ॥ अश्वसेनावनीपालवामादेवीतनूरुहम् ॥ श्रीपार्श्वं संस्मरन्नित्यं, दुःस्वप्नान्नैष पश्यति॥२५॥ श्रीलक्ष्मणांगसंभूतं, महसेन नृपांगजं ॥ चंद्रप्रभं स्मरंश्चित्ते, सुखं निद्रां लभेत वै ॥२६॥ सर्वविघ्नाहिगरुडं,

राजा अने वामा राणीनो पुत्र श्रीपार्श्वनाथ स्वामी तेने नित्य स्मरतो माठुं स्वप्न न देखे ॥२५॥ तेमज लक्ष्मणा राणीनो तथा महसेन राजानो पुत्र एवो श्रीचंद्रप्रभ स्वामी तेने चित्तमां स्मरतां सुखें निद्रा पामे ॥ २६ ॥ ॥ सर्व विघ्न रूप सर्पने हणवाने

गरुड समान, सर्व सिद्धिना आपनार एवा श्रीशांतिनाथ प्रत्यें मनमां ध्यातो थको
मनुष्य चोर प्रमुखथी जय न पामे ॥ २७ ॥ ॥ ए प्रकारें ए सर्व दिवस संबंधि करणी
जाणीने श्रावकवर्गने कीधो छे उत्तम संतोष जेणें एवी करणी जे आदरे, ते पुरुष

सर्वसिद्धिकरं परम् ॥ ध्यायन् शांतिजिनं नैति, चौरादिभ्यो जयं नरः ॥२७ ॥
इत्यवेत्य दिनकृत्यमशेषं, श्राद्धवर्गजनितोत्तमतोषम् ॥ संचरन्निह परत्र च लो
के, कीर्तिमेति पुरुषो धुतदोषः ॥२८॥ इति श्रीआचारोपदेशे चतुर्थवर्गः ॥४॥
॥ अथ पंचमवर्गप्रारंभः ॥ लब्ध्वा तन्मानुषं जन्म, सारं सर्वेषु जन्मसु ॥
सुकृतेन सदा कुर्यात्, सकलं सफलं सुधीः ॥१ ॥ निरन्तरकृताद्धर्मात्, सुखं नि

सर्व दोष टालीने इहलोक अने परलोकें जस पामे ॥२८॥ इति श्रीआचारोपदेशे चतु
र्थवर्गः समाप्तः ॥ ४ ॥ सघला जन्मनो सार एवो ए मनुष्यनो जन्म पामीने ते पुरुष
पुण्येंकरीने सदा सर्वदा सर्व कामनी सिद्धि करे ॥ १ ॥ ॥ निरंतर धर्म करवाथी

॥ ११० ॥

निश्चें सदाइ सुख होय, माटे दान, ध्यान, तप अने जणवुं तेणे करी दिवसने वांजीउ
न गमावे, एटले दिवसने वांजीउं न करे, परंतु दानादिक अवश्य प्रत्येक दिवसें करीने
सफल दिवस करे ॥ २॥ ॥ जीव पोताना आयुष्यना प्रायें त्रीजे जागें अथवा अंत
समयें शुज्ञ अने अशुज्ञ बेमांथी एक प्रकारनुं आगला जवनुं आयुष्य बांधे ॥ ३ ॥

त्यं जवेदिति ॥ अवन्ध्यं दिवसं कुर्यात्, दानध्यानतपःश्रुतैः ॥ २ ॥ आयुस्तृ
तीयज्ञागे च, जीवोंत्यसमयेऽथवा ॥ आयुः शुज्ञाशुज्ञं प्रायो, बध्नाति परजन्मसु
॥ ३ ॥ आयुस्तृतीयज्ञागस्थः, पर्वश्रेणीषु पंचसु ॥ श्रेयः समाचरन् जन्तुर्ब
ध्नात्यायुर्निजं ध्रुवम् ॥ ४ ॥ जन्तुराराधयेध्दर्मं, द्वितीयायां द्विधा स्थितम् ॥ सू

आउखाने त्रीजे जागे रह्यो थको प्राणी बीज, पांचम, आठम, अगीआरस अने चौ
दश ए पांच पर्वना दिवसें धर्म आचरतो थको पोतानुं निश्चें थकी आउखुं बांधे ॥ ४॥
बीज पाळ्याथी प्राणी यतिधर्म अने श्रावकधर्म ए बे प्रकारना धर्म प्रत्यें आराधे, ते

प्राणी घणा पुण्यनो समूह संपादन करतो राग अने द्वेष ए बेने बीज तिथीयें जीते ॥ ५ ॥ ॥ पांचम पाळ्याथी पांच ज्ञान प्रत्यें पामे, पांच चारित्र पामे, पांच महाव्रत पामे, ए पांचम प्रत्यें पालतो अहंकार, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा ए पांच प्रमादने जीते ॥ ६ ॥ ॥ आठम पाळ्याथी माठां आठ कर्म प्रत्यें नशाडे, तथा पांच

जन् सुकृतसंघातं, रागद्वेषद्वयं जयेत् ॥ ५ ॥ पंच ज्ञानानि लभते, चारित्राणि व्रतानि च ॥ पंचमीं पालयन् पंच, प्रमादाञ्जयति ध्रुवम् ॥६॥ दुष्टाष्टकर्मनाशाय अष्टमी भवति रक्षिता ॥ स्यात्प्रवचनमातॄणां, शुद्ध्येऽष्टमदान् जयेत् ॥७॥ एकादशांगानि सुधीराराधयति निश्चितम् ॥ एकादश्यां शुभस्तद्वच्छ्रावकप्रतिमा

समिति अने त्रण गुप्ति ए आठ प्रवचन माता तेने शुद्ध करे, तथा जातिमद, कुलमद, रूपमद, बलमद, ज्ञानमद, तपमद, लाभमद अने धनमदने जीते, एटले ए आठ मद तेना दूर जाय ॥ ७ ॥ ॥ एकादशियें धर्म प्रत्यें करतो पंडित पुरुष अगी-

अंग प्रत्यें तथा श्रावकनी ः पीआर प्रतिमा प्रत्यें आराध ॥७॥ . आ
राधतो ते दिवसें तप करतो ः गो प्राणी चौदराज लोकने उपरला ... दारूप स्था
नक छे, ते प्रत्यें तथा चौद पूर्व प्रत्यें पामे ॥ ए ॥ ॥ ए पांच पर्वना दिवस छे ते
निश्चें एकेक थकी चडता चडता फलनां देवावाला छे, ते माटे ए दिवसें धर्म करणी

स्तथा॥८॥चतुर्दशानामुपरिवासमासादयत्यहो॥चतुर्दश्यामाराधयेत्, पूर्वाणि च
चतुर्दश ॥ए॥ पंच पर्वाण्यमूनीह, फलदानि यथोत्तरम् ॥ तदत्र विहितं श्रेयो,ह्य
धिकं फलदं भवेत् ॥१०॥ धर्मक्रियाः प्रकुर्वंति, विशेषात् पर्ववासरे ॥ आराध
नुत्तरगुणान्, वर्जयेत्स्नानमैथुनम् ॥ ११ ॥ विदध्यात्पौषधं धीमान्, मुक्तिवश्यौ

करवाथी अधिकुं अधिकुं फल पामे ॥ १० ॥ ॥ माटे विशेषथी पर्वने दिवसें धर्मनी
क्रिया प्रत्यें करे, उत्तर गुण जे पोसह पडिक्कमणादिक ते प्रत्यें आराधतो स्नान तथा मै
थुन प्रत्यें वर्जे ॥ ११ ॥ ॥ बुद्धिवंत पर्वना दिवसें पोसह करे, ए मुक्तिने वश कर

वाने औषध छे, ते जो पोतानी शक्ति न होय, तो विशेषथी सामायिक व्रत आश्रय
करे ॥ १२ ॥ ॥ तेम १ च्यवन, २ जन्म, ३ दीक्षा, ४ केवल अने ५ मोक्ष ए पांच
श्रीअरिहंतना कल्याणिकना दिवस छे, ते प्रत्यें पंक्ति आराधे ॥ १३ ॥ ॥ एक
कल्याणक होय ते दिवसें एकासणुं करे, बे कल्याणक होय ते दिवसें नीवी करे, त्रण

षधं परम् ॥ तदशक्तौ विशेषेण, श्रयेत्सामायिकं व्रतम् ॥१२॥ च्यवनं जन
नं दीक्षा, ज्ञानं निर्वाणमप्यहो ॥ अर्हतां कल्याणकानि, सुधीराराधयेत्तथा
॥ १३ ॥ एकस्मिन्नेकाशनकं, द्वयोर्निर्विकृतं तपः ॥ त्रिष्वाचाम्लं सपूर्वार्द्धं, च
तुर्षूपोषितं सृजेत् ॥ १४ ॥ कुर्याद्र्धं चोपवासमतः पञ्चसु तेष्वपि ॥ पंचन्निर्व

कल्याणक होय ते दिवसें आयंबिल पूर्वार्द्ध ते एकासणुं करे, चार कल्याणक होय
ते दिवसें उपवास करे ॥ १४ ॥ ॥ वली पांच कल्याणक होय, ते दिवसें ए...
सहित उपवास करे. ... कल्याणक तप पांच ... करे ॥१५॥ ...

नमोअरिहंतादिक वीश पद ते वीश थानक तेने जे विधिं सहित एकासण प्रमुख तपें करीने
करे,ते पुरुष धन्य जाणवो ॥१६॥ ॥ते विधि अने ध्यानसहित जे ए वीशस्थानक आ
राधे, ते प्राणी दुःखनो हरनार एवुं महोटुं तीर्थंकर पदवीनुं नाम कर्म पामे ॥ १७ ॥

त्सरैः पूर्यात्, तेषु चोपोषिते सुधीः॥१५॥ अर्हदादिपदस्थानि, विंशतिः स्थान
कानि च ॥ प्रकुर्वीत विधिं धन्य, स्तपसैकाशनादिना ॥ १६ ॥ ततो विधिध्या
नपरो, योऽमून्याराधयत्यहो ॥ लभते तीर्थकृन्नामकर्माशर्महरं परम् ॥ १७ ॥
उपवासेन यः शुक्ला, माराधयति पञ्चमीम् ॥ सार्धानि पञ्च वर्षाणि, लभते
पंचमीं गतिम् ॥ १८ ॥ उद्यापनं व्रते पूर्णे, कुर्याद्वा द्विगुणं व्रतम् ॥ तपोदिन

साडा पांच वरस लगें उपवासें करीने जे उजवाली पांचम प्रत्यें आराधे ते पांचमी गति
मोक्ष प्रत्यें पामे ॥१८॥ ॥व्रत पूरण थया पछी उजमणुं करे, जो शक्ति न होय तो
बमणुं तप करे, तपना दिवस प्रमाणे माणसोने जमाडे ॥१९॥ ॥ ॥ ॥

पाटी,पोथी,कवली,ठवणी,नोकरवाली ए पांच ज्ञाननां उपकरण पांचमने उजमणें करे,तेम
वली देरासरनां उपकरण करे॥२०॥तेम पाखीनुं पडिक्कमणुं करतो अने चौदशनो उपवा
स करतो श्रावक पन्नरे दिननो पक्ष अने कुटुंबनो पक्ष ए बे पक्षनी शुद्धि करे॥२१॥आ

प्रमणानि, भोजयेन्मानुषाणि च ॥ १ए॥ कारयेत्पञ्च पंचोच्चे, ज्ञानोपकरणानि
च ॥ पञ्चम्युद्यापने तद्वच्चैत्योपकरणान्यपि ॥ २० ॥ पाक्षिकावश्यकं तत्त्वं, चतु
र्दश्यामुपोषितम् ॥ पक्षं विशुद्धं तनुते, द्विधापि श्रावको निजम् ॥ २१ ॥ त्रि
षु चातुर्मासिकेषु, कुर्यात्षष्ठं तपः सुधीः॥ अष्टपर्वण्यष्टमीं च, तदावश्यकयुक् सृ
जेत् ॥ २२ ॥ अष्टमिकासु सर्वासु, विशेषात् पर्ववासरे ॥ आरंभान् वर्जयेत्

षाढ चोमासो,कार्त्तिक चोमासो अने फागुण चोमासो ए त्रण चोमासानी छठ करे तथा
महोटुं पर्व पर्युषण आवे, तेवारें तेनी अठम करे, अने संवत्सरीनुं पडिक्कमणुं करे ॥ २२॥
सघला अठाइने विषे विशेष पर्वने दहाडे [illegible] विषे खांडवुं, [illegible] धोवुं तथा

... दावालांना दिवसें ...
ने जिनश... व आरंभ न करे ॥२३॥ ॥ महोत्... लोकें अने ... करी
ते श्रावक ...शासननी शोभामाटे उत्सव करतो नगरमां जीवदया पलावतो कल्पसूत्र सांभले॥२४
...भगवंत... भला धर्मनी करणी प्रत्यें करीनें पण संतोष पामी रहे नही. मनेंकरी तृप्ति अ

ह, खंडनापेषणादिकान् ॥ २३ ॥ पर्वणि शृणुयाज्ज्येष्ठे, श्रीकल्पं स्वच्छमानसः॥ शासनोत्सर्पणं कुर्वन्न मारीं कारयेत्पुरे ॥ २४ ॥ श्राद्धो विधाय स्वं धर्मं, नो तृप्तिं तावता व्रजेत् ॥ अतृप्तमानसः कुर्याद्धर्मकर्माणि नित्यशः ॥ २५ ॥ वृष पर्वणि श्रीकल्पं, सावधानः शृणोति यः ॥ अंतर्भवाष्टकं धन्यं, लभेतपरमं पदम् ॥ २६ ॥ सम्यक्त्वसेवनान्नित्यं, सब्रह्मव्रतपालनात् ॥ यत्पुण्यं जायते लो

ण पामतो धर्मनी करणी प्रत्यें सदा सर्वदा करे ॥ २५ ॥ ॥ पर्युषण पर्वनें विषे श्री कल्पसूत्र सावधान थइनें श्रावक सांभले, ते धन्य पुरुष आठभव मांहे मोक्ष पामे॥२६॥ नित्यें समकितनी सेवाथी तथा नित्यें रूडुं ब्रह्मचर्य व्रत पालवाथी लोकने विषे जे पुण्य

थाय, ऐ[illegible]एय कल्पसूत्र सांजलवाथी थाय ॥२७॥ दानें करी, विविध प्रकारना तपेकरी, रूमा तीर्थनी सेवायें करी जे प्राणीउनां पाप क्षय पामे, ते पाप कल्पसूत्र सांजलतां थकां जाय॥२८॥ मुक्ति उपरांत कोइ पद नथी,शत्रुंजय उपरांत कोइ तीर्थ नथी, रूडा समकित

के, श्रीकल्पश्रवणेन तत् ॥ २७ ॥ दानैस्तपोभिर्विविधैः, सत्तीर्थोपासनैरहो ॥ यत्पापं क्षीयते जन्तो, स्तत्पापं श्रवणेन वै ॥ २८ ॥ मुक्तेः परं पदं नास्ति, तीर्थं शत्रुंजयात्परम् ॥ संदर्शनात्परं तत्त्वं, शास्त्रं कल्पात्परं नहि ॥ २९ ॥ अमावस्याप्रतिपदो,र्दीपोत्सवदिनस्थयोः ॥ प्राप्तनिर्वाणसज्ज्ञानौ, स्मरेद्वीवीरगोतमौ ॥ ३० ॥ उपवासद्वयं कृत्वा, गौतमं दीपपर्वणि ॥ स्मरत्स लज्नते नून, मिहा

षाढ चोमासा महोटुं पर्व पर्युं सघला अठाइ

कोइ व्रत नथी,तेम कल्पसूत्र उपरांत बीजुं कोइ शास्त्र नथी ॥२९॥ ॥दीवालीना अमावास्यायें श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया छे,अने पडवाना दिवसें श्रीगोतम [illegible]वलज्ञान पाम्या छे, तेनुं स्मरण करीयें ॥३०॥ जे बे उपवास करीनें श्रीगोतम

स्ना॰ ... ें दीवालीना दिवसें स्मरण कर, ते ... ने विधिसहित लोकें अने परलोकें मोहोटो
ने जिनेश॥३१॥ ॥ पोताना घरने देरासरें अथवा गामने देरासरें विधियें करी जग
ते श्रावकने मंगलदीवा प्रत्यें करीने पोताना बंधव साथें जोजन प्रत्यें करे ॥ ३२ ॥
...तना कल्याणकना महोटा पांच दिवसने विषे पोतानी शक्ति माफक यथायो

मुत्र महोदयान् ॥ ३१ ॥ स्वगृहे ग्रामचैत्ये च, विधिनार्चां जिनेशितुः ॥ कृत्वा
मङ्गलदीपं चाश्नीयात्सार्द्धं स्वबंधुजिः ॥३२॥ कल्याणके जिनानां हि, परमे दिन
पंचके ॥ निजशक्त्या सदर्थिज्यो, दद्याद्दानं यथोचितम् ॥ ३३ ॥ इत्थं सुपर्ववि
हितोत्तमकृत्यचार्वाचारप्रचारपिहिताश्रववर्गमार्गः ॥ श्राद्धः समृद्धविधिवार्द्धि

ग्य सद्याचकने दान प्रत्यें आपे ॥ ३३ ॥ ॥ एम रूडा पर्वना समयें करवा योग्य कृत्य
रूप जला आचारने पालवे करी ढांक्यो छे आश्रवना वर्गनो मार्ग जेणें, समृद्ध जे विधि
तेणें करी ...द्धि पामी छे जली बुद्धि जेनी एवो श्रावक ते देवताना सुख प्रत्यें जोगवीने